सच, सिर्फ सच

वॉयस ऑफ लखनऊ

बुधवार, 13 मई, 2026 लखनऊ, महानगर, वर्ष 21, अंक 129, पेज 12, 3.50 रुपये

www.facebook.com/volepaper voiceoflucknow@gmail.com www.voiceoflucknow.com

सेंसेक्स में 1456 अंकों की गिरावट

स्थानीय शेयर बाजारों में गिरावट आई और बीएसई सेंसेक्स 1,456 अंक लुढ़क गया, जबकि एनएसई निफ्टी 23,500 अंक के नीचे आ गया। } 10

भारत-ओमान मुक्त समझौता एक जून से लागू होने की संभावना

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि भारत और ओमान के बीच मुक्त व्यापार समझौता एक जून से लागू होने की उम्मीद है। इस समझौते पर दिसंबर, 2025 में हस्ताक्षर किए गए थे। } 12

भारत के पास दो माह का ईंधन भंडार

पेट्रोलियम कंपनियों को एक लाख करोड़ का होगा नुकसान : पुरी

एजेंसी

नयी दिल्ली। पेट्रोलियम मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने मंगलवार को कहा कि वैश्विक ऊर्जा संकट के बावजूद दो महीने के ईंधन भंडार के साथ भारत को आपूर्ति को लेकर कोई चिंता नहीं है। हालांकि, उन्होंने चेतावनी दी कि यदि कच्चे तेल की कीमतें इसी तरह ऊंची बनी रहीं और खुदरा कीमतों में बदलाव नहीं किया गया, तो सरकारी पेट्रोलियम कंपनियों को एक ही तिमाही में एक लाख करोड़ रुपये तक का नुकसान हो सकता है। उन्होंने कहा कि एक स्तर पर इस बात का आकलन करना होगा कि पेट्रोलियम कंपनियां लागत से कम कीमत पर पेट्रोल, डीजल और रसोई गैस (एलपीजी) कब तक बेच सकती हैं। हालांकि, उन्होंने कीमतों में बढ़ोतरी की किसी भी संभावना पर टिप्पणी करने से इनकार कर दिया। भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) के वार्षिक व्यापार शिखर सम्मेलन में मंत्री ने कहा हमारे पास आपूर्ति से जुड़ी कोई समस्या नहीं है। उन्होंने बताया कि भारत ने संकट की शुरुआत पर्याप्त भंडार के साथ की थी और तब से घरेलू एलपीजी उत्पादन को 36,000 टन से बढ़ाकर 54,000 टन प्रतिदिन कर दिया गया है। साथ ही, मंत्री ने खुदरा कीमतों को स्थिर रखने से बढ़ रहे वित्तीय दबाव को स्वीकार किया। उन्होंने कहा, मेरी पेट्रोलियम कंपनियों रोजाना 1,000 करोड़ रुपये का नुकसान हो रहा है। उन्होंने बताया कि लागत और बिक्री मूल्य का कुल अंतर बढ़कर लगभग 1.98 लाख करोड़ रुपये हो गया है और एक तिमाही में एक लाख करोड़ रुपये का घाटा पूरे क्षेत्र के वार्षिक लाभ को खत्म कर सकता है। पिछले 10 सप्ताह से पश्चिम एशिया में जारी युद्ध के बावजूद, सरकारी पेट्रोलियम विपणन कंपनियों- इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन ...शेष पृष्ठ 10 पर

ईंधन की खपत कम करें, अनावश्यक न करें सोने की खरीदारी : योगी

मुख्यमंत्री, मंत्रियों आदि की फ्लीट में की जाये 50 प्रतिशत की कमी, पीएनजी, मेट्रो, पब्लिक ट्रांसपोर्ट आदि के उपयोग पर विशेष जोर

विशेष संवाददाता

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदेशवासियों से प्रधानमंत्री के आह्वान से जुड़ने की अपील की। मुख्यमंत्री ने प्रदेशवासियों से कहा कि ईंधन की खपत कम करें और अनावश्यक सोने की खरीद न करें। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान को प्रदेश में व्यावहारिक रूप से अपनाए जाने की अपील की। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मुख्य सचिव, डीजीपी, सभी विभागों के अपर मुख्य सचिव/प्रमुख सचिव की बैठक में निर्देश दिया कि मुख्यमंत्री व मंत्रियों आदि की फ्लीट में तत्काल 50 प्रतिशत की कमी की जाए। काफिले से अनावश्यक वाहनों को हटाया जाए। मुख्यमंत्री ने प्रदेश में वर्क फ्रॉम होम की संस्कृति को भी प्राथमिकता देने की अपील की। उन्होंने पीएनजी, मेट्रो, पब्लिक ट्रांसपोर्ट, उत्तर प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम की बसों आदि के उपयोग पर विशेष बल दिया। मुख्यमंत्री का सरकारी बैठकों, सेमिनारों, कॉन्फ्रेंस, वर्कशॉप आदि के वर्चुअली आयोजन पर जोर रहा।

मुख्यमंत्री ने वैश्विक हालात को देखते हुए प्रधानमंत्री के आह्वान से प्रदेशवासियों को जुड़ने की अपील की। उन्होंने कहा कि दुनिया में उथल-पुथल है, ऐसे में सभी को सावधानी बरतनी होगी। प्रधानमंत्री जी के आह्वान का पालन करने के लिए राज्यों को तैयार रहना होगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि मंत्री, सांसद, विधायक, जनप्रतिनिधि सप्ताह में एक दिन पब्लिक ट्रांसपोर्ट का उपयोग करें। सप्ताह में एक दिन नो व्हीकल डे आयोजित किया जाए। इस अभियान से सरकारी कर्मचारियों, स्कूलों-कॉलेजों के विद्यार्थियों समेत समाज के विभिन्न वर्गों को भी जोड़ें। औद्योगिक विकास विभाग व आईआईडीसी की ओर से औद्योगिक संस्थानों, बड़े स्टार्टअप्स आदि में वर्क फ्रॉम होम के लिए प्रेरित किया जाए। वहीं जहां बड़ी संख्या में कार्मिक कार्यरत हैं, उन्हें सप्ताह में दो दिन वर्क फ्रॉम होम की अनुशंसा के लिए राज्य स्तर पर एडवाइजरी जारी की जाए। शिक्षा विभाग के सेमिनारों, बैठकों, वर्कशॉप समेत सरकारी बैठकों आदि का आयोजन वर्चुअली माध्यम से किया जाए। राज्य सचिवालय/निदेशालय की 50 प्रतिशत आंतरिक बैठकें भी वर्चुअली की जाएं। स्कूल-कॉलेजों में स्कूली बस के प्रयोग को प्रोत्साहित करें। आवश्यकता पड़ने पर परिवहन निगम की बसों को भी स्कूलों से जोड़ा जाए। पीक ऑवर में ईंधन का उपयोग कम करने के लिए कार्यालय समय को अलग-अलग बैचों में बांटा जा सकता है। मुख्यमंत्री ने सार्वजनिक परिवहन, साइक्लिंग, कार पूलिंग, ईवी के प्रयोग पर जोर दिया। कहा कि जिन शहरों में मेट्रो का संचालन हो रहा है, वहां लोग इसका अधिकतम प्रयोग करें। अधिक मांग वाले मार्गों पर बस समेत पब्लिक ट्रांसपोर्ट सेवाओं को बढ़ाया जाए। मुख्यमंत्री ने प्रदेशवासियों से विद्युत ...शेष पृष्ठ 10 पर

संक्षेप

आरबीआई ने रद्द किया सर्वोदय बैंक का लाइसेंस

मुंबई। भारतीय रिजर्व बैंक ने मंगलवार को शहर स्थित सर्वोदय को-ऑपरेटिव बैंक का लाइसेंस पर्याप्त पूंजी और कमाई की संभावनाओं की कमी के कारण रद्द कर दिया। एक बयान में कहा गया है कि इसके परिणामस्वरूप, बैंक 12 मई, 2026 को कारोबार बंद होने के समय से बैंकिंग कारोबार करना बंद कर देगा। रिजर्व बैंक ने महाराष्ट्र के सहकारिता आयुक्त और सहकारी समितियों के पंजीयक से बैंक को बंद करने का आदेश जारी करने और एक परिसमापक नियुक्त करने के लिए कहा है। बैंक के बंद होने पर, प्रत्येक जमाकर्ता डिपॉजिट इंश्योरेंस एंड क्रेडिट गारंटी कॉरपोरेशन से अपनी जमा राशि पर पांच लाख रुपये तक का जमा बीमा दावा राशि प्राप्त करने का हकदार होगा। केंद्रीय बैंक ने कहा बैंक द्वारा जमा किए गए आंकड़ों के अनुसार, सभी समावेशी निर्देश लागू होने की तारीख तक, लगभग 98.36 प्रतिशत जमाकर्ता डीआईसीजीसी से अपनी जमा राशि की पूरी रकम प्राप्त करने के हकदार थे।

आगरा : यमुना में डूबने से चार लोगों की मौत

आगरा। जिले के कमला नगर थाना क्षेत्र में मंगलवार सुबह यमुना नदी में नहाते समय डूबने से दो लड़कियों समेत चार लोगों की मौत हो गई। अपर जिलाधिकारी शुभांगी शुक्ला ने बताया कि मृतकों की पहचान कान्हा (22), महक (19), रिया (17) और विक्की (11) के रूप में हुई है। सूचना मिलते ही पीएसी और स्थानीय गोताखोरों ने बचाव अभियान शुरू किया। अपर जिलाधिकारी ने कहा कि बचाव अभियान तहत पहले कान्हा, महक और रिया को बाहर निकालकर मेडिकल कॉलेज पहुंचाया गया, जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। शुक्ला ने कहा कि विक्की की तलाश में छह घंटे तक अभियान चलाया गया।

नीट यूजी परीक्षा रद्द, सीबीआई करेगी जांच

तीन मई को आयोजित मेडिकल प्रवेश परीक्षा नीट-यूजी-2026 का प्रश्नपत्र लीक

एजेंसी

नयी दिल्ली। राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) ने तीन मई को आयोजित मेडिकल प्रवेश परीक्षा नीट-यूजी-2026 को इसका प्रश्नपत्र लीक होने के आरोपों के मद्देनजर मंगलवार को रद्द करने की घोषणा की तथा सरकार ने सीबीआई को इन अनियमितताओं की विस्तृत जांच करने का आदेश दिया।

- नासिक पुलिस ने नीट प्रश्नपत्र लीक के सिलसिले में एक व्यक्ति को हिरासत में लिया

इस सम्बन्ध में सीबीआई ने तीन मई को आयोजित नीट (यूजी) 2026 परीक्षा से संबंधित प्रश्न पत्र कथित तौर पर लीक होने के सिलसिले में मंगलवार को प्राथमिकी दर्ज की। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) ने मेडिकल प्रवेश परीक्षा नीट-यूजी-2026 को इसका प्रश्नपत्र लीक होने के आरोपों के मद्देनजर मंगलवार को रद्द करने की घोषणा की तथा सरकार ने सीबीआई को इन अनियमितताओं की विस्तृत जांच करने का आदेश दिया। अधिकारियों ने बताया कि केंद्र से निर्देश मिलने के बाद सीबीआई ने तत्परता से कार्वाई करते हुए आपराधिक साजिश, धोखाधड़ी और अन्य अपराधों में मामला दर्ज किया। जांच एजेंसी जल्द ही राजस्थान में एक टीम भेजेगी, ताकि राज्य पुलिस के विशेष अभियान समूह (एसओजी) से सामग्री एकत्र की जा सके, जो इस मामले की जांच कर रहा था। वहीं दूसरी ओर नासिक पुलिस ने नीट परीक्षा के प्रश्नपत्र लीक होने मामले में मंगलवार को एक व्यक्ति को हिरासत में लिया। पुलिस उपायुक्त किरणकुमार चौहान ने कहा नीट परीक्षा के प्रश्नपत्र लीक मामले में एक व्यक्ति को हिरासत में लेने के लिए आज सुबह राजस्थान पुलिस से अनुरोध प्राप्त हुआ। उसी के अनुसार, नासिक पुलिस की अपराध शाखा की द्वितीय इकाई ने एक व्यक्ति को पकड़ा है। चिकित्सा महाविद्यालयों में स्नातक पाठ्यक्रमों में प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थियों ...शेष पृष्ठ 10 पर

सीबीआई ने प्रश्न पत्र लीक मामले में प्राथमिकी दर्ज की

नयी दिल्ली। केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने तीन मई को आयोजित नीट (यूजी) 2026 परीक्षा से संबंधित प्रश्न पत्र कथित तौर पर लीक होने के सिलसिले में मंगलवार को प्राथमिकी दर्ज की। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) ने मेडिकल प्रवेश परीक्षा नीट-यूजी-2026 को इसका प्रश्नपत्र लीक होने के आरोपों के मद्देनजर मंगलवार को रद्द करने की घोषणा की तथा सरकार ने सीबीआई को इन अनियमितताओं की विस्तृत जांच करने का आदेश ...शेष पृष्ठ 10 पर

चंद्रनाथ रथ हत्या मामले की जांच करेगी सीबीआई

नयी दिल्ली। केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी के सहयोगी चंद्रनाथ रथ की कथित हत्या मामले में प्राथमिकी दर्ज कर राज्य पुलिस से जांच अपने हाथ में ले ली है। अधिकारियों ने यह जानकारी दी।

अधिकारियों ने बताया कि राज्य सरकार के अनुरोध पर सीबीआई ने जांच का जिम्मा संभाला है। अधिकारियों ने बताया कि सीबीआई ने दिल्ली के विशेष अपराध विभाग के एक डीआईजी के नेतृत्व में सात सदस्यीय विशेष जांच दल का गठन किया है, जिसमें एजेंसी की विभिन्न इकाइयों के कुछ बेहतरीन जांचकर्ता शामिल हैं। यह दल कोलकाता के संयुक्त निदेशक को जानकारी देगा। उन्होंने बताया कि सीबीआई के कोलकाता जोन के अधिकारी भी जांच के लिए इस दल में शामिल होंगे। अधिकारियों के अनुसार, सीबीआई की टीम घटनास्थल पर पहुंच चुकी है और उसने जांच शुरू कर दी है। प्रक्रिया के अनुसार सीबीआई राज्य पुलिस की प्राथमिकी को अपने मामले के रूप में पुनः दर्ज करती ...शेष पृष्ठ 10 पर

नवनिर्वाचित असम सरकार के शपथ ग्रहण में पहुंचे सीएम योगी

मुख्यमंत्री हिमंता व मंत्रिमंडल के नवनियुक्त सदस्यों को दी बधाई

विशेष संवाददाता

गुवाहाटी। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ मंगलवार को असम पहुंचे। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की उपस्थिति में नवनिर्वाचित राजग सरकार के शपथ ग्रहण में शिरकत की। हिमंता बिस्वा सरमा ने मुख्यमंत्री पद की शपथ ली।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने नवनिर्वाचित मुख्यमंत्री व मंत्रिमंडल के नवनियुक्त सदस्यों को उज्ज्वल कार्यकाल की शुभकामनाएं दीं। इससे पहले एयरपोर्ट पहुंचने पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का स्थानीय कलाकारों ने वाद्ययंत्रों व नृत्य के साथ परंपरागत ढंग से स्वागत किया, जबकि पारंपरिक परिधान में उपस्थित महिलाओं ने उनका अभिवादन किया।

एयरपोर्ट पर मौजूद जन समुदाय ने सीएम योगी का जयकारों संग स्वागत किया तो सीएम योगी ने भी हाथ जोड़कर सभी के प्रति आभार जताया।

राजनाथ सिंह व सीएम योगी ने किये मां कामाख्या के किये दर्शन

एजेंसी

गुवाहाटी। मुख्यमंत्री योगी असम में हिमंता बिस्वा सरमा के शपथ ग्रहण समारोह में शामिल हुए। इसके बाद योगी और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह मां कामाख्या मंदिर पहुंचे। पूजा-अर्चना की। इससे पहले, मंगलवार सुबह गुवाहाटी हवाई अड्डे पर जय श्रीराम के नारों के साथ योगी का स्वागत किया गया। सीएम ने हाथ जोड़कर समर्थकों का अभिवादन स्वीकार किया। दोनों डिप्टी सीएम केशव मौर्य और ब्रजेश पाठक भी शपथ ग्रहण समारोह में शामिल हुए। मंच पर दोनों योगी के पीछे वाली लाइन बैठे ...शेष पृष्ठ 10 पर

एचएएल के सेवानिवृत्त कर्मचारियों को उच्च पेंशन देने का रास्ता साफ

विधि संवाददाता

लखनऊ। इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ खंडपीठ ने कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) को बड़ा झटका देते हुए हिन्दुस्तान एयरोनाटिक लिमिटेड (एचएएल) के सेवानिवृत्त कर्मचारियों को उच्च पेंशन देने का रास्ता साफ कर दिया है।

- इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ खंडपीठ ने सुनाया फैसला

कोर्ट ने ईपीएफओ द्वारा संयुक्त विकल्प (ज्वाइंट ऑप्शन) फॉर्म खारिज करने के आदेशों को रद्द करते हुए कहा कि ट्रस्ट नियमों में तय वेतन सीमा कर्मचारियों के वैधानिक अधिकारों पर हावी नहीं हो सकती। यह फैसला न्यायमूर्ति श्री प्रकाश सिंह की एकल पीठ ने सुनिल कुमार मेहरोत्रा समेत कई याचिकाओं को एक साथ निस्तारित करते हुए पारित किया है। कोर्ट ने मामले में सुनवायी पूरी करके गत 10 फरवरी 2026 को अपना फैसला सुरक्षित कर लिया था जिसे गत 8 मई 2026 को सुनाया। कोर्ट ने अपने आदेश में कहा है कि यदि कर्मचारी और नियोक्ता दोनों ने वास्तविक वेतन पर अंशदान जमा किया है, तो कर्मचारियों को उसी आधार पर उच्च पेंशन का लाभ मिलेगा। कोर्ट ने कहा कि ईपीएफओ केवल ट्रस्ट नियमों में तय 6500 रुपये की सीमा का हवाला देकर उच्च पेंशन से इनकार नहीं कर सकता। कोर्ट ने सभी याचिकाएं मंजूर करते हुए ईपीएफओ के आदेश निरस्त... शेष पृष्ठ 10 पर

विशेष खबर ज्येष्ठ माह के द्वितीय बड़े मंगल पर हजरतगंज स्थित दक्षिणमुखी हनुमान मन्दिर पर किया गया विशाल भण्डारे का आयोजन, श्रद्धालुओं को बांटा प्रसाद

विराज सागर दास ने सनातन परम्परा को अक्षुण्ण रखने का लिया संकल्प

अनिल कुमार सिंह

लखनऊ। ज्येष्ठ माह के दूसरे बड़े मंगलवार के पावन अवसर पर हजरतगंज चौराहे पर स्थित दक्षिणमुखी हनुमान मंदिर पर डॉ. अखिलेश दास गुप्ता फाउंडेशन द्वारा

- आमजन की सेवा ही सच्चा धर्म : विराज सागर दास

विशाल भण्डारे का आयोजन किया गया जिसमें बीबीडी ग्रुप एवं डॉ. अखिलेश दास गुप्ता फाउंडेशन के प्रेसिडेंट, बैडमिंटन एसोसिएशन ऑफ इंडिया के वाइस प्रेसिडेंट, चेयरमैन उप्र बैडमिंटन एसोसिएशन व यूपी ओलम्पिक संघ ...शेष पृष्ठ 10 पर

फोटो : अमित वर्मा

अखिलेश दास गुप्ता स्कूल के बच्चों ने स्प्लैश पूल पार्टी में की खूब मस्ती

विशेष संवाददाता (vol)

लखनऊ। अखिलेश दास गुप्ता स्कूल के प्री-प्राइमरी वर्ग के बच्चों के लिए विद्यालय परिसर में स्प्लैश पूल पार्टी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों को गर्मी के मौसम में आनंददायक, सुरक्षित एवं उत्साहपूर्ण अनुभव प्रदान करना था, जिससे बच्चे खेल-खेल में सामाजिक एवं शारीरिक गतिविधियों का आनंद ले सकें।

विद्यालय के गतिविधि क्षेत्र को रंग-बिरंगी गेंदों, फ्लोटिंग खिलौनों तथा आकर्षक सजावट से सुंदर रूप दिया गया। सभी नन्हे बच्चे अपने रंगीन स्विमसूट पहनकर अत्यंत उत्साह एवं खुशी के साथ विद्यालय पहुंचे। बच्चों ने पानी में खेलते हुए फ्लोटिंग टॉयज, बॉल्स एवं वाटर ट्यूब्स के साथ खूब मस्ती की तथा एक-दूसरे पर पानी उछालकर आनंद लिया। कार्यक्रम के दौरान बच्चों के लिए मनोरंजक गीत, नृत्य एवं विभिन्न मजेदार गतिविधियों का आयोजन किया गया। शिक्षिकाओं द्वारा बनाए गए आकर्षक सेल्फी बूथ पर बच्चों ने हर्षोल्लास के साथ फोटोग्राफ भी खिंचवाए। विद्यालय की प्रधानाचार्या अंजना स्वामी भी कार्यक्रम में उपस्थित रहीं। उन्होंने बच्चों के साथ समय बिताया, उनके साथ आनंद लिया तथा बच्चों का उत्साहवर्धन किया। उनकी उपस्थिति से बच्चों का उत्साह और अधिक बढ़ गया।

इस अवसर पर बच्चों को सुरक्षित एवं अनुशासित वातावरण में समूह गतिविधियों के माध्यम से आपसी सहयोग, मित्रता एवं आत्मविश्वास विकसित करने का अवसर प्राप्त हुआ। कार्यक्रम के समापन पर बच्चों को विशेष टेक-अवे उपहार भी प्रदान किए गए, जिससे उनकी खुशी और बढ़ गई।

यह स्प्लैश पूल पार्टी बच्चों के लिए अत्यंत यादगार एवं आनंदमय अनुभव रही। कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ और सभी बच्चों ने पूरे उत्साह के साथ इसमें भाग लिया।

हर घर जल योजना को मिला सौर ऊर्जा का सहारा

प्रदेश में अब तक 900 मेगावाट बिजली की हुई बचत

विशेष संवाददाता (vol)

लखनऊ। प्रदेश में जल जीवन मिशन के तहत 'हर घर जल' के संकल्प को पूरा करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में जलापूर्ति के लिए सौर ऊर्जा से जुड़े मॉडल पर काम किया जा रहा है। इससे बिजली की बचत होने के साथ ही पर्यावरण संरक्षण भी हो रहा है। राज्य जल जीवन मिशन (जेजेएम) के तहत 67 हजार से अधिक गावों में 33 हजार से अधिक सौर ऊर्जा संचालित परियोजनाएं चल रही हैं। सौर ऊर्जा आधारित ग्रामीण जलापूर्ति परियोजनाओं के शुरू होने से 2 करोड़ से अधिक परिवारों को फायदा मिल रहा है।

उत्तर प्रदेश जल निगम (ग्रामीण) के प्रबंध निदेशक राजशेखर ने बताया कि प्रदेश सरकार भी सौर ऊर्जा आधारित प्रोजेक्ट को प्रोत्साहित कर रही है। इसी क्रम में विभाग ने परियोजनाओं को सौर ऊर्जा से जोड़ने का काम किया। पहले ज्यादातर योजनाएं बिजली सप्लाई बाधित होने या बिजली बिल भुगतान न हो पाने की वजह से ठप हो जाती थीं, लेकिन अब यह समस्या नहीं रही। उन्होंने बताया कि इन सौर ऊर्जा संचालित परियोजनाओं को 30 साल के लिए डिजाइन किया गया है। सामान्य बिजली स्रोतों के मुकाबले इनसे 30 वर्ष में एक अनुमान के मुताबिक करीब 37 हजार करोड़ रुपये की बचत होगी। वहीं सौर ऊर्जा से संचालित पंपिग सिस्टम स्थापित करने से अब तक 900 मेगावाट बिजली की बचत हुई है। उन्होंने बताया कि जल जीवन मिशन के तहत इन परियोजनाओं को सौर ऊर्जा से जोड़ने पर पर्यावरण को भी काफी फायदा पहुंचेगा। इन 33 हजार से अधिक परियोजनाओं में ग्रिड से आने वाली बिजली का इस्तेमाल न होने पर हर साल करीब 13 लाख मीट्रिक टन कार्बन उत्सर्जन कम होने का अनुमान है। इससे वर्ष 2070 तक भारत के नेट जीरो यानी कार्बन उत्सर्जन में कमी लाने के लक्ष्य को हासिल करने में बड़ा योगदान होगा। उत्तर प्रदेश में जल जीवन मिशन को सौर ऊर्जा के साथ जोड़ने का प्रयोग सफल रहा, जिसे केंद्र सरकार ने भी सराहा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पिछले वर्ष नमामि गंगे एवं ग्रामीण जलापूर्ति विभाग के अपर मुख्य सचिव अनुराग श्रीवास्तव को इसके लिए सम्मानित भी किया था।

देशभर की विधानसभाओं में समान नियम लागू करने की जरूरत : महाना

विशेष संवाददाता (vol)

लखनऊ/बेंगलुरु। उत्तर प्रदेश विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना ने कहा कि देश की सभी विधानसभाओं की कार्यप्रणाली एवं नियमावली में एकरूपता लाने की आवश्यकता है, ताकि संसदीय कार्य अधिक प्रभावी, पारदर्शी और जनोन्मुखी बन सके। उन्होंने कहा कि लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला की पहल पर गठित उच्च स्तरीय समिति इसी उद्देश्य को लेकर कार्य कर रही है। प्रधानमंत्री के वन नेशन, वन लेजिस्लेटिव प्लेटफॉर्म के विजन के अनुरूप सभी विधानसभाओं को एक साझा मंच पर लाने की दिशा में यह महत्वपूर्ण पहल की जा रही है।

श्री महाना ने कहा कि विधानसभाओं के समक्ष आने वाली चुनौतियों के समाधान के लिए साझा मॉडल तैयार किया जाना समय की आवश्यकता है। किसी भी विधानसभा की नियमावली में अनावश्यक असमानता नहीं होनी चाहिए तथा सभी विधानमंडलों के लिए एक समान प्रक्रिया एवं नियम विकसित किए जाने चाहिए। उन्होंने कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के संभावित दुरुपयोग पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि तकनीक का उपयोग लोकतांत्रिक संस्थाओं को मजबूत करने के लिए होना चाहिए। उन्होंने इस बात पर भी बल दिया कि विधानसभाओं को जनता से अधिक जुड़ाव स्थापित करना होगा, ताकि आम नागरिकों को यह जानकारी मिल सके कि विधानसभाएं किस प्रकार कार्य करती हैं और लोकतंत्र में उनकी क्या भूमिका है। इसके लिए जनजागरूकता अभियान चलाए जाने की आवश्यकता है।

श्री महाना ने मीडिया से सकारात्मक और रचनात्मक भूमिका निभाने का आह्वान करते हुए कहा कि लोकतांत्रिक संस्थाओं के प्रति जनता में सकारात्मक संदेश पहुंचाने में मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने सुझाव दिया कि सभी विधानसभाएं अपने-अपने सुझावों के आधार पर एक प्रारूप (ड्राफ्ट) तैयार करें, जिसे अगली बैठक में अंतिम रूप दिया जा सके।

उल्लेखनीय है कि लोकतांत्रिक परंपराओं एवं विधानमंडलों की कार्यप्रणाली को अधिक प्रभावी, आधुनिक और एकरूप बनाने के उद्देश्य से कर्नाटक के मैसूर में 12 से 14 मई, 2026 तक पीठासीन अधिकारियों की उच्च स्तरीय समिति की बैठक आयोजित की जा रही है, जिसका आज उद्घाटन हुआ। लोकसभा अध्यक्ष की ओर से गठित इस प्रतिष्ठित समिति में देश के छह राज्यों के विधानसभा अध्यक्ष शामिल हैं।

रालोद ने परीक्षा रद्द प्रकरण मामले में सीबीआई जांच का किया स्वागत

लखनऊ। रालोद के प्रदेश मीडिया प्रभारी एवं शिक्षाविद् मयंक त्रिवेदी ने नीट 2026 परीक्षा को रद्द कर पूरे प्रकरण की जांच सीबीआई को सौंपे जाने के निर्णय का स्वागत करते हुए प्रधानमंत्री, केंद्रीय शिक्षा मंत्री तथा राष्ट्रीय लोकदल के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केंद्रीय मंत्री का हार्दिक आभार व्यक्त किया है।

मयंक त्रिवेदी ने कहा कि नीट जैसी राष्ट्रीय स्तर की परीक्षा केवल एक एग्जाम नहीं, बल्कि लाखों विद्यार्थियों के सपनों, वर्षों की मेहनत और उनके परिवारों की उम्मीदों से जुड़ी होती है। ऐसे में पेपर लीक जैसी घटनाएं पूरे शिक्षा तंत्र की विश्वसनीयता पर प्रश्नचिह्न खड़ा करती हैं। उन्होंने कहा कि परीक्षा रद्द कर निष्पक्ष जांच का निर्णय छात्रों के हित में लिया गया एक आवश्यक कदम है, जिससे देश के करोड़ों युवाओं का विश्वास लोकतांत्रिक व्यवस्था एवं न्याय प्रणाली में और अधिक मजबूत होगा।

उन्होंने कहा कि देशभर के लाखों विद्यार्थियों ने दिन-रात मेहनत कर इस परीक्षा की तैयारी की थी लेकिन पेपर लीक की खबरों ने ईमानदारी से मेहनत करने वाले छात्रों को मानसिक रूप से आहत किया है। ऐसे समय में सरकार द्वारा मामले को गंभीरता से लेते हुए सीबीआई जांच का आदेश देना सराहनीय है। उन्होंने मांग की कि इस पूरे षड्यंत्र में शामिल सभी दोषियों, दलालों एवं संगठित गिरोहों की पहचान कर उनके विरुद्ध कठोरतम कानूनी कार्रवाई की जाए, ताकि भविष्य में कोई भी व्यक्ति छात्रों के भविष्य के साथ खिलवाड़ करने का साहस न कर सके।

मयंक त्रिवेदी ने कहा कि को भविष्य में परीक्षा प्रणाली को और अधिक पारदर्शी, सुरक्षित एवं तकनीकी रूप से मजबूत बनाना चाहिए। परीक्षा केंद्रों की निगरानी, प्रश्नपत्रों की सुरक्षा तथा डिजिटल मॉनिटरिंग व्यवस्था को सख्ती से लागू किया जाना आवश्यक है, जिससे भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो।

उन्होंने सभी विद्यार्थियों एवं अभिभावकों से अपील करते हुए कहा कि वे निराश न हों और अपना मनोबल बनाए रखें। मेहनत कभी व्यर्थ नहीं जाती तथा ईमानदारी से तैयारी करने वाले छात्रों को निश्चित रूप से सफलता प्राप्त होती है। यह समय धैर्य और आत्मविश्वास बनाए रखने का है। उन्होंने छात्रों से कहा कि वे अभी से दोबारा पूरी लगन एवं सकारात्मक सोच के साथ अपनी तैयारी में जुट जाएं क्योंकि संघर्ष और परिश्रम ही सफलता का सबसे बड़ा आधार है।

क्या गारंटी दोबारा परीक्षा करवाने पर नहीं लीक होगी परीक्षा : अखिलेश

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने मंगलवार को नीट परीक्ष पेपर लीक मामले को आड़े हाथ लेते हुए कहा कि ये क्या गारंटी कि दोबारा करवाने पर परीक्षा फिर लीक नहीं होगी। इस समाचार से लाखों बच्चों और उनके करोड़ों परिजनों के बीच भाजपा की भ्रष्टाचारी व्यवस्था के विरूद्ध बेहद आक्रोश और हताश है। उन्होंने कहा कि जब तक भ्रष्ट भाजपा सरकार रहेगी, 'लीक' की लीक पर ही परीक्षा प्रणाली चलती रहेगी। जब तक भाजपा सरकार रहेगी परीक्षा होती रहेगी लीक, भाजपा के जाने के बाद ही परीक्षा प्रणाली होगी ठीक।

जो सरकार परीक्षा नहीं करा सकती, वह देश कैसे चलाएगी : कांग्रेस

2026 परीक्षा में पेपर लीक के आरोपों के बाद परीक्षा रद्द किये जाने को लेकर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रवक्ता सुरेंद्र राजपूत ने भाजपा सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि जो सरकार परीक्षा नहीं करा सकती, वह देश कैसे चलाएगी। राजपूत ने आरोप लगाया कि अब तक सिर्फ जांच की बात हो रही है, लेकिन दोषियों पर क्या कार्रवाई हुई और कौन पकड़ा गया, इसकी जानकारी सार्वजनिक नहीं की गई। उन्होंने कहा कि परीक्षा व्यवस्था पर छात्रों और अभिभावकों का भरोसा कमजोर हुआ है।

मोदी पर टिप्पणी के खिलाफ भाजपा का प्रदर्शन आज

लखनऊ। भाजपा, सपा सांसद द्वारा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रति की गई अमर्यादित एवं अशोभनीय टिप्पणी के विरोध में प्रदेश के सभी जिला मुख्यालयों पर व्यापक विरोध प्रदर्शन करेगी। भाजपा के प्रदेश महामंत्री संजय राय ने बताया कि बुधवार 13 मई को जिला स्तर पर कलेक्ट्रेट परिसर में आयोजित विरोध प्रदर्शनों में पार्टी के महिला पदाधिकारी, जनप्रतिनिधि एवं कार्यकर्ता बड़ी संख्या में मातृशक्ति के साथ सहभाग करेंगे। उन्होंने कहा कि राजनीतिक विरोध की आड़ में सपा द्वारा व्यक्तिगत स्तर पर प्रयोग की जा रही अभद्र भाषा भारतीय राजनीति की स्वस्थ परंपरा के विरुद्ध है। इसे भाजपा बर्दाश्त नहीं करेगी और सपा का विरोध करेगी।

हर छात्र के लिए अनिवार्य होंगे इंडस्ट्रियल अुनभव

- तकनीकी शिक्षा को उद्योगों से जोड़ आत्मनिर्भर बनेंगे युवा

लखनऊ। प्रदेश को वन ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था बनाने के लक्ष्य के साथ योगी सरकार तकनीकी शिक्षा को रोजगार और उद्योगों से जोड़ने की दिशा में तेजी से कार्य कर रही है। सरकार की मंशा है कि तकनीकी संस्थानों से निकलने वाले छात्र केवल डिग्रीधारी न बनें, बल्कि व्यावहारिक ज्ञान, आधुनिक तकनीक और इंडस्ट्री अनुभव के साथ आत्मनिर्भर बनकर सीधे रोजगार एवं उद्यम से जुड़ सकें। इसी क्रम में मंगलवार को तकनीकी शिक्षा विभाग की विभिन्न योजनाओं एवं नवाचारों की समीक्षा की गई।

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों के विस्तार, एक्सप्रेसवे, डिफेंस कॉरिडोर, डेटा सेंटर और ईवी सेक्टर जैसे तेजी से बढ़ते औद्योगिक क्षेत्रों को ध्यान में रखते हुए प्रदेश सरकार तकनीकी संस्थानों को उद्योगों की आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार करने पर जोर दे रही है। समीक्षा बैठक के दौरान प्राविधिक शिक्षा मंत्री आशीष पटेल ने कहा कि उत्तर प्रदेश को वन ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था बनाने में तकनीकी संस्थानों की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। उन्होंने कहा कि छात्रों को व्यावहारिक एवं रोजगारपरक शिक्षा उपलब्ध कराकर उन्हें सीधे उद्योगों से जोड़ना सरकार की प्राथमिकता है। मंत्री पटेल मंगलवार को विधानसभा स्थित कार्यालय कक्ष में डिलाइट के प्रतिनिधियों एवं विभागीय अधिकारियों के साथ आयोजित समीक्षा बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। बैठक में प्लेसमेंट पोर्टल, एआई इंटीग्रेशन, नैक एवं एनआईआरएफ रैंकिंग, इंडस्ट्रियल विजिट, इंडस्ट्री पार्टनरशिप तथा विभिन्न एमओयू की प्रगति की समीक्षा की गई। बैठक में तकनीकी संस्थानों में इंडस्ट्रियल विजिट और इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग को अनिवार्य बनाए जाने पर विशेष जोर दिया गया। मंत्री ने कहा कि इंजीनियरिंग छात्रों को केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं रखा जा सकता। उन्होंने निर्देश दिए कि सिविल इंजीनियरिंग के विद्यार्थियों को एक्सप्रेसवे, टनल और डैम निर्माण स्थलों का भ्रमण कराया जाए, जबकि मैकेनिकल एवं इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग के छात्रों को ईवी निर्माण इकाइयों और औद्योगिक प्रतिष्ठानों का व्यावहारिक अनुभव दिया जाए। इसके लिए प्रत्येक छात्र के लिए कम से कम दो इंडस्ट्रियल विजिट अनिवार्य करने का प्रस्ताव तैयार किया जा रहा है। बैठक में बताया गया कि विभाग द्वारा विकसित प्लेसमेंट पोर्टल पर 8 हजार से अधिक छात्र ऑनबोर्ड किए जा चुके हैं। साथ ही नौकरी.कॉम के सहयोग से उत्तर प्रदेश के विद्यार्थियों के लिए विशेष लैंडिंग पेज तैयार किया जा रहा है, जिससे प्रदेश के युवाओं को स्थानीय स्तर पर रोजगार के अधिक अवसर उपलब्ध हो सकेंगे। इसे युवाओं को निजी क्षेत्र और वैश्विक अवसरों से जोड़ने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। सरकार तकनीकी शिक्षा में आधुनिक तकनीकों के समावेशन पर भी विशेष फोकस कर रही है।

खरीद केंद्रों की सुस्त कार्यप्रणाली पर नाराजगी

विशेष संवाददाता (vol)

- पी.एम. कुसुम और खेत तालाब योजना के माध्यम से सिंचाई क्षमता बढ़ाने के निर्देश

लखनऊ। प्रदेश के कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने मंगलवार को कृषि भवन के सभागार में आयोजित समीक्षा बैठक के दौरान मूल्य समर्थन योजना के अंतर्गत रबी फसलों की खरीद, उर्वरक उपलब्धता, खरीफ बीज वितरण और सिंचाई योजनाओं की विस्तृत समीक्षा की। बैठक में मंत्री जी ने रबी सीजन में क्रय एजेंसियों द्वारा खरीद की धीमी और लचर प्रगति पर खरीद एजेंसियो को कड़ी फटकार लगाई और खरीद प्रक्रिया में तेजी लाने के निर्देश दिए।

मूल्य समर्थन योजना (2026-27) की समीक्षा करते हुए कृषि मंत्री जी ने बताया कि वर्तमान में 280 क्रय केंद्र संचालित हैं, जिनसे अब तक 2,759 किसान लाभान्वित हुए हैं। उन्होंने नैफेड, एनसीसीएफ सहित राज्य की खरीद एजेंसियों (यूपीपीसीएफ, यूपीपीसीयू आदि) को निर्देशित किया कि वे निर्धारित लक्ष्यों (मसूर 6.77 लाख मी.टन, सरसों 5.30 लाख मी.टन, चना 2.24 लाख मी.टन और अरहर 1.13 लाख मी.टन) की प्राप्ति के लिए पूरी पारदर्शिता के साथ कार्य करें। सिंचाई योजनाओं की प्रगति पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश सोलर पम्प योजना (पीएम कुसुम) के तहत वर्ष 2013 से 2026 तक कुल 1,01,255 सोलर पम्पों की स्थापना की गई है, जिसमें से रिकॉर्ड 91,104 पम्पों की स्थापना वर्तमान सरकार (2017-2026) के कार्यकाल में हुई है। वर्ष 2024-25 में सर्वाधिक 28,804 पम्पों का लक्ष्य पूर्ण किया गया। किसानों को 2 एचपी से 10 एचपी तक के पम्पों पर 60 प्रतिशत अनुदान (30 प्रतिशत केंद्र तथा 30 प्रतिशत राज्य) प्रदान किया जा रहा है, जिससे कृषि लागत में कमी आ रही है। इसके अतिरिक्त, वर्षा जल संचयन के लिए खेत तालाब योजना की समीक्षा करते हुए उन्होंने बताया कि वर्ष 2026-27 के लिए 2,905 तालाबों और 270 पम्पसेटों का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। योजना के अंतर्गत तालाब निर्माण पर 52,500 रुपये का अनुदान डी.बी.टी. के माध्यम से दो किस्तों में दिया जा रहा है। इसके साथ ही पम्पसेट पर 50 प्रतिशत या अधिकतम रू0 15 हजार का अनुदान दिया जा रहा है। उन्होंने अधिकारियों को उर्वरकों की कालाबाजारी रोकने हेतु निगरानी बढ़ाने और खरीफ सीजन के लिए उन्नत बीजों का समयबद्ध वितरण सुनिश्चित करने के कड़े निर्देश दिए। उन्होंने किसानों से अपील की है कि वे खरीद सीजन के लिए बीजों की मांग का आवेदन पोर्टल पर करें। इसके लिए वे अपने मोबाइल से, नजदीकी जनसेवा केन्द्र (सीएससी) अथवा कृषि विभाग के नजदीकी कार्यालय से आवेदन कर सकते हैं।

हर बूथ पर निश्चित विजय का लक्ष्य लेकर करें कार्य : पंकज चौधरी

धर्मपाल सिंह ने समस्त समितियों को हर माह नियमित बैठकों का आयोजन करने का दिया निर्देश

विशेष संवाददाता (vol)

- भाजपा के राज्य मुख्यालय पर प्रदेश पदाधिकारियों, क्षेत्रीय अध्यक्षों, जिलाध्यक्षों एवं जिला प्रभारियों के साथ संगठनात्मक बैठक सम्पन्न

लखनऊ। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं केंद्रीय वित्त राज्यमंत्री पंकज चौधरी की अध्यक्षता एवं प्रदेश महामंत्री संगठन धर्मपाल सिंह की उपस्थिति में मंगलवार को भाजपा के राज्य मुख्यालय पर प्रदेश पदाधिकारियों, क्षेत्रीय अध्यक्षों, जिलाध्यक्षों एवं जिला प्रभारियों के साथ संगठनात्मक बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में जिला समितियों, मंडल समितियों, शक्ति केंद्र एवं बूथ समितियों के सत्यापन कार्य की समीक्षा के साथ आगामी कार्ययोजना पर विस्तार से चर्चा की गई। बैठक का संचालन प्रदेश महामंत्री गोविन्द नारायण शुक्ला ने किया।

प्रदेश भाजपा अध्यक्ष पंकज चौधरी ने कहा कि विधानसभा चुनाव-2027 के लिए प्रत्येक बूथ पर निश्चित विजय का लक्ष्य लेकर योजनाबद्ध ढंग से कार्य करना होगा। उन्होंने कहा कि विगत चुनावों में जिन बूथों पर भाजपा को सफलता मिली, वहां पर जीत के अंतर को और अधिक बढ़ाने का काम किया जाए, जबकि अपेक्षाकृत कमजोर बूथों पर विशेष परिश्रम करके उन्हें भाजपा के अनुकूल बनाया जाए। उन्होंने कहा कि 2017 से बड़ी विजय 2027 में प्राप्त करने के संकल्प के साथ कार्य करना है। बूथ स्तर पर प्रत्येक कार्यकर्ता की क्षमता का उपयोग, सामूहिकता, समन्वय तथा प्रभावी रणनीति के साथ कार्य करना ही प्राथमिकता होना चाहिए।

उन्होंने कहा कि मुद्दाविहीन विपक्ष के पास ना कोई नीति है, ना कार्यक्रम है, ना कोई कार्ययोजना है और ना ही जनहित के लिए कोई विजन है। विपक्ष केवल झूठ, भ्रम और शोर मचाने के हथकंडे अपना रहा है। ऐसे में भाजपा कार्यकर्ताओं को अधिक सजग होकर विपक्ष के प्रत्येक झूठ का घर-घर जाकर पदार्फाश करना होगा। यह कार्य मंडल, बूथ और शक्तिकेन्द्र की मजबूत संरचना, परिश्रमी कार्यकर्ताओं तथा प्रभावी संगठनात्मक कार्यक्रम के क्रियान्वयन से ही संभव होगा।

प्रदेश महामंत्री संगठन धर्मपाल सिंह ने जिला समिति, मंडल समिति, शक्तिकेन्द्र तथा बूथ समितियों के सत्यापन कार्य की समीक्षा करते हुए कहा कि प्रत्येक माह नियमित बैठकों का आयोजन सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि जिला समितियों की बैठकें प्रत्येक माह की 01 से 15 तारीख के बीच आयोजित हो।

वहीं माह के प्रथम सप्ताह में मंडल समिति, तृतीय सप्ताह में शक्तिकेन्द्र की बैठकें नियमित रूप से सम्पन्न की जाएं। माह के अंतिम सप्ताह में मन की बात कार्यक्रम के साथ बूथ समिति की बैठकें आयोजित होंगी। उन्होंने कहा कि प्रत्येक बैठक संगठनात्मक कार्ययोजना के प्रभावी क्रियान्वयन, समन्वय, सहयोग और सामंजस्य के सूत्र पर आधारित होनी चाहिए। आगामी समय में विधानसभा स्तर पर बूथ अध्यक्ष बैठकों का आयोजन भी किया जाएगा।

धर्मपाल सिंह ने कहा कि बूथ समितियों के सत्यापन का कार्य पूर्ण हो रहा है। संगठनात्मक कार्यक्रमों एवं अभियानों में ऐसे सभी परिश्रमी एवं क्षमतावान कार्यकर्ताओं को जिम्मेदारियां सौंपी जाए। प्रत्येक बूथ पर पुराने एवं अनुभवी कार्यकर्ताओं की सूची तैयार करके उन्हें संगठनात्मक कार्यक्रमों एवं अभियानों में सक्रिय किया जाए। साथ ही संगठन की विचारधारा से जुड़े लोगों को भी पार्टी कार्य में जोड़ने का काम करना है।

गो आश्रय स्थल बनेंगे ऑर्गेनिक फर्टिलाइजर प्रोडक्शन सेंटर

साढ़े बारह लाख गोवंश का संरक्षण, 2100 करोड़ से आत्मनिर्भर बनेंगी गोशालाएं

विशेष संवाददाता (vol)

लखनऊ। प्रदेश में कभी निराश्रित गोवंश, गो तस्करी और अवैध बूचड़खानों को लेकर चर्चा होती थी, लेकिन मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में प्रदेश अब गोसंरक्षण, प्राकृतिक खेती और ग्रामीण अर्थव्यवस्था के नए मॉडल के रूप में पहचान बना रहा है। योगी सरकार अब प्रदेश की लगभग 7,500 गो आश्रय स्थलों को ऑर्गेनिक फर्टिलाइजर प्रोडक्शन सेंटर के रूप में विकसित करने जा रही है। इससे ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं को बड़े पैमाने पर रोजगार मिलेगा। योगी सरकार का लक्ष्य गोसंरक्षण को केवल धार्मिक या सांस्कृतिक भावना तक सीमित न रखकर उसे किसानों की आय, प्राकृतिक खेती, महिला सशक्तीकरण और ग्रामीण रोजगार से जोड़ना है।

गो सेवा आयोग के अध्यक्ष श्याम बिहारी गुप्ता ने बताया कि प्रदेश के लगभग साढ़े सात हजार गो आश्रय स्थलों में इस समय साढ़े बारह लाख गोवंश संरक्षित हैं। योगी सरकार अब इन गोशालाओं को ऑर्गेनिक फर्टिलाइजर प्रोडक्शन सेंटर के रूप में विकसित करने जा रही है।

गोबर और गोमूत्र आधारित प्राकृतिक खेती मॉडल को बढ़ावा देकर किसानों की खेती की लागत कम करने और आय बढ़ाने की रणनीति बनाई गई है। एक गाय से प्रतिदिन लगभग 5 लीटर गोमूत्र और 10 किलोग्राम गोबर प्राप्त होता है। यही संसाधन जैविक खाद, प्राकृतिक कीटनाशक और अन्य गो आधारित उत्पादों के निर्माण में उपयोग किए जाएंगे। इससे रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता घटेगी और मिट्टी की उर्वरा शक्ति बढ़ेगी। सरकार ने 2000 करोड़ रुपये गोसंरक्षण अभियान के लिए मंजूर किए हैं, जबकि वृहद गोसंरक्षण केंद्रों की स्थापना के लिए अलग से 100 करोड़ रुपये की व्यवस्था की गई है। इस प्रकार कुल 2100 करोड़ रुपये व्यय किए जाएंगे।

प्रदेश में 155 वृहद गोसंरक्षण केंद्रों का निर्माण भी तेजी से चल रहा है। योगी सरकार का लक्ष्य है कि आने वाले समय में प्रत्येक जिले में कम से कम एक बड़ा आत्मनिर्भर गोसंरक्षण केंद्र स्थापित किया जाए। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर अब महिला स्वयं सहायता समूहों और किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) को भी गोआश्रय स्थलों के संचालन से जोड़ा जाएगा। योगी सरकार की योजना है कि हर जिले में चयनित महिला समूहों को प्रशिक्षण देकर गोवंश की देखभाल, पोषण, जैविक खाद निर्माण और उत्पाद प्रबंधन का जिम्मा दिया जाए। इससे ग्रामीण महिलाओं को रोजगार मिलेगा, गांवों में आय के नए स्रोत विकसित होंगे और गोसंरक्षण आंदोलन जनभागीदारी आधारित मॉडल के रूप में मजबूत होगा।

संक्षेप

पुलिस ने किया फ्लैग मार्च

सिद्धार्थनगर। सिद्धार्थनगर में आगामी त्योहारों को शांतिपूर्ण एवं सुरक्षित माहौल में संपन्न कराने के उद्देश्य से क्षेत्राधिकारी मयंक द्विवेदी ने थाना कठेला समयमाता पुलिस टीम के साथ पैदल गश्त एवं फ्लैग मार्च किया। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक डॉ0 अभिषेक महाजन के निर्देश पर आयोजित इस अभियान में पुलिस ने क्षेत्र में सतर्कता बढ़ाते हुए आमजन से संवाद किया और सुरक्षा का भरोसा दिलाया। सीओ मयंक द्विवेदी ने लोगों से शांति एवं सौहार्द बनाए रखने की अपील करते हुए कहा कि त्योहारों के दौरान सुरक्षा व्यवस्था को लेकर पुलिस पूरी तरह मुस्तैद है इस अवसर पर सब इंस्पेक्टर आनन्द कुमार सहित तमाम सब इंस्पेक्टर व भारी संख्या में पुलिस बल पैदल गश्त में शामिल रही।

डीएम ने कस्तूरबा बालिका विद्यालय का किया निरीक्षण

सिद्धार्थनगर। सिद्धार्थनगर में जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन ने कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय, उसका बाजार का निरीक्षण कर निर्माण कार्यों में लापरवाही पर सख्त नाराजगी जताई। एक माह से रुके निर्माण कार्य को गंभीरता से लेते हुए डीएम ने कार्यदायी संस्था यूपीसीएलडीएफ को मई 2026 के अंत तक हर हाल में कार्य पूर्ण कराने के निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान उन्होंने रसोईघर का जायजा लिया तथा लैब में प्रैक्टिस कर रहे बच्चों का उत्साहवर्धन भी किया।

दुष्कर्म व पास्को एक्ट का वांछित गिरफ्तार

प्रतापगढ़। उदयपुर पुलिस ने दुष्कर्म व पास्को एक्ट के मुकदमें में वांछित चल रहे आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। उप निरीक्षक राजेन्द्र कुमार त्रिपाठी मंगलवार को पुलिस बल के साथ गश्त पर निकले थे। इसी दौरान मुखबिर की सूचना पर वांछित सनीश पुत्र शिवशंकर यादव निवासी पूरे बढ़ई पेड़रिया को भंवरी मार्ग से गिरफ्तार किया। दरोगा ने बताया कि गिरफ्तार किए गए वांछित को जेल भेज दिया गया।

आत्महत्या के लिए उकसाने का आरोपी भेजा गया जेल

प्रतापगढ़। आत्महत्या के लिए उकसाने के मुकदमें में वांछित चल रहे पचीस हजार के ईनामिया को उदयपुर पुलिस ने गिरफ्तार किया है। उदयपुर थाने के दरोगा राजेन्द्र कुमार त्रिपाठी मंगलवार की सुबह पुलिस बल के साथ गश्त पर निकले थे। इसी दौरान मुखबिर की सूचना पर रेहुआ लालगंज निवासी मो0 अनारूल पुत्र मो0 राजू चिकवा उर्फ ऐनुलहक को नरवल तिराहे के पास से गिरफ्तार किया। दरोगा ने बताया कि गिरफ्तार किये गये आरोपी पर पचीस हजार का ईनाम घोषित था। आरोपी को जेल भेज दिया गया।

वांछित गिरफ्तार, गया जेल

प्रतापगढ़। मारपीट व गालीगलौज व धमकी के मुकदमें में वांछित चल रहे आरोपी को गिरफ्तार कर पुलिस ने जेल भेज दिया। लालगंज कोतवाली के दरोगा ज्ञानचंद्र तिवारी पुलिस बल के साथ मंगलवार की सुबह गश्त पर निकले थे। इसी दौरान मुखबिर की सूचना पर गोसाईं का पुरवा अमावां निवासी वांछित राम सुंदर पुत्र घेर्राऊ को उसके घर के पास से गिरफ्तार किया। दरोगा ने बताया कि गिरफ्तार किए गए वांछित को जेल भेज दिया गया।

हरा पेड़ काटने पर हुआ जुर्माना

प्रतापगढ़। लालगंज के नया पुरवा लोहंगपुर में सोमवार को नीम के हरे दो पेड़ काटे गए थे। ग्रामीणों की शिकायत पर वन विभाग ने मौके पर जाकर देखा तो शिकायत सही पायी गयी। कालाकांकर रेंज के रेंजर हनुमान प्रसाद ने बताया कि आरोपी गयादीन गुप्ता पर हरा पेड़ काटे जाने के आरोप में अठारह हजार का जुमार्ना किया गया है। मामले की जांच की जा रही है।

राशन वितरण में लापरवाही पर सख्त हुए सीडीपीओ अभय सिंह

12 आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों को जारी किया नोटिस

सिद्धार्थनगर। जिले के मिठवल क्षेत्र में सरकारी योजनाओं का लाभ पात्रों तक पहुंचाने के लिए बाल विकास परियोजना अधिकारी (सीडीपीओ) अभय सिंह लगातार सक्रिय और सख्त कार्यशैली अपनाए हुए हैं। पोषण ट्रैकर ऐप की समीक्षा के दौरान सामने आई गंभीर अनियमितताओं पर उन्होंने बड़ी कार्रवाई करते हुए कुल 12 आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों को नोटिस जारी कर स्पष्टीकरण तलब किया है।

जानकारी के अनुसार, क्षेत्रीय मुख्य सेविका द्वारा लिखित रूप से अवगत कराया गया कि कई महीनों से पोषण ट्रैकर ऐप पर लाभार्थियों को टीएचआर / राशन वितरण नहीं किया जा रहा था। साथ ही पात्र गर्भवती महिलाओं, धात्री माताओं, कुपोषित बच्चों एवं शिशुओं को शासन द्वारा संचालित अन्य योजनाओं का लाभ भी नियमित रूप से नहीं मिल पा रहा था। मामले को गंभीरता से लेते हुए सीडीपीओ अभय सिंह ने स्वयं कई आंगनबाड़ी केंद्रों का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान मिली खामियों पर उन्होंने संबंधित कार्यकत्रियों को कड़ी फटकार लगाई तथा स्पष्ट निर्देश दिए कि शासन की मंशा के अनुरूप प्रत्येक पात्र लाभार्थी तक योजनाओं का लाभ हर हाल में धरातल पर पहुंचना चाहिए। अभय सिंह ने कहा कि गरीब एवं जरूरतमंद महिलाओं और बच्चों के पोषण से किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने व्यवस्था सुधारने, राशन वितरण नियमित करने तथा पोषण ट्रैकर ऐप पर सही और समयबद्ध फीडिंग सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

सीडीपीओ अभय सिंह द्वारा उठाए गए इस सख्त कदम से राशन वितरण में लापरवाही बरतने वाली आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों में हड़कंप मच गया है। वहीं क्षेत्र के पात्र लाभार्थियों और आम लोगों ने उनकी कार्यशैली की सराहना करते हुए उम्मीद जताई है कि अब योजनाओं का लाभ सही तरीके से जरूरतमंदों तक पहुंचेगा।

रिटायर्ड कर्मचारी से 45,014 रुपये की साइबर ठगी

मझगांवा, गोरखपुर। साइबर ठगों ने पेंशन अपडेट कराने का झांसा देकर एक रिटायर्ड कर्मचारी से 45,014 रुपये उड़ा लिए। मामला गगहा थाना क्षेत्र के ग्राम सिहाइजपार का है। सिहाईजपार निवासी ओमशंकर शाही पुत्र रामदेव शाही ने पुलिस को दी तहरीर में बताया कि मंगलवार को उनके पास एक अज्ञात व्यक्ति का फोन आया। कॉलर ने खुद को पेंशन विभाग का कर्मचारी बताते हुए पेंशन अपडेट करने की बात कही। विश्वास में लेकर उसने ओमशंकर से आधार व अन्य जरूरी जानकारी ले ली और मोबाइल पर आए ओटीपी को बताने को कहा।

मिशन शक्ति : महिलाओं और बालिकाओं को किया जागरूक

बांसी सिद्धार्थनगर। महिलाओं और बालिकाओं की सुरक्षा, सम्मान और आत्मनिर्भरता को लेकर चलाए जा रहे ह्लमिशन शक्ति फेज-5.0 (द्वितीय चरण)ह्व अभियान के अंतर्गत थाना बांसी पुलिस ने ग्राम भरतना में व्यापक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। यह अभियान क्षेत्राधिकारी बांसी शुभेंदु सिंह के पर्यवेक्षण तथा प्रभारी निरीक्षक मृत्युंजय पाठक के कुशल नेतृत्व में संपन्न हुआ।

पुलिस द्वारा जारी विज्ञप्ति के अनुसार वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक डॉ. अभिषेक महाजन के निर्देशन एवं अपर पुलिस अधीक्षक प्रशांत कुमार प्रसाद के पर्यवेक्षण में मिशन शक्ति अभियान को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य निरंतर किया जा रहा है।

कार्यक्रम के दौरान थाना बांसी की मिशन शक्ति टीम ने ग्राम भरतना के विभिन्न सार्वजनिक स्थलों पर पहुंचकर महिलाओं एवं बालिकाओं को महिला सुरक्षा, साइबर अपराध से बचाव, आत्मरक्षा, एंटी रोमियो अभियान तथा महिला सशक्तिकरण से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियां प्रदान कीं। साथ ही सरकार द्वारा संचालित विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं के बारे में विस्तार से बताया गया।

महिलाओं को प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना, मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना, रानी लक्ष्मीबाई बाल एवं महिला सम्मान कोष, नारी शक्ति वंदन अधिनियम, निराश्रित महिला पेंशन योजना, मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना सहित अन्य लाभकारी योजनाओं की जानकारी देकर उन्हें जागरूक किया गया।

पुलिस मुठभेड़ में बदमाश के पैर में लगी गोली, हुआ गिरफ्तार

प्रतापगढ़। सांगीपुर पुलिस को दर्जन भर आपराधिक मुकदमों में पुलिस के लिए चुनौती बने बदमाश को मुठभेड़ के दौरान गिरफ्तार करने में सफलता मिली है। मुठभेड़ में गोली लगने से घायल बदमाश का पुलिस अभिरक्षा में अस्पताल में इलाज चल रहा है। सांगीपुर थानाध्यक्ष गौरव त्रिवेदी सोमवार की देर रात पुलिस फोर्स के साथ अमावां बार्डर पर चेकिंग पर थे। इसी दौरान लालगंज की तरफ से आ रहे एक संदिग्ध बाइक सवार को रूकने का इशारा किया तो वह भागने लगा। पीछा करती पुलिस ने घेराबंदी की तो जान से मारने की नीयत से बदमाश फायरिंग करने लगा। आत्मरक्षा में पुलिस की जवाबी कार्रवाई में बदमाश दाहिने पैर में गोली लगने से घायल हो गया। पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार बदमाश के पास से पुलिस ने तमंचा व कारतूस व बाइक की बरामदगी की है। एएसपी पश्चिमी बृजनंदन राय ने बताया कि गिरफ्तार किया गया बदमाश राम अधार तिवारी पुत्र लालजी तिवारी प्रयागराज के सोरांव थाना अन्तर्गत लेहरा गांव का निवासी है। बदमाश वर्तमान में जनपद के देल्हूपुर थानान्तर्गत बोझी गांव में रह रहा है। गिरफ्तार किए गए बदमाश के खिलाफ जनपद व प्रयागराज जनपद में दर्जन भर मुकदमें दर्ज है। पुलिस अभिरक्षा में उसका इलाज चल रहा है। जिसके बाद आगे की विधिक कार्रवाई की जाएगी।

गोशालाओं की व्यवस्था सुधारने के निर्देश

श्रावस्ती। उत्तर प्रदेश गो सेवा आयोग के उपाध्यक्ष अतुल सिंह एवं सदस्य राजेश सिंह सेंगर ने मंगलवार को जिले के कई गो आश्रय स्थलों का निरीक्षण किया। उन्होंने इकौना और हरिहरपुररानी क्षेत्र की गोशालाओं में साफ-सफाई, चारा, पानी और गोवंश संरक्षण की व्यवस्थाओं का जायजा लिया। निरीक्षण के बाद कलेक्ट्रेट सभागार भिनगा में समीक्षा बैठक आयोजित हुई। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी शाहिद अहमद, प्रभागीय वनाधिकारी धनराज मीणा समेत सभी संबंधित अधिकारी मौजूद रहे। अधिकारियों को गोशालाओं में स्वच्छता बनाए रखने, पर्याप्त भूसा और हरा चारा उपलब्ध कराने तथा गर्मी से बचाव के लिए विशेष इंतजाम करने के निर्देश दिए गए। उपाध्यक्ष ने कहा कि गोवंश के बेहतर संरक्षण के लिए छोटे और बड़े पशुओं को अलग रखा जाए तथा स्वस्थ मादा गोवंश का कृत्रिम गभार्धान कराकर नस्ल सुधार पर ध्यान दिया जाए। उन्होंने दुधारू गायों की संख्या बढ़ाने और गोशालाओं को आत्मनिर्भर बनाने पर भी जोर दिया। बैठक में गोबर और गोमूत्र से उपयोगी वस्तुएं बनाने, जैविक खेती को बढ़ावा देने तथा गोशालाओं का नियमित निरीक्षण करने के निर्देश दिए गए। उन्होंने कहा कि सरकार से मिलने वाली धनराशि का ईमानदारी से उपयोग करते हुए गो संरक्षण का कार्य पूरी गंभीरता से किया जाए।

डिजिटल जनगणना को लेकर पुलिस कर्मियों को प्रशिक्षण

श्रावस्ती। जनगणना-2027 को सफल बनाने के लिए पुलिस लाइन सभागार में विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। पुलिस अधीक्षक राहुल भाटी के निर्देशन और अपर पुलिस अधीक्षक चंद्रकेश सिंह की अध्यक्षता में हुए कार्यक्रम में अधिकारियों और कर्मचारियों को डिजिटल जनगणना एवं स्व-गणना प्रक्रिया की जानकारी दी गई। प्रशिक्षण में सहायक अध्यापक आशीष कुमार और मनमोहन पांडेय ने एचएलओएसई पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन जनगणना प्रक्रिया, डेटा सुरक्षा और आम लोगों को जागरूक करने के तरीकों की जानकारी दी। बताया गया कि नागरिक घर बैठे मोबाइल या कंप्यूटर से अपनी जानकारी ऑनलाइन दर्ज कर सकेंगे। अपर पुलिस अधीक्षक ने सभी थाना क्षेत्रों में लोगों को डिजिटल जनगणना के प्रति जागरूक करने के निर्देश दिए। कार्यक्रम में प्रतिसार निरीक्षक अखिलेश कुमार, डीसी संतोष प्रजापति सहित विभिन्न थाना व यूनिटों के अधिकारी और कर्मचारी मौजूद रहे।

50 हजार का इनामी चोर आभूषण सहित गिरफ्तार

श्रावस्ती। थाना इकौना पुलिस ने चोरी की कई घटनाओं में वांछित 50 हजार रुपये के इनामी अभियुक्त को चोरी के आभूषण और नगदी के साथ गिरफ्तार किया है। यह कार्रवाई पुलिस अधीक्षक राहुल भाटी के निर्देश पर चलाए जा रहे अपराध विरोधी अभियान के तहत की गई। अपर पुलिस अधीक्षक चन्द्रकेश सिंह और क्षेत्राधिकारी इकौना आलोक कुमार सिंह के पर्यवेक्षण में प्रभारी निरीक्षक परमानन्द तिवारी के नेतृत्व में पुलिस टीम मंगलवार रात गश्त और चेकिंग कर रही थी। इसी दौरान मुखबिर से सूचना मिली कि कई चोरी के मामलों में वांछित आरोपी भिनगा बस स्टैंड के पास मौजूद है। सूचना पर पुलिस ने घेराबंदी कर आशीष पासवान उर्फ ननका पासवान निवासी सीतापुर को पकड़ लिया। तलाशी में उसके पास से चोरी की अंगूठी, दो पायल, बच्चों के कड़ा और 1100 रुपये नगद बरामद हुए। पूछताछ में आरोपी ने चोरी की घटनाओं में शामिल होने की बात स्वीकार की।

पुलिस के अनुसार आरोपी के खिलाफ श्रावस्ती और सीतापुर में चोरी, गैंगस्टर एक्ट और आर्म्स एक्ट के कई मुकदमे पहले से दर्ज हैं। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायालय भेज दिया।

भाजपा महिला मोर्चा ने किया प्रदर्शन

सांसद आवास का किया घेराव

कटरा। श्रावस्ती में महिला आरक्षण बिल लोकसभा में पास न होने को लेकर भारतीय जनता पार्टी महिला मोर्चा की कार्यकताओं ने विरोध प्रदर्शन किया। महिला मोर्चा की महामंत्री बलरामपुर साधना पांडे की अध्यक्षता में कटरा कस्बे में जुलूस निकाला गया और सांसद राम शिरोमणि वर्मा के आवास का घेराव किया गया। प्रदर्शन के दौरान महिलाओं ने राम शिरोमणि वर्मा मुदार्बाद, अखिलेश यादव मुदार्बाद और डिंपल यादव मुदार्बाद के नारे लगाए। साथ ही महिलाओं ने हम महिलाओं ने ठाना है, महिलाओं को सशक्त बनाना है, हम सबका उद्देश्य महिला बिल पास करना है और महिला सुरक्षा, देश की रक्षा जैसे उद्घोष भी किए। इस दौरान साधना पांडे ने कहा कि महिला आरक्षण बिल संविधान संशोधन से जुड़ा होने के कारण इसे पास कराने के लिए सरकार को दो-तिहाई बहुमत की जरूरत थी। उन्होंने बताया कि बिल के समर्थन में 298 वोट पड़े जबकि विरोध में 230 वोट पड़े। कुल 528 सांसदों ने मतदान किया, जिसमें दो-तिहाई बहुमत के लिए 352 वोट जरूरी थे।

लेकिन बिल के पक्ष में केवल 298 वोट मिलने के कारण यह विधेयक 54 वोट से लोकसभा में गिर गया। उन्होंने कहा कि वोटिंग के बाद लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने सदन को जानकारी दी कि संविधान (131वां संशोधन) विधेयक दो-तिहाई बहुमत नहीं मिलने के कारण पारित नहीं हो सका। इस मौके पर जिला कार्य समिति सदस्य अर्चना बाजपेई, ललित तिवारी, महामंत्री वंदना पासवान, उर्मिला देवी, सरोज तिवारी, सरिता शुक्ला, डाली गुप्ता, जनक दुलारी सहित कई महिला कार्यकर्ता मौजूद रहीं।

सड़क सुरक्षा को लेकर डीएम सख्त, बिना फिटनेस व ओवरलोड वाहनों पर होगी कड़ी कार्रवाई

सिद्धार्थनगर। सिद्धार्थनगर में जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन की अध्यक्षता एवं पुलिस अधीक्षक डा0 अभिषेक महाजन की उपस्थिति में कलेक्ट्रेट सभागार में सड़क सुरक्षा समिति की बैठक आयोजित हुई। बैठक में डीएम ने बिना फिटनेस और बिना परमिट चल रहे वाहनों पर कड़ी कार्रवाई के निर्देश दिए। विद्यालयी वाहनों की फिटनेस जांच कराने, ओवरलोडिंग व ओवरस्पीड वाहनों का चालान करने तथा ब्लैक स्पॉट पर साइन बोर्ड व गति सीमा संकेतक लगाने के निर्देश भी दिए गए। डीएम ने नो हेलमेट, नो पेट्रोल अभियान का सख्ती से पालन कराने, दोपहिया वाहन चालकों को हेलमेट व चारपहिया चालकों को सीट बेल्ट अनिवार्य रूप से प्रयोग करने के निर्देश दिए। साथ ही रोडवेज चालकों के स्वास्थ्य एवं नेत्र परीक्षण कराने तथा सड़क किनारे विद्यालयों में यातायात जागरूकता अभियान चलाने पर भी जोर दिया।

खेत में लगे पीलर को पट्टीदारों ने गिराया, विरोध पर महिला को पीटा

सरहरी, गोरखपुर। गुलरिहा थाना अन्तर्गत सरहरी चौकी क्षेत्र के ग्राम सभा बिस्टौली में महिला द्वारा खेत में निर्माण कराये जा रहे पीलर को पट्टीदारों ने गिरा दिया।महिला द्वारा विरोध करने पर मारपीट कर घायल कर दिए। बचाव करने पहुंची जेठानी को भी पीट दिए।पुलिस मुकदमा दर्ज कर जांच कर रही है। पीड़िता चांदनी गुप्ता ने पुलिस को लिखित तहरीर देकर बताया कि वह अपने खेत में पीलर लगवाई थी। शुक्रवार को पट्टीदार शिवसरन, बलिराम, लक्ष्मीना एवं राम गुप्ता पहुंच कर जबरदस्ती पीलर मोड़ दिए तथा काम करने से रोकने लगे।विरोध करने पर सभी गाली गलौज करते हुए उसे पीटने लगे। बचाव करने पहुंची जेठानी को भी पीट कर घायल कर दिए।

अधिवक्ता संघ चुनाव में गहमागहमी के बीच हुआ मतदान

प्रतापगढ़। संयुक्त अधिवक्ता संघ लालगंज के चुनाव को लेकर मंगलवार को गहमागहमी के बीच सुबह करीब आठ बजे से मतगणना शुरू हुई। मतदान को लेकर अधिवक्ताओ में खासा उत्साह नजर आया। चिलचिलाती धूप में भी मतदान करने के लिए अधिवक्ताओं की लम्बी लाइन लगी दिखी। अधिवक्ता संघ के चुनाव में इस बार अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, महामंत्री समेत चालीस प्रत्याशी मैदान में हैं। वहीं अपने पक्ष में मतदान करने को लेकर अधिवक्ता प्रत्याशी साथियों का समर्थन प्राप्त करने की पुरजोर कोशिश में दिखे। तहसील लाइब्रेरी हॉल में चल रही मतदान प्रक्रिया में कुल छः सौ सतहत्तर अधिवक्ताओं में से छः सौ अटठावन मतदाताओं ने मतदान किया। मतदान की प्रक्रिया दोपहर करीब साढ़े तीन बजे समाप्त हुई। इसके बाद मतगणना का कार्य शुरू हुआ। शाम करीब छः बजे तक समाचार भेजे जाने तक मत पत्रों की छंटाई का काम चलता दिखा। चुनाव समिति के अध्यक्ष ज्ञानप्रकाश शुक्ल ने बताया कि मत पत्रों की छंटाई का काम पूर्ण होने के बाद मत पत्रों की गिनती का कार्य आरम्भ होगा। इधर शांतिपूर्ण चुनाव सम्पन्न कराने को लेकर शांति व्यवस्था के पुख्ता इंतजाम भी दिखे। एसडीएम शैलेन्द्र वर्मा, तहसीलदार गरिमा वर्मा ने मतदान व शांति व्यवस्था का जायजा लिया। वहीं शांतिपूर्ण मतदान व मतगणना को लेकर भारी संख्या में पुलिस बल की मुस्तैदी भी बनी रही। अधिवक्ताओं के चुनाव को देखते हुए नेशनल हाइवे पर रूट डायवर्जन भी बना दिखा। चुनाव समिति के अध्यक्ष ज्ञानप्रकाश शुक्ल ने बताया कि रात करीब नौ बजे के बाद परिणामों की घोषणा की जा सकती है। चुनाव समिति के महामंत्री वीरेन्द्र सिंह, शिवाकांत उपाध्याय, रामलगन यादव, संतोष पाण्डेय, शैलेन्द्र चतुर्वेदी, पूर्व अध्यक्ष राव वीरेन्द्र सिंह, राम मोहन सिंह, राधारमण शुक्ल, बेनीलाल शुक्ल आदि अधिवक्ता कार्यो के प्रबन्धन में मशक्कत करते दिखे।

सीओ शुबेन्दु सिंह ने थाना खेसरहा का किया निरीक्षण

बांसी सिद्धार्थनगर में क्षेत्राधिकारी शुबेन्दु सिंह ने थाना खेसरहा का निरीक्षण कर मालखाना, शस्त्रागार, लॉकअप, मेस, बैरक, कार्यालय एवं थाना परिसर की व्यवस्थाओं का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने साफ-सफाई व्यवस्था को बेहतर बनाए रखने तथा अभिलेखों को समयबद्ध तरीके से पूर्ण करने के निर्देश दिए। सीओ शुबेन्दु सिंह ने आईजीआरएस प्रकरणों के गुणवत्तापूर्ण निस्तारण, अपराध नियंत्रण, नियमित पैदल गश्त, वाहन चेकिंग एवं संदिग्ध व्यक्तियों की निगरानी को और प्रभावी बनाने पर जोर दिया। इस दौरान उन्होंने व्यवहारिक प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे रिक्रूट आरक्षियों के साथ गोष्ठी कर उन्हें पुलिस कार्यप्रणाली एवं अनुशासन संबंधी आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिए इस अवसर पर थानाध्यक्ष अनूप कुमार मिश्रा व अन्य तमाम पुलिस कर्मी मौजूद रहे।

सीएम डैशबोर्ड पर राजस्व कार्यों की डीएम ने की समीक्षा

श्रावस्ती। जिलाधिकारी अन्नपूर्णा गर्ग ने मंगलवार को कलेक्ट्रेट सभागार में सीएम डैशबोर्ड के माध्यम से राजस्व विभाग से जुड़ी योजनाओं और कार्यों की समीक्षा की।

बैठक में विभिन्न विभागों की प्रगति का जायजा लेते हुए अधिकारियों को लंबित मामलों के जल्द निस्तारण के निर्देश दिए गए। बैठक में उद्योग, आबकारी, खनन, खाद्य सुरक्षा, खाद्य एवं रसद, परिवहन, मंडी तथा राजस्व विभाग सहित कई विभागों की समीक्षा की गई। जिलाधिकारी ने कहा कि छह माह से अधिक पुराने मामलों को प्राथमिकता के आधार पर निस्तारित किया जाए और किसी भी न्यायालय में पुराने वाद लंबित न रहने पाएँ। उन्होंने राजस्व अधिकारियों को निर्देश दिया कि सभी लंबित मामलों की नियमानुसार सुनवाई कर समयबद्ध तरीके से निस्तारण सुनिश्चित किया जाए। साथ ही बड़े बकायेदारों से वसूली के लिए जारी आरसी की नियमित समीक्षा कर राजस्व वसूली में तेजी लाई जाए।

जिलाधिकारी ने आय, जाति और निवास प्रमाण पत्रों के आवेदन लंबित न रखने के निर्देश भी दिए। इसके अलावा भूमि पट्टा आवेदन, किसान दुर्घटना बीमा, स्वामित्व योजना तथा खतौनी पुनरीक्षण की प्रगति की समीक्षा करते हुए संबंधित अधिकारियों को लक्ष्य के अनुरूप कार्य करने को कहा। बैठक में सीएम डैशबोर्ड पर विभागों की रैंकिंग की भी समीक्षा की गई। जिलाधिकारी ने अधिकारियों से कहा कि वे अपने विभागों की योजनाओं और कार्यों की लगातार मॉनिटरिंग करें, ताकि जिले की रैंकिंग बेहतर बनी रहे। इस दौरान अपर जिलाधिकारी अमरेन्द्र कुमार वर्मा, उपजिलाधिकारी भिनगा आशीष भारद्वाज, इकौना पीयूष जायसवाल, जमुनहा संजय कुमार राय, समस्त तहसीलदार, ई-डिस्ट्रिक्ट मैनेजर शरद श्रीवास्तव सहित अन्य जिला स्तरीय अधिकारी मौजूद रहे।

लखनऊ विकास प्राधिकरण

(ISO 14001 : 2004, ISO 9001 : 2008 प्रमाणित संस्था)

प्राधिकरण भवन, विपिन खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ (उ०प्र०)। टोल-फ्री : 1800 1800 5000, वेबसाइट : www.ldalucknow.in

सार्वजनिक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि प्राधिकरण की आवासीय/व्यावसायिक/रेन्ट/नजूल/इम्प्रूवमेन्ट-ट्रस्ट योजनाओं के निम्नलिखित आवेदकों द्वारा उनके नाम के सामने अंकित सम्पत्ति का हस्तानांतरण/नामांकरण किये जाने हेतु प्राधिकरण में प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत किया गया है :-

क्र. सं.	मूल आवंटी का नाम	भूखण्ड/भवन/ दुकान संख्या	योजना का नाम	मृत्यु दिनांक	मूल आवंटी के उत्तराधिकारी अथवा आवेदक का नाम	उत्तराधिकारी के पक्ष में अनापत्तिकर्ताओं के नाम	मूल आवंटी से (मृतक) का सम्बन्ध
1	2	3	4	5	6	7	8
1.	श्री सुरेन्द्र सिंह व श्रीमती रंभा सिंह	भू०सं०/डी-142 सेक्टर-डी	साउथसिटी शारदा नगर योजना रायबरेली रोड, लखनऊ	श्री सुरेन्द्र सिंह की मृत्यु दिनांक 19.08.2016	श्रीमती रंभा सिंह	1. श्री दिपक सिंह (पुत्र) 2. श्री प्रकाश सिंह (पुत्र)	पत्नी
2.	स्व० पी0 एल0 गर्ग	भूखण्ड संख्या-5/83 सेक्टर-5	जानकीपुरम विस्तार,	25.03.2021	श्रीमती नीरू गर्ग (पत्नी)	1. श्री ऐश्वर्य कुमार गर्ग-पुत्र	पत्नी
3.	स्व. विमल कुमार श्रीवास्तव	भू0 सं०- SS-177 सेक्टर-एन	अलीगंज	12.11.2024	1. श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव-पत्नी, 2. श्री अंकुर श्रीवास्तव-पुत्र 3. श्री अमित श्रीवास्तव-पुत्र	-	पत्नी/ पुत्रगण
4.	बाला सिंह जंगपांगी (मृतक)	भू0 सं0 सी-35, जे पार्क-2	महानगर विस्तार	09.04.2010	श्री अनूप जंगपांगी-पुत्र, सुधा पंगती-पुत्री एवं शशि मर्तोलिया-पुत्री समस्त वारिस स्व0 बाला सिंह जंगपांगी	-	पुत्र एवं पुत्री
5.	स्व0 प्रतिमा देवी	भवन सं०-1/173	विनम्र खण्ड गोमतीनगर	13.07.2024	श्री सुरेश चन्द्र त्रिपाठी, श्री मुकेश त्रिपाठी, श्री राजेश कुमार त्रिपाठी, श्री विनोद कुमार	-	भाईगण

उपर्युक्त नामान्तरण के आवेदन के सम्बन्ध में यदि किसी भी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो वह साक्ष्य सहित प्रकाशन तिथि से 30 दिनों के अन्दर अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्राप्त करा दें। निर्धारित तिथि तक कोई आपत्ति प्राप्त न होने पर प्राधिकरण अभिलेखों में कॉलम-6 पर लिखित व्यक्ति का नाम दर्ज कर लिया जायेगा तथा उसके बाद किसी आपत्ति पर विचार नहीं किया जायेगा।

सचिव

निवेश का नया गंतव्य बनेगी धुरियापार इंडस्ट्रियल टाउनशिप

- 6876 एकड़ में बसाया जा रहा नया इंडस्ट्रियल टाउनशिप
- सीएम योगी के विजन से ऊसर में लहलहाएगी उद्योगों की फसल
- अडानी समूह और श्रेयस डिस्टिलरी की निवेश परियोजनाएं शिलान्यास के लिए तैयार
- टाटा पॉवर्स और रिलायंस समूह के फूड पार्क को भूमि आवंटन के लिए जल्द शुरू होगी प्रक्रिया

घनश्याम कुमार

गोरखपुर। मास्टर प्लान को केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्रालय से एन्वॉयरमेंट क्लियरेंस मिलने के बाद धुरियापार इंडस्ट्रियल टाउनशिप निवेश का नया गंतव्य बनने की दिशा में आगे बढ़ने लगा है। अडानी समूह और श्रेयस डिस्टिलरी की दो बड़ी निवेश परियोजनाओं के लिए यहां भूमि आवंटन किया जा चुका है और ये दोनों परियोजनाएं शिलान्यास के लिए तैयार हैं। इसके अलावा इस इंडस्ट्रियल टाउनशिप में टाटा पॉवर्स ने वृहद सोलर प्लांट के लिए और रिलायंस समूह ने फूड पार्क के लिए बड़े निवेश की इच्छा जताई है। गोरखपुर औद्योगिक विकास प्राधिकरण (गीडा) जल्द ही इन दोनों इच्छुक औद्योगिक समूहों के साथ ही अन्य निवेशकों के लिए भूमि आवंटन की प्रक्रिया शुरू करेगा। गीडा की तरफ से धुरियापार औद्योगिक क्षेत्र का विकास गोरखपुर के दक्षिणांचल में किया जा रहा है जहां बहुतायत भूमि के ऊसर होने के कारण कृषि कार्य दुरूह था। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के विजन से अब इस क्षेत्र में उद्योगों की फसल लहलहाएगी। धुरियापार इंडस्ट्रियल टाउनशिप को 6876 एकड़ में ह्यग्रेटर गीडा के तर्ज पर आकार दिया जा रहा है। यह औद्योगिक क्षेत्र 17 अधिसूचित ग्रामों में विस्तृत है। यह इंडस्ट्रियल टाउनशिप पूर्वांचल के सबसे बड़े औद्योगिक लैंड बैंक वाली होगी। इसके तहत पहले फेज में गीडा द्वारा 800 एकड़ भूमि को अधिग्रहित कर उसे इंडस्ट्री की डिमांड के अनुरूप विकसित किया जा रहा है। गीडा की मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) अनुज मलिक के अनुसार इंडस्ट्रियल टाउनशिप के औद्योगिक सेक्टर एस-5 में दो बड़े निवेशकों को जमीन आवंटित की है और दोनों ही निवेशक, अपनी-अपनी औद्योगिक परियोजना के शिलान्यास की तैयारी में जुटे हैं। धुरियापार औद्योगिक क्षेत्र में अडानी समूह ने अंबुजा सीमेंट की यूनिट के लिए 46.63 एकड़ जबकि श्रेयश डिस्टिलरी-एनर्जी लिमिटेड ने 60.48 एकड़ भूमि आवंटित कराई है। अडानी समूह की तरफ से अंबुजा सीमेंट की यूनिट लगाने के लिए करीब 1400 करोड़ रुपये का निवेश प्रस्तावित है। समूह ने यूनिट के शिलान्यास और भूमि पूजन के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से सुविधानुसार समय देने का अनुरोध किया है। उम्मीद जताई जा रही है अडानी समूह को यूनिट के शिलान्यास के लिए इस माह के अंत तक मुख्यमंत्री का समय मिल सकता है। उधर श्रेयस डिस्टिलरी भी डिस्टिलरी और सोलर प्लांट का भूमि पूजन कराने के लिए मुख्यमंत्री को बुलाने की तैयारी कर रहा है। श्रेयस डिस्टिलरी का लक्ष्य धुरियापार में कुल 170 एकड़ जमीन आवंटित कराकर आठ हजार करोड़ रुपये के डिस्टिलरी और सोलर एनर्जी प्रोजेक्ट को क्रियान्वित करने का है।

संक्षेप

शांतिकुंज हरिद्वार की कलश यात्रा ऊगू पहुंची

फतेहपुर चौरासी, उन्नाव। शांतिकुंज हरिद्वार के तत्वावधान में माता भगवती देवी के शताब्दी वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में निकाली जा रही कलश यात्रा सोमवार को कस्बा ऊगू पहुंची। यात्रा के आगमन पर नगर में भव्य शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें गांव और क्षेत्र के सैकड़ों श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कस्बा ऊगू स्थित गांधी पार्क पहुंचे श्रद्धालुओं ने कलश यात्रा का स्वागत करते हुए आरती की। इसके बाद नगर भ्रमण कराया गया, जहां जगह-जगह श्रद्धालुओं ने पुष्पवर्षा कर यात्रा का अभिनंदन किया। कार्यक्रम के अंतर्गत शाम को दीप यज्ञ का आयोजन भी किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में लोगों ने सहभागिता कर धर्म और संस्कृति के प्रति अपनी आस्था प्रकट की। इस मौके पर मिथिलेश कुमार त्रिपाठी, राजा बाबू पांडेय, जितेंद्र कुमार, रामू आचार्य, विनीत मास्टर, शिवकुमार प्रजापति समेत तमाम क्षेत्रीय लोग मौजूद रहे।

ज्येष्ठ माह के दूसरे मंगलवार को भंडारे का आयोजन

पाटन, उन्नाव। तहसील बीघापुर मुख्यालय पाटन के अंतर्गत जेष्ठ माह के दूसरे मंगलवार को हनुमान जयंती के अवसर पर सुबह से ही हनुमान मंदिरों में भक्तों की भारी भीड़ रही। कस्बा बिहार में बैसवारा रेलवे स्टेशन के पास स्थित हनुमान मंदिर में भक्तों ने पहुंचकर पूजा अर्चना की तथा मांगलिक कार्यक्रम भी संपन्न हुए। इस मौके पर जगह-जगह शरबत वितरण एवं भंडारों का आयोजन किया गया जहां लोगों ने पहुंचकर प्रसाद ग्रहण किया। इसी क्रम में कस्बा पाटन, सुमेरपुर ऊच गांव, बक्सर, बाबू खेड़ा साहिल सहित अन्य स्थानों पर लोगों ने शरबत वितरण एवं भंडारा आयोजित किया जहां लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया।

पुलिस को मिली सफलता ,वारंटी अभियुक्त गिरफ्तार

पुरवा (वीओएल)। कोतवाली पुलिस ने वारंटी एवं वांछित अभियुक्तों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत एक वारंटी अभियुक्त को गिरफ्तार किया है। पुलिस अधीक्षक के निर्देशन तथा अपर पुलिस अधीक्षक एवं क्षेत्राधिकारी पुरवा के पर्यवेक्षण में चलाए जा रहे अभियान के क्रम में थाना पुरवा पुलिस टीम ने मंगलवार सुबह कार्रवाई करते हुए अभियुक्त को उसके घर से गिरफ्तार किया। पुलिस के अनुसार न्यायालय न्यायिक मजिस्ट्रेट पुरवा द्वारा जारी गिरफ्तारी वारंट के तहत अभियुक्त राजेन्द्र पुत्र गजराज निवासी ग्राम कोदइयाखेड़ा मजरा त्रिपुरारपुर थाना पुरवा जनपद उन्नाव को गिरफ्तार किया गया। अभियुक्त पर वाद संख्या 1019/23 धारा 447 भादवि व 2/3 सार्वजनिक संपत्ति नुकसान निवारण अधिनियम के तहत मामला दर्ज है। बताया गया कि पुलिस टीम ने मंगलवार सुबह करीब 4:30 बजे दबिश देकर अभियुक्त को गिरफ्तार किया गिरफ्तारी के बाद आवश्यक विधिक कार्रवाई पूरी कर अभियुक्त को न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है इसी क्रम में गिरफ्तारी करने वाली टीम मे उपनिरीक्षक रामेश्वर सिंह, कांस्टेबल दीपक कुमार, रि0का0 आशीष कुमार शामिल रहे।

सूचना

सूचित हो कि आधार में मेरी बेटी का नाम त्रुटिवश साम्भवी दुबे (SUMBAWEE DUBEY) अंकित हो गया है, जो कि गलत/अशुद्ध है। उसका सही/शुद्ध नाम शाम्भवी दुबे (SHAMBHAVI DUBEY) है। इन्द्रभूषण पुत्र राधेश्याम दुबे नि.-ग्राम-पाण्डेयपार उर्फ डड़वापार पो.-राजगढ़, थाना गोला, तहसील-बाँसगाँव, जिला गोरखपुर।

नवागत सीएमएस के एक्शन से जिला अस्पताल में दिखने लगा बदलाव

उन्नाव। जिला अस्पताल में नवागत सीएमएस डॉ. राजीव गुप्ता ने कार्यभार संभालते ही अस्पताल की व्यवस्थाओं को लेकर सख्त रुख अपनाना शुरू कर दिया है। उनके कार्यभार ग्रहण करने के बाद लापरवाही करने वाले डॉक्टरों और कर्मचारियों में हड़कंप की स्थिति साफ तौर पर देखी जा रही है। अक्सर समय से ओपीडी न करने को लेकर चर्चा में रहने वाले नेत्र चिकित्सक डॉ. संजीव कुमार भी मंगलवार को समय से ओपीडी करते नजर आए। अस्पताल पहुंचे मरीजों और तीमारदारों ने व्यवस्थाओं में दिखाई दे रहे बदलाव की सराहना की। साथ साथ उम्मीद जताई है कि अब जिला अस्पताल की कार्यप्रणाली में सुधार देखने को मिलेगा। बताया जाता है कि पूर्व में अस्पताल की व्यवस्थाओं को लेकर कई बार लापरवाही के आरोप सामने आए थे। उस दौरान तत्कालीन सीएमएस के स्वास्थ्य कारणों का हवाला दिया जाता रहा। अस्पताल परिसर में यह चर्चा कई बार सुनने को मिली कि वह सीएमएस पद से कार्यमुक्त होना चाहते थे। फिलहाल नवागत सीएमएस की सक्रियता के बाद अस्पताल में अनुशासन और व्यवस्थाओं को लेकर नई उम्मीद जगी है।

महामंडलेश्वर के आगमन पर स्वागत सम्मान किया

पाटन, उन्नाव। 1008 महामंडलेश्वर करौली शंकर दास जी महाराज के जनपद उन्नाव व भगवंत नगर क्षेत्र में प्रथम आगमन पर उनके भक्तों द्वारा फूल मालाओं व अंग वस्त्र भेंट कर स्वागत सम्मान किया गया। मंगलवार को महामंडलेश्वर करौली शंकर दास जी महाराज का भगवंत नगर विधान क्षेत्र के उन्नाव रायबरेली एनएच मार्ग पर कस्बा पाटन में काफिले के साथ आए सरकार का फूल मालाओं व प्रतीक चिन्ह भेंट कर भव्य स्वागत सम्मान किया गया। जहां से करौली सरकार अपने भक्त साथियों के साथ ग्राम महेश खेड़ा स्थित निर्माणाधीन आश्रम में पहुंचकर लोगों से मिले जहां बड़ी संख्या में लोगों ने पहुंचकर सरकार का आशीर्वाद प्राप्त किया जो आशीर्वाद सम्मान, सकारात्मक उर्जा से भर गया और इस अवसर का लाभ लिया। स्वागत सम्मान के क्रम में समाजसेवी सूरज सिंह चैहान व शिवबीर सिंह उर्फ वीरू व उनके साथियों द्वारा गदा व प्रतीक चिन्ह भेंट कर स्वागत सम्मान किया गया। करौली सरकार ने सनातन धर्म के संबंध में चर्चा कर मार्गदर्शन किया तथा निमार्णाधीन आश्रम का निरीक्षण कर जायजा लिया। इस मौके पर करौली सरकार के प्रतिनिधि संजय सिंह, दुर्गेश सिंह, सुरेश कुमार मिश्रा, पिंटू प्रधान, माधव सिंह, शगुन, आशुतोष, राम राम प्रताप सिंह, रवी सिंह, थाना प्रभारी बारासगवर धर्मेंद्र नाथ मिश्रा सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

तहसील स्तरीय क्रिकेट ट्रायल में सफल खिलाड़ियों की 16 सदस्यीय टीम घोषित

मौरावां, उन्नाव। क्षेत्र के मेला मौदान में आयोजित तहसील स्तरीय क्रिकेट ट्रायल के बाद चयनित पुरवा तहसील के खिलाड़ियों की 16 सदस्यीय टीम की घोषणा कर दी गई है। यह ट्रायल 3 मई को मौरावां के ऐतिहासिक मेला मैदान में आयोजित किया गया था। डिस्ट्रिक्ट क्रिकेट एसोसिएशन के महामंत्री पी. के. मिश्रा की देखरेख में आयोजित इस ट्रायल में बड़ी संख्या में पुरवा, असोहा व हिलौली विकास खंड क्षेत्रों के खिलाड़ियों ने प्रतिभाग किया था। यूपीसीए डेवलपमेंट कमेटी के चेयरमैन अरविंद श्रीवास्तव कमल के निर्देशानुसार एवं डीसीए उन्नाव के संयुक्त सचिव राजेश चैधरी के विशेष प्रयासों से पहले खिलाड़ियों का ब्लॉक स्तर पर पंजीकरण कराया गया था, जिसके बाद चयन प्रक्रिया सम्पन्न हुई। ट्रायल के दौरान खिलाड़ियों की बल्लेबाजी, गेंदबाजी और कीपिंग और फील्डिंग क्षमता का परीक्षण किया गया। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को 16 सदस्यीय टीम में स्थान दिया गया। चयनित खिलाड़ियों की घोषणा संयुक्त सचिव राजेश चैधरी ने की। चयनित खिलाड़ियों में फहद अली, हर्षेन्द्र, श्लोक, अनिरुद्ध सिंह, विशाल नायक, अनुराग, आयुष रावत, तुषार, शिवांशु मिश्रा, आर्यन पटेल, बीरू यादव, अमन नायक, अभिषेक यादव, गोविंद, विवेक एवं धर्मेंद्र शामिल हैं। संयुक्त सचिव राजेश चैधरी कि बताया कि इस पहल का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र की प्रतिभाओं को मंच प्रदान करना और उन्हें उच्च स्तर की क्रिकेट प्रतियोगिताओं तक पहुंचाना है।

सीएम योगी से इंजी. हरिकिशोर तिवारी ने की मुलाकात

इटावा। राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद के अध्यक्ष इं. हरिकिशोर तिवारी ने प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्य से मुलाकात कर प्रदेश कार्मिकों की समस्याओं के सम्बंध में व्यापक चर्चा करते हुए कर्मचारी संगठनों और मुख्य सचिव, अपर मुख्य सचिव कार्मिक स्तर पर तमाम आदेशों के बावजूद बैठक न होने का पत्र सौंपा। इस दौरान उन्होंने बताया कि तत्कालीन अपर मुख्य सचिव देवेश चतुर्वेदी के दिल्ली जाने के बाद अब तक किसी भी तरह की बैठक न होने के कारण छोटी छोटी समस्याओं का निदान नही हो पा रहा है। उन्होने कर्मचारी संगठनों की समस्याओं से सम्बंधित पत्र सौपते हुए मुख्यमंत्री जी से आग्रह किया कि अतिशीघ्र शासनादेश के माध्यम से कराने का अनुरोध किया गया। बैठक में पं. दीनदयाल उपाध्याय कैसलेश योजना 2016 में तमाम आन्दोलनों और एनेक्सी घेराव आदि के बाद नियमावलल बनाई गई थी। जो आज तक की सबसे अच्छी नियमावाली है। इसे तोड़ मरोड़ कर आयुष्मान योजना से जोड़कर वर्ष में मात्र 5.00 लाख रुपए तक के इलाज को सीमित कर दिया गया है। जबकि यह गम्भीर रोगों जैसे कैंसर, ट्रान्सप्लान्ट, ब्रेन हेमरेज, घुटना प्रत्यारोपण, लीवर आदि का अनलिमिटेड इलाज हेतु योजना बनाई गई थी। इसका ही पालना यिका जाना चाहिए, उसे ही लागू किये जाने का अनुरोध मुख्यमंत्री से किया।

100 दिवसीय सघन टीबी खोज अभियान शुरू

इटावा। मुख्य चिकित्सा अधिकारी एवं जिला क्षय रोग अधिकारी के दिशा निर्देशन में 100 दिवसीय सघन टीबी खोज अभियान के अंतर्गत हिंदुस्तान लेटैक्स फैमिली प्लैनिंग प्रमोशन ट्रस्ट के द्वारा बढपुरा विकासखंड के ग्राम बुलकीपुर लोहन्ना में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। इस स्वास्थ्य शिविर में हैंड हैंडल एक्स-रे मशीन से संभावित टीबी लोगो की स्क्रीनिंग और एक्स-रे किए गए। जिला समन्वयक रविंद्र सिंह ने बताया कि आज इस कैंप के माध्यम से 122 लोगों की स्क्रीनिंग की गई जिसमें 91 एक्स-रे हैंड हैन्डिल मशीन से किए गए और संभावित लोगों के बलगम एकत्र कर जांच के लिए भेजे गए जांच में टीबी की पुष्टि होने पर उन्हें सरकारी इलाज दिया जाएगा। कैंप का निरीक्षण करने के पहुंचे जिला पीपीएम को ऑर्डिनेटर निर्मल सिंह ने स्वास्थ्य शिविर को सफलता के लिए जनभागीदारी को बढ़ाने के लिए ग्रामीणों को टीबी के लक्षणों, उपचार और बचाव आदि के लिए जागरूक किया। उन्होंने संभावित टीबी के लक्षणों वाले व्यक्तियों को कैंप में पहुंचकर एक्स-रे कराने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि टीबी एक संक्रामक रोग है यह हवा से माध्यम से एक से दूसरे व्यक्तियों में फैला जाता है। लक्षण दिखने पर स्वास्थ्य केंद्र पर संपर्क करें। टीबी की सभी जांचें और उपचार पूणता निशुल्क किया जाता है। बैठक में सीएचओ अनिल कुमार, एएनएम प्रियंका यादव, आशा संगिनी शैलेश मिश्रा, आशा देवी, राधा देवी, निर्मला देवी, आंगनबाड़ी कार्यकत्री आशा देवी, कम्युनिटी वॉलिंटियर निशांत कुमार, टोनी भारती, एक्सरे टेक्नीशियन अनूप कुमार, सूरज कुमार एवं रविकांत आदि लोग उपस्थित रहे।

नकली नोट देकर व्यापारियों को ठगा

ऊसराहार, इटावा। थाना क्षेत्र में अचानक जाली नोटों का कारोबार करने वाले असामाजिक तत्व सक्रिय हो गए हैं। ताजा मामला बाजार में 500 रुपये के नकली नोट खपाए जाने का है, जिससे स्थानीय व्यापारियों और आम जनता में भय का माहौल है। सोमवार की शाम सात बजे लगभग ऊसराहार तिराहे के समीप एक वायक सवार पहुचा उसने वायक को एक स्थान पर खडा कर दिया सबसे पहले ठेले पर केला बेंच रहे अनिल गुप्ता के पास पहुचे इस युवक ने पचास रूपए के केले लिए और पांच सौ का नोट दिया, बदले मे साढे चार सौ रूपए और केले लेकर हैलमेट पहने युवक आगे बढ गया पचास मीटर दूर ठेले पर फल बेंच रहे रामपूत से युवक ने नब्बे रूपए के आम लिए पांच सौ का नोट दिया बदले मे शेष पैसे वापस लिए और आगे बढ गया फिर पचास मीटर आगे फल बेंच रहे सुरेश बाथम से उसने पचास रूपए के फल लिए और वापसी मे शेष पैसे लिए आगे बढ गया। इसी तरह ठेला पर फल बेंच रहे शब्बीर प्रेम पप्पू गुप्ता रामदास सहित नौ लोगो को अपना शिकार बनाया। जब इन दुकानदारों ने शाम को अपने नोट गिने तो पांच सौ का नोट नकली था।

रेलयात्री कृपया ध्यान दें!

महत्वपूर्ण जानकारी

ग्रीष्मकालीन विशेष रेलगाड़ियों में वृद्धि-2026

रेलयात्रियों के सुविधाजनक आवागमन हेतु पूर्व घोषित ग्रीष्मकालीन विशेष रेलगाड़ियों के साथ-साथ रेलवे द्वारा निम्नलिखित विशेष रेलगाड़ियाँ भी नीचे दी गई समय-सारणी के अनुसार संचालित की जायेंगी :-

07658/07659 हजूर साहिब नान्देड-शकूर बस्ती-हजूर साहिब नान्देड ग्रीष्मकालीन विशेष रेलगाड़ी — 02 फेरे

रेलगाड़ी सं. 07658		स्टेशन	रेलगाड़ी सं. 07659	
आगमन	प्रस्थान		आगमन	प्रस्थान
---	23:20	हजूर साहिब नान्देड	09:00	---
10:15	---	शकूर बस्ती	---	22:30

चलने के दिन : 07658 हजूर साहिब नान्देड से दिनांक 21.05.2026 (वीरवार) को तथा 07659 शकूर बस्ती से दिनांक 24.05.2026 (रविवार) को।
स्थान : शयनयान एवं सामान्य।
ठहराव : किनवट, पिंपल खुटी, लिंगटी, वणी, नागपुर, भोपाल, वीरांगना लक्ष्मीबाई झाँसी जं. एवं आगरा छावनी जं. स्टेशन

04823/04824 जोधपुर जं.-मऊ जं.-जोधपुर जं. मेल एक्सप्रेस विशेष रेलगाड़ी (साप्ताहिक) — 16 फेरे

रेलगाड़ी सं. 04823		स्टेशन	रेलगाड़ी सं. 04824	
आगमन	प्रस्थान		आगमन	प्रस्थान
---	17:00	जोधपुर जं.	08:40	---
13:25	13:35	लखनऊ जं.	11:35	11:45
23:20	---	मऊ जं.	---	04:00

चलने के दिन : 04823 जोधपुर जं. से प्रत्येक रविवार को दिनांक 24.05.2026 से दिनांक 12.07.2026 तक तथा 04824 मऊ जं. से प्रत्येक मंगलवार को दिनांक 26.05.2026 से दिनांक 14.07.2026 तक।
स्थान : 2 टियर वाता., 3 टियर वाता., शयनयान एवं सामान्य।
ठहराव : पीपाड़ रोड जं., गोटन, मेड़ता रोड जं., रेन, डेगाना जं., मकराना जं., कुचामन सिटी, नावा सिटी, फुलेरा, जयपुर जं., बांदीकुई जं., मण्डावर महुआ रोड, खेड़ली, नदबई, भरतपुर जं., मथुरा जं., हाथरस सिटी, कासगंज, फ़र्रुखाबाद, कन्नौज, कानपुर सेंट्रल, लखनऊ जं., अयोध्या छावनी, अयोध्या धाम जं., शाहगंज जं., खोरासन रोड, आजमगढ़ एवं मुहम्मदाबाद स्टेशन

04829/04830 जोधपुर जं.-गोरखपुर जं.-जोधपुर जं. मेल एक्सप्रेस विशेष रेलगाड़ी (साप्ताहिक) — 16 फेरे

रेलगाड़ी सं. 04829		स्टेशन	रेलगाड़ी सं. 04830	
आगमन	प्रस्थान		आगमन	प्रस्थान
---	16:15	जोधपुर जं.	05:30	---
04:30	04:45	दिल्ली जं.	14:00	14:10
20:50	---	गोरखपुर जं.	---	23:25

चलने के दिन : 04829 जोधपुर जं. से प्रत्येक वीरवार को दिनांक 21.05.2026 से दिनांक 09.07.2026 तक तथा 04830 गोरखपुर जं. से प्रत्येक शुक्रवार को दिनांक 22.05.2026 से दिनांक 10.07.2026 तक।
स्थान : 2 टियर वाता., 3 टियर वाता., शयनयान एवं सामान्य।
ठहराव : मेड़ता रोड जं., डेगाना जं., छोटी खाटू, डीडवाना, लाडनूं, सुजानगढ़, रतनगढ़ जं., चुरू, सादुलपुर जं., लोहारु, महेंद्रगढ़, रेवाड़ी जं., गुड़गांव, दिल्ली छावनी, दिल्ली जं., गाज़ियाबाद, मुरादाबाद, बरेली (एनआर), लखनऊ जं., अयोध्या छावनी, अयोध्या धाम जं., मनकापुर जं., बस्ती एवं खलीलाबाद स्टेशन

09117/09118 बान्द्रा (ट.)-शकूर बस्ती-बान्द्रा (ट.) ग्रीष्मकालीन विशेष रेलगाड़ी — 02 फेरे

रेलगाड़ी सं. 09117		स्टेशन	रेलगाड़ी सं. 09118	
आगमन	प्रस्थान		आगमन	प्रस्थान
---	16:30	बान्द्रा (ट.)	06:00	---
15:05	---	शकूर बस्ती	---	00:30

चलने के दिन : 09117 बान्द्रा (ट.) से दिनांक 22.05.2026 (शुक्रवार) को तथा 09118 शकूर बस्ती से दिनांक 25.05.2026 (सोमवार) को।
स्थान : शयनयान एवं सामान्य।
ठहराव : बोईसर, दहाणू रोड, सूरत, वडोदरा जं., दाहोद, रतलाम जं. एवं कोटा जं. स्टेशन

09121/09122 उधना जं.-हज़रत निज़ामुद्दीन-उधना जं. अनारक्षित विशेष रेलगाड़ी — 02 फेरे

रेलगाड़ी सं. 09121		स्टेशन	रेलगाड़ी सं. 09122	
आगमन	प्रस्थान		आगमन	प्रस्थान
---	18:00	उधना जं.	00:45	---
00:15	---	हज़रत निज़ामुद्दीन	---	21:20

चलने के दिन : 09121 उधना जं. से दिनांक 22.05.2026 (शुक्रवार) को तथा 09122 हज़रत निज़ामुद्दीन से दिनांक 24.05.2026 (रविवार) को।
स्थान : शयनयान एवं सामान्य।
ठहराव : नवापुर, चिंचपाडा, नंदुरबार, भुसावल जं., इटारसी जं., भोपाल जं., वीरांगना लक्ष्मीबाई झाँसी जं. एवं आगरा छावनी स्टेशन

04227/04228 वाराणसी जं.-चण्डीगढ़ जं.-वाराणसी जं. आरक्षित विशेष एक्सप्रेस रेलगाड़ी (सप्ताह में दो दिन) — 36 फेरे

रेलगाड़ी सं. 04227		स्टेशन	रेलगाड़ी सं. 04228	
आगमन	प्रस्थान		आगमन	प्रस्थान
---	11:05	वाराणसी जं.	00:55	---
04:20	---	चण्डीगढ़ जं.	---	06:00

चलने के दिन : 04227 वाराणसी जं. से प्रत्येक वीरवार एवं रविवार को दिनांक 14.05.2026 से दिनांक 12.07.2026 तक तथा 04228 चण्डीगढ़ जं. से प्रत्येक शुक्रवार एवं सोमवार को दिनांक 15.05.2026 से दिनांक 13.07.2026 तक।
स्थान : 2 टियर वाता. एवं 3 टियर वाता.।
ठहराव : माँ बेल्हा देवी धाम प्रतापगढ़ जं., रायबरेली जं., लखनऊ, शाहजहाँपुर, बरेली, मुरादाबाद, रूड़की, सहारनपुर एवं अम्बाला छावनी जं. स्टेशन।

07662/07663 काजीपेट जं.-हज़रत निज़ामुद्दीन-काजीपेट जं. ग्रीष्मकालीन विशेष रेलगाड़ी — 02 फेरे

रेलगाड़ी सं. 07662		स्टेशन	रेलगाड़ी सं. 07663	
आगमन	प्रस्थान		आगमन	प्रस्थान
---	13:10	काजीपेट जं.	11:00	---
23:40	---	हज़रत निज़ामुद्दीन	---	03:40

चलने के दिन : 07662 काजीपेट जं. से दिनांक 22.05.2026 (शुक्रवार) को तथा 07663 हज़रत निज़ामुद्दीन से दिनांक 25.05.2026 (सोमवार) को।
स्थान : शयनयान एवं सामान्य।
ठहराव : बल्हारशाह, चंद्रपुर, सेवाग्राम, नागपुर, भोपाल, वीरांगना लक्ष्मीबाई झाँसी जं. एवं आगरा छावनी स्टेशन

07664/07665 विजयवाड़ा जं.-फरीदाबाद-विजयवाड़ा जं. ग्रीष्मकालीन विशेष रेलगाड़ी — 02 फेरे

रेलगाड़ी सं. 07664		स्टेशन	रेलगाड़ी सं. 07665	
आगमन	प्रस्थान		आगमन	प्रस्थान
---	05:10	विजयवाड़ा जं.	13:00	---
14:50	---	फरीदाबाद	---	01:10

चलने के दिन : 07664 विजयवाड़ा जं. से दिनांक 22.05.2026 (शुक्रवार) को तथा 07665 फरीदाबाद से दिनांक 25.05.2026 (सोमवार) को।
स्थान : शयनयान एवं सामान्य।
ठहराव : डोर्नकल जं., महबुबाबाद, वरंगल, बल्हारशाह, नागपुर, भोपाल, वीरांगना लक्ष्मीबाई झाँसी जं. एवं आगरा छावनी स्टेशन।

05579/05580 पूर्णिया कोर्ट-आनन्द विहार ट.-पूर्णिया कोर्ट विशेष रेलगाड़ी (सप्ताह में दो दिन) — 34 फेरे

रेलगाड़ी सं. 05579		स्टेशन	रेलगाड़ी सं. 05580	
आगमन	प्रस्थान		आगमन	प्रस्थान
---	19:00	पूर्णिया कोर्ट	11:30	---
01:05	---	आनन्द विहार ट.	---	05:15

चलने के दिन : 05579 पूर्णिया कोर्ट से प्रत्येक शुक्रवार एवं रविवार को दिनांक 12.07.2026 तक (22.05.2026 को छोड़कर) तथा 05580 आनन्द विहार ट. से प्रत्येक रविवार एवं मंगलवार को दिनांक 14.07.2026 तक (24.05.2026 को छोड़कर)।
स्थान : 3 टियर वाता. (इकॉनोमी), शयनयान एवं सामान्य।
ठहराव : बानमनखी जं., मुरलीगंज, दौरम मधेपुरा, सहरसा जं., गढ़ बरुआरी, सुपौल, न्यू झाझा जं., निर्मली, घोघरडीहा, झंझारपुर जं., सकरी जं., शिशो, जनकपुर रोड, सीतामढ़ी जं., बैरगनियां, रक्सौल जं., नरकटियागंज जं., बगहा, कप्तानगंज जं., गोरखपुर जं., बस्ती, गोंडा जं., सीतापुर जं., शाहजहांपुर, बरेली, मुरादाबाद जं., हापुड़ जं. एवं गाजियाबाद जं. स्टेशन

रेलमदद हेल्पलाइन नं. 139
रेलमदद वेबसाइट देखें :- www.railmadad.indianrailways.gov.in
रेलमदद ऐप डाउनलोड करें

05575/05576 सहरसा जं.-आनन्द विहार ट.-सहरसा जं. विशेष रेलगाड़ी (साप्ताहिक) — 18 फेरे

रेलगाड़ी सं. 05575		स्टेशन	रेलगाड़ी सं. 05576	
आगमन	प्रस्थान		आगमन	प्रस्थान
---	21:00	सहरसा जं.	09:05	---
01:05	---	आनन्द विहार ट.	---	05:15

चलने के दिन : 05575 सहरसा जं. से प्रत्येक मंगलवार को दिनांक 14.07.2026 तक तथा 05576 आनन्द विहार ट. से प्रत्येक वीरवार को दिनांक 16.07.2026 तक।
स्थान : 3 टियर वाता. (इकॉनोमी), शयनयान एवं सामान्य।
ठहराव : गढ़ बरुआरी, सुपौल, न्यू झाझा जं., निर्मली, घोघरडीहा, झंझारपुर जं., सकरी जं., शिशो, जनकपुर रोड, सीतामढ़ी जं., बैरगनियां, रक्सौल जं., नरकटियागंज जं., बगहा, कप्तानगंज जं., गोरखपुर जं., बस्ती, गोंडा जं., सीतापुर जं., शाहजहांपुर, बरेली, मुरादाबाद जं., हापुड़ जं. एवं गाजियाबाद जं. स्टेशन

04811/04812 बाड़मेर-हरिद्वार जं.-बाड़मेर विशेष रेलगाड़ी (सप्ताह में दो दिन) — 38 फेरे

रेलगाड़ी सं. 04811		स्टेशन	रेलगाड़ी सं. 04812	
आगमन	प्रस्थान		आगमन	प्रस्थान
---	04:15	बाड़मेर	07:30	---
04:10	---	हरिद्वार जं.	---	05:15

चलने के दिन : 04811 बाड़मेर से प्रत्येक सोमवार एवं वीरवार को दिनांक 16.07.2026 तक तथा 04812 हरिद्वार जं. से प्रत्येक मंगलवार एवं शुक्रवार को दिनांक 17.07.2026 तक।
स्थान : 2 टियर वाता., 3 टियर वाता., शयनयान एवं सामान्य।
ठहराव : बायतु, बालोतरा, समदड़ी जं., दुंदाड़ा, लूनी जं., जोधपुर जं., गोटन, मेड़ता रोड जं., नागौर, नोखा, बीकानेर जं., लालगढ़ जं., लूनकरनसर, अरजनसर, राजियासर, सूरतगढ़, पीली बंगा, हनुमानगढ़ जं., संगरिया, मंडी डबवाली, बठिण्डा जं., धुरी जं., अम्बाला छावनी जं. एवं सहारनपुर स्टेशन

05758/05757 न्यू जलपाईगुड़ी जं.-नई दिल्ली-न्यू जलपाईगुड़ी जं. ग्रीष्मकालीन विशेष रेलगाड़ी — 02 फेरे

रेलगाड़ी सं. 05758		स्टेशन	रेलगाड़ी सं. 05757	
आगमन	प्रस्थान		आगमन	प्रस्थान
---	15:10	न्यू जलपाईगुड़ी जं.	08:30	---
03:00	---	नई दिल्ली	---	01:15

चलने के दिन : 05758 न्यू जलपाईगुड़ी जं. से दिनांक 22.05.2026 (शुक्रवार) को तथा 05757 नई दिल्ली से दिनांक 25.05.2026 (सोमवार) को।
स्थान : शयनयान एवं सामान्य।
ठहराव : किशनगंज, कटिहार जं., खगड़िया जं., बरौनी जं., समस्तीपुर जं., मुजफ्फरपुर जं., नरकटियागंज जं., गोरखपुर जं., गोमती नगर और कानपुर सेंट्रल स्टेशन।

05760/05759 न्यू जलपाईगुड़ी जं.-आनन्द विहार ट.-न्यू जलपाईगुड़ी जं. ग्रीष्मकालीन विशेष रेलगाड़ी — 02 फेरे

रेलगाड़ी सं. 05760		स्टेशन	रेलगाड़ी सं. 05759	
आगमन	प्रस्थान		आगमन	प्रस्थान
---	12:15	न्यू जलपाईगुड़ी जं.	07:15	---
00:20	---	आनन्द विहार ट.	---	02:40

चलने के दिन : 05760 न्यू जलपाईगुड़ी जं. से दिनांक 22.05.2026 (शुक्रवार) को तथा 05759 आनन्द विहार ट. से दिनांक 25.05.2026 (सोमवार) को।
स्थान : शयनयान एवं सामान्य।
ठहराव : नक्सलबाड़ी, अलुआबाड़ी रोड जं., डालखोला, बारसोई जं., कटिहार जं., बरौनी जं., पाटलिपुत्र जं., पं. दीन दयाल उपाध्याय जं., प्रयागराज जं. एवं गोविन्दपुरी स्टेशन।

05664/05663 अगरतला-आनन्द विहार ट.-अगरतला ग्रीष्मकालीन विशेष रेलगाड़ी — 02 फेरे

रेलगाड़ी सं. 05664		स्टेशन	रेलगाड़ी सं. 05663	
आगमन	प्रस्थान		आगमन	प्रस्थान
---	15:00	अगरतला	08:00	---
00:30	---	आनन्द विहार ट.	---	03:00

चलने के दिन : 05664 अगरतला से दिनांक 20.05.2026 (बुधवार) को तथा 05663 आनन्द विहार ट. से दिनांक 25.05.2026 (सोमवार) को।
स्थान : शयनयान एवं सामान्य।
ठहराव : तेलियामुरा, आमबासा, कुमारघाट, धर्मनगर, बदरपुर जं., गुवाहाटी, न्यू कोच बिहार, न्यू जलपाईगुड़ी जं., कटिहार जं., बरौनी जं., पाटलिपुत्र जं., पं. दीन दयाल उपाध्याय जं., प्रयागराज जं. एवं गोविन्दपुरी स्टेशन।

05666/05665 शिलचर-दिल्ली जं.-शिलचर ग्रीष्मकालीन विशेष रेलगाड़ी — 02 फेरे

रेलगाड़ी सं. 05666		स्टेशन	रेलगाड़ी सं. 05665	
आगमन	प्रस्थान		आगमन	प्रस्थान
---	20:30	शिलचर	04:45	---
00:50	---	दिल्ली जं.	---	02:45

चलने के दिन : 05666 शिलचर से दिनांक 21.05.2026 (वीरवार) को तथा 05665 दिल्ली जं. से दिनांक 25.05.2026 (सोमवार) को।
स्थान : शयनयान एवं सामान्य।
ठहराव : बदरपुर जं., न्यू हाफलंग, माईबांग, पाथरखोला, होजाई, जागी रोड, गुवाहाटी, न्यू कोच बिहार, न्यू जलपाईगुड़ी जं., कटिहार जं., बरौनी जं., पाटलिपुत्र जं., पं. दीन दयाल उपाध्याय जं., प्रयागराज जं. एवं गोविन्दपुरी स्टेशन।

05924/05923 न्यू तिनसुकिया जं.-नई दिल्ली-न्यू तिनसुकिया जं. ग्रीष्मकालीन विशेष रेलगाड़ी — 02 फेरे

रेलगाड़ी सं. 05924		स्टेशन	रेलगाड़ी सं. 05923	
आगमन	प्रस्थान		आगमन	प्रस्थान
---	12:00	न्यू तिनसुकिया जं.	04:00	---
20:40	---	नई दिल्ली	---	02:50

चलने के दिन : 05924 न्यू तिनसुकिया जं. से दिनांक 21.05.2026 (वीरवार) को तथा 05923 नई दिल्ली से दिनांक 25.05.2026 (सोमवार) को।
स्थान : शयनयान एवं सामान्य।
ठहराव : शिमलगुड़ी जं., मरियानी जं., फरकाटिंग जं., बोकाजान, डिमापुर, दिफू, लामडिंग जं., गुवाहाटी, न्यू कोच बिहार, न्यू जलपाईगुड़ी जं., कटिहार जं., बरौनी जं., पाटलिपुत्र जं., पं. दीन दयाल उपाध्याय जं., प्रयागराज जं. एवं गोविन्दपुरी स्टेशन।

05926/05925 डिब्रुगढ़-नई दिल्ली-डिब्रुगढ़ ग्रीष्मकालीन विशेष रेलगाड़ी — 02 फेरे

रेलगाड़ी सं. 05926		स्टेशन	रेलगाड़ी सं. 05925	
आगमन	प्रस्थान		आगमन	प्रस्थान
---	18:00	डिब्रुगढ़	00:15	---
01:40	---	नई दिल्ली	---	03:10

चलने के दिन : 05926 डिब्रुगढ़ से दिनांक 21.05.2026 (वीरवार) को तथा 05925 नई दिल्ली से दिनांक 25.05.2026 (सोमवार) को।
स्थान : शयनयान एवं सामान्य।
ठहराव : श्रीपानी, उत्तर लखिमपुर, हारमती जं., रंगापाड़ा नार्थ जं., रंगिया जं., न्यू कोच बिहार, न्यू जलपाईगुड़ी जं., कटिहार जं., बरौनी जं., पाटलिपुत्र जं., पं. दीन दयाल उपाध्याय जं., प्रयागराज जं. एवं गोविन्दपुरी स्टेशन।

05832/05831 नाहरलगुन-नई दिल्ली-नाहरलगुन ग्रीष्मकालीन विशेष रेलगाड़ी — 02 फेरे

रेलगाड़ी सं. 05832		स्टेशन	रेलगाड़ी सं. 05831	
आगमन	प्रस्थान		आगमन	प्रस्थान
---	22:15	नाहरलगुन	22:15	---
18:30	---	नई दिल्ली	---	03:50

चलने के दिन : 05832 नाहरलगुन से दिनांक 21.05.2026 (वीरवार) को तथा 05831 नई दिल्ली से दिनांक 25.05.2026 (सोमवार) को।
स्थान : शयनयान एवं सामान्य।
ठहराव : हारमती जं., बिश्वनाथ चारआली, रंगापाड़ा नार्थ जं., ढेकियाजुली रोड, उदालगुड़ी, न्यू बंगाईगाँव जं., गोसाईगाँव हाट, न्यू कोच बिहार जं., न्यू जलपाईगुड़ी जं., कटिहार जं., बरौनी जं., पाटलिपुत्र जं., पं. दीन दयाल उपाध्याय जं., प्रयागराज जं. एवं गोविन्दपुरी स्टेशन।

उपरोक्त रेलगाड़ियों के मार्ग में आने वाले ठहरावों और समय-सारणी के लिए कृपया रेलमदद हेल्पलाइन नं. 139 डायल करें अथवा रेलगाड़ी पूछताछ वेबसाइट www.enquiry.indianrail.gov.in अथवा NTES ऐप देखें।

पर हमें फॉलो करें

उत्तर रेलवे
सदैव आपकी सेवा में
हमें www.nr.indianrailways.gov.in पर मिलें

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

संक्षेप

युवा संकल्प सम्मेलन में सम्मानित होंगे मेधावी छात्र-छात्राएं

गोला गोकर्णनाथ, खीरी। वीओएल। शाहबुद्दीनपुर स्थित रानी लक्ष्मीबाई इंटर कॉलेज में 16 मई को युवा संकल्प बौद्धिक सम्मेलन एवं युवा प्रेरणा मेधा सम्मान समारोह आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम में क्षेत्र के मेधावी छात्र-छात्राओं और युवाओं को सम्मानित किया जाएगा। समारोह शनिवार शाम चार बजे शुरू होगा। आयोजन में सांसद उत्कर्ष वर्मा और धौरहरा सांसद आनंद भदौरिया मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगे। वहीं प्रतापगढ़ सांसद डॉ. एसपी सिंह मुख्य वक्ता के रूप में युवाओं को संबोधित करेंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता समाजवादी पार्टी के जिलाध्यक्ष रामपाल यादव करेंगे। कार्यक्रम की संयोजक पूर्व सदस्य विधान परिषद कान्ति सिंह हैं। आयोजन समिति में जिला पंचायत सदस्य संदीप वर्मा और जिला प्रतिनिधि संजय वर्मा शामिल हैं। आयोजकों ने क्षेत्र के लोगों से अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर कार्यक्रम को सफल बनाने और मेधावी युवाओं का उत्साहवर्धन करने की अपील की है।

घायल करने की तहरीर पर रिपोर्ट दर्ज

तिकुनियां खीरी। कस्बा निवासी हंसराज गर्ग ने दो सप्ताह पूर्व अज्ञात वाहन द्वारा पीछे से जोरदार टक्कर मारकर घायल किए जाने की तहरीर पुलिस को दी है पुलिस ने तहरीर के आधार पर अज्ञात वाहन स्वामी के खिलाफ मुकदमा पंजीकृत कर लिया है कस्बा निवासी हंसराज ने तहरीर में लिखा है कि बीती 29 अप्रैल को देवी मंदिर रोड पर शाम करीब चार बजे किसी अज्ञात वाहन ने पीछे से जोरदार टक्कर मार दी जिसके चलते हंसराज गर्ग के पैर की दो-तीन हड्डियां टूट गई हैं तथा सर में भी गहरी चोट आई है पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर घटना की जांच शुरू कर दी है हंसराज गर्ग ने तहरीर में लिखा है कि कस्बे के कुछ दबंग लोगों से जमीन को लेकर दुश्मनी चल रही है इससे पूर्व भी हंसराज गर्ग पर हमले हो चुके हैं कोतवाली प्रभारी पुष्पराज कुशवाहा ने बताया तहरीर के आधार पर रिपोर्ट दर्ज कर जांच की जा रही है।

हादसे में घायल युवक की मौत

आजमगढ़। फूलपुर थाना क्षेत्र के पलिया अदायी गांव के पास हुए सड़क हादसे में गंभीर रूप से घायल युवक की इलाज के दौरान मौत हो गई। घटना के बाद परिवार में कोहराम मच गया, जबकि पुलिस मामले की जांच में जुट गई है। दीदारगंज थाना क्षेत्र के फत्तेपुर बीबीगंज गांव निवासी नीरज यादव पुत्र स्वर्गीय त्रिभुवन यादव 10 मई की रात करीब 11 बजे मोटरसाइकिल से पालिया बाजार से अपने घर लौट रहे थे। इसी दौरान पलिया अदायी गांव के पास किसी अज्ञात वाहन ने उनकी बाइक में जोरदार टक्कर मार दी। हादसे में नीरज गंभीर रूप से घायल हो गए, जबकि उनकी मोटरसाइकिल भी क्षतिग्रस्त हो गई। परिजनों ने उन्हें तत्काल फूलपुर के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया। हालत नाजुक होने पर डॉक्टरों ने बेहतर इलाज के लिए उन्हें लाइफ लाइन हॉस्पिटल आजमगढ़ रेफर कर दिया। वहां उपचार के दौरान 12 मई की रात करीब 10 बजे उनकी मौत हो गई। मृतक नीरज यादव लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) आजमगढ़ में लिपिक पद पर कार्यरत थे। परिवार में पत्नी नीतू यादव, दो पुत्र आरुष यादव (13) व अनमोल (10) तथा एक पुत्री पीहू हैं।

चकरोड अतिक्रमण पर डीएम का सख्त एक्शन

जिला संवाददाता(vol)

लखीमपुर खीरी। जिले में सार्वजनिक भूमि और चकरोडों पर अवैध कब्जों के खिलाफ प्रशासन ने सख्त रुख अपना लिया है।

डीएम अंजनी कुमार सिंह ने मंगलवार को तहसील धौरहरा की ग्रामसभा जटपुरवा पहुंचकर चकरोड अतिक्रमण प्रकरण की जमीनी हकीकत परखी। राजस्व टीम के साथ मौके पर पहुंचे डीएम ने अभिलेखों और नक्शे का परीक्षण कर अधिकारियों को तत्काल कब्जामुक्त कार्रवाई के निर्देश दिए। डीएम ने साफ कहा कि सार्वजनिक रास्तों पर कब्जा किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा और अभियान चलाकर अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई तेज की जाएगी। गाटा संख्या 2025 में दर्ज सार्वजनिक रास्ते की भूमि पर अवैध कब्जे से जुड़े तीन मामले राजस्व संहिता 2006 की धारा 67(5) के तहत जिला मजिस्ट्रेट न्यायालय में विचाराधीन हैं। सुनवाई के क्रम में डीएम ने मौके पर पहुंचकर अभिलेख और नक्शे का बारीकी से परीक्षण किया तथा राजस्व टीम से वास्तविक स्थिति की जानकारी ली।

निरीक्षण के दौरान डीएम ने ग्रामीणों और शिकायतकर्ताओं से सीधे संवाद कर समस्याएं सुनीं। ग्रामीणों ने बताया कि चकरोड पर कब्जे के चलते आवागमन बाधित हो रहा है और किसानों को खेतों तक पहुंचने में भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है।

मौके पर ही डीएम अंजनी कुमार सिंह ने नायब तहसीलदार को सख्त निर्देश देते हुए कहा कि नक्शे में दर्ज चकरोड को तत्काल कब्जामुक्त कराया जाए और उसकी रिपोर्ट उपलब्ध कराई जाए। उन्होंने साफ शब्दों में कहा कि सार्वजनिक भूमि पर कब्जा किसी भी सूरत में स्वीकार नहीं किया जाएगा। डीएम अंजनी कुमार सिंह ने जिले के सभी राजस्व अधिकारियों को चेतावनी भरे अंदाज में निर्देशित किया कि अभियान चलाकर चकरोड, खलिहान और अन्य सार्वजनिक भूमि पर हुए अतिक्रमणों को चिन्हित कर तत्काल हटवाने की कार्रवाई सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि यह शासन की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल है, इसलिए इसमें किसी प्रकार की ढिलाई या लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

पॉलिटेक्निक कॉलेज में परीक्षाओं के दौरान परिसर में अवैध रूप से पकड़ा गया युवक

मोहम्मदी खीरी। क्षेत्र के राजकीय पॉलिटेक्निक कॉलेज में संचालित परीक्षा के दौरान बाहरी युवक को स्कूल में कार्यरत आउटसोर्सिंग महिला कर्मचारी के साथ सिक्योरिटी इंचार्ज ने कमरे में दबोच लिया और सूचना पर पुलिस के पहुंचते ही जिससे हड़कंप मच गया दोनों को कस्टडी में लेकर पूछताछ कर युवक के माफी मांगने पर छोड़ दिया और उसके दिए गए बयान की जानकारी उच्च अधिकारियों को भेजी गई है।

जानकारी अनुसार कुछ दिनों पहले राजकीय पॉलिटेक्निक कॉलेज में बेश कीमती सागौन के पेड़ों को चोरी से कटकर बिक्री कर देने का मामला उजागर होने पर उच्च अधिकारियों ने मौके पर पहुंचकर अपनी जांच रिपोर्ट में मामला सही पाए जाने पर तत्काल प्रभाव से प्रधानाचार्य प्रवेश वमाको निलंबित कर गैर जनपद के विद्यालय से संबद्ध कर दिया गया था। कुछदिनों के बाद दोबारा अधिकारियों की रहमों करम पर विद्यालय में कुछ दिनों तक दूरी बनाकर दोबारा स्थाई रूप से रहने लगा है आउटसोर्सिंग कर्मचारियों ने सहयोगी महिला कर्मचारी से अवैध संबंधों का आरोप लगाते हुए कर्मचारियों को प्रताड़ित करने का रोना रोया था।

मंगलवार को संचालित परीक्षाओं के दौरान विद्यालय परिसर के अंदर महिला के साथ शाहजहांपुर निवासी मोहम्मद तालिब को शिकायत पर पुलिस ने दबोच लिया पूछताछ के बाद उसने बताया प्रधानाचार्य द्वारा मुझे अनैतिक रूप से विद्यालय में प्रवेश दिलाया गया था और महिला से शादी कराने की बात चल रही है। पुलिस ने आरोपी को माफी मांगने पर छोड़ दिया घटनाक्रम की जानकारी विद्यालय के उच्च अधिकारियों को भेजी गई है।

घाघरा नदी में डूबने से बालक की मौत

धौरहरा खीरी। कोतवाली क्षेत्र की कफारा चौकी अंतर्गत हौकना मटेरा गांव में सोमवार को दर्दनाक हादसे में 10 वर्षीय किशोर की घाघरा नदी में डूबने से मौत हो गई घटना के बाद परिवार में कोहराम मच गया सूचना पर पहुंची कोतवाली पुलिस ने स्थानीय गोताखोरों की मदद से देर शाम शव बरामद कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। जानकारी के मुताबिक हौकना मटेरा निवासी शोभित कुमार पुत्र सुरेश निषाद उम्र 10 वर्ष अपनी मां के साथ घाघरा नदी किनारे लकड़ी बीनने गया था इसी दौरान शोभित को प्यास लगी और वह नदी किनारे पानी पीने पहुंचा बताया जाता है कि पानी पीते समय अचानक उसका पैर फिसल गया और वह गहरे पानी में चला गया मां ने बेटे को बचाने के लिए शोर मचाया लेकिन तब तक शोभित नदी में डूब चुका था घटना की सूचना ग्राम प्रधान बालक राम वर्मा ने पुलिस को दी सूचना मिलते ही कफारा चौकी प्रभारी रुद्र प्रकाश पांडेय मौके पर पहुंचे और स्थानीय गोताखोरों की मदद से बालक की तलाश शुरू कराई। काफी प्रयासों के बाद सोमवार देर शाम शव बरामद कर लिया गया मौके पर पहुंचे लेखपाल गणेश प्रसाद गुप्ता ने भी घटना की जानकारी जुटाई। पुलिस ने पंचनामा भरकर शव को पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल भेज दिया। पोस्टमार्टम के बाद परिजनों ने गमगीन माहौल में बालक का अंतिम संस्कार कर दिया घटना से पूरे गांव में शोक की लहर दौड़ गई।

मोहम्मदी के वीएस फिटनेस के खिलाड़ी हुए विजेता

मोहम्मदी खीरी। एएस वारियर्स की तरफ से लखीमपुर में हुई पॉवरलिफ्टिंग प्रतियोगिता मोहम्मदी का खिलाड़ी बना विजेता इस प्रतियोगिता में जिसमें लखनऊ, बहराइच, सीतापुर, लखीमपुर, बरेली, शाहजहाँपुर जिला सहित कई जगह से आये खिलाड़ियों ने भाग लिया। जिसमें मोहम्मदी के वीएस फिटनेस जिम के ट्रेनर विशभ मिश्रा अपने कैटगरी मे 215 किलो भार उठाकर दूसरा स्थान प्राप्त किया जिन्होंने मोहम्मदी का नाम रोशन किया।

कैंची धाम में वाहन पलटने से मोहम्मदी के युवक की मौत

मोहम्मदी खीरी। कस्बा के निवासी एक युवक की कैंची धाम जाते समय वाहन पलटने से कई लोग नीचे दब गए जिसमें मोहम्मदी के एक युवक की दर्दनाक मौत हो गई है। सूचना पर परिजन शव लेने के लिए रवाना हो गए हैं। जानकारी अनुसार मोहल्ला पूर्वी लखपेड़ा निवासी कृष्ण कुमार बाजपेई एड का पुत्र अनुराग बाजपेई 35 वर्षीय हरिद्वार कंपनी में कार्यरत था। जहां से टूरिस्ट के वाहन में सवार होकर कैंची धाम दर्शन के लिए निकाला था अचानक अनियंत्रित होकर वाहन पलट जाने से कई लोग गंभीर रूप से घायल और कुछ लोगों की मौत हो जाने की जानकारी मिली है जिसमें मोहम्मदी के अधिवक्ता के पुत्र अनुराग बाजपेई की मौत की पुष्टि होने पर घर पर कोहराम मच गया परिजन पुत्र का शव लेने के लिए निकल चुके हैं। मृतक के पिता कृष्ण कुमार, मां उषा बाजपेई समेत भाइयों का रो-रो कर बुरा हाल है।

वन स्टॉप सेंटर में किशोरी ने की आत्महत्या

कौशांबी। जिले के वन स्टॉप सेंटर (बालिका संरक्षण गृह) में एक किशोरी ने कथित रूप से आत्महत्या कर ली। पुलिस सूत्रों ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि प्रेम प्रसंग के चलते किशोरी अपने प्रेमी के साथ चली गई थी और इसी कारण से माता-पिता ने उसे साथ रखने से इनकार कर दिया था। उसके बाद उसे वन स्टॉप सेंटर में रखा गया था। पुलिस सूत्रों ने मंगलवार को बताया कि जिले के सखी वन स्टाप सेंटर में 17 वर्षीय एक लड़की ने सोमवार रात शौचालय में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली।

उन्होंने बताया कि किशोरी पड़ोस के एक युवक के साथ प्रेम प्रसंग के चलते घर से चली गई थी, जिसके बाद उसके माता-पिता ने उसे अपने साथ रखने से इनकार कर दिया था और इसी वजह से उसे सखी वन स्टॉप सेंटर में रखा गया था। सूत्रों के अनुसार किशोरी द्वारा फांसी लगाकर आत्महत्या कर लेने की सूचना मिलने पर बाल कल्याण समिति (सीडब्ल्यूसी) के अध्यक्ष कमलेश चंद्र और पुलिस मौके पर पहुंचे। चंद्र ने बताया कि किशोरी को पुलिस लेकर आयी थी जिसे मेडिकल परीक्षण के बाद परिजनों को सौंपा जाना था लेकिन उसके माता-पिता ने उसे अपने साथ रखने से इनकार करते हुए इस सिलसिले में एक शपथपत्र दिया था, इसीलिए उसे गत चार मई को सखी वन स्टाप सेंटर में रखा गया था। किशोरी को आज प्रयागराज के नारी निकेतन में भेजा जाना था लेकिन उससे पहले ही उसने आत्महत्या कर ली। पुलिस क्षेत्राधिकारी शिवांक सिंह ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम के लिये ले जाया गया है और मामले की जांच की जा रही है।

सड़क किनारे पड़े घूरों और बठियों पर चला अभियान

पिपरिया धनी, खीरी। वीओएल। रेहरिया पुलिस चौकी क्षेत्र के ग्रंट साहबगंज स्थित मजरा नंदापुर गांव में सड़क किनारे पड़े घूरों और बठियों को हटाने के लिए प्रशासन ने अभियान चलाया। किसान यूनियन की शिकायत और ज्ञापन के बाद तहसील प्रशासन हरकत में आया और जेसीबी व ट्रैक्टर-लोडर की मदद से अतिक्रमण हटवाया गया।

ग्रामीणों और किसान यूनियन पदाधिकारियों ने उपजिलाधिकारी मोहम्मदी को ज्ञापन देकर सड़क के दोनों ओर पड़े घूरों और बठियों को हटाने की मांग की थी। उनका कहना था कि सड़क किनारे अतिक्रमण के चलते राहगीरों और वाहन चालकों को आवागमन में परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। मामले को गंभीरता से लेते हुए प्रशासन ने कार्रवाई शुरू कर दी। नायब तहसीलदार बालकराम के नेतृत्व में गठित टीम ने मौके पर पहुंचकर सड़क किनारे पड़ी ग्राम समाज की जमीन को खाली कराया। अभियान के दौरान ट्रैक्टर-लोडर के जरिए घूरे और बठियां हटवाई गई। प्रशासन ने बताया कि जमीन को चिन्हित कर पात्र गरीब लोगों को आवंटित करने की प्रक्रिया भी की जाएगी। नायब तहसीलदार बालकराम ने बताया कि सड़क और सार्वजनिक भूमि पर अतिक्रमण किसी भी स्थिति में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा कि आगे भी अभियान जारी रहेगा। अभियान के दौरान कानूनगो अनुपम तिवारी, लेखपाल अमरीश राज, समाजसेवी अमरजीत सिंह, ग्राम प्रधान सुदेश कुमार सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद रहे। कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए रेहरिया पुलिस चौकी का पुलिस बल भी मौके पर तैनात रहा।

बजाज चीनी मिल के उपाध्यक्ष ने गन्ना सर्वेक्षण का किया औचक निरीक्षण

पलियाकलां खीरी। बजाज हिन्दुस्थान शुगर लिमिटेड चीनी मिल पलिया के उपाध्यक्ष ने क्षेत्र के ग्राम चौखड़ा में गन्ना सर्वेक्षण कार्य का औचक निरीक्षण किया। जो सही पाया गया। इस मौके पर उनके साथ महाप्रबन्धक (गन्ना) राजीव तोमर की उपस्थिति में किया। जिसमें पेड़ी, पौधा एवं प्रजातिवार रकवा सही पाया गया। उपस्थित किसानों से वार्तालाप सर्वे एस.एम.एस. एवं किये जा रहे सर्वे कार्य के बारे में पूछताछ की, और पाया कि चीनी मिल द्वारा कृषकों के सूचनार्थ एस.एम.एस. सर्वे पूर्व भेजे जा रहे हैं तथा चीनी मिल एवं सहकारी गन्ना विकास समिति लिमिटेड के सर्वेकर्ता संयुक्त रूप से सर्वे का कार्य ठीक प्रकार से कर रहे हैं।

चीनी मिल के उपाध्यक्ष ओ पी चौहान ने गन्ना प्रजाति 15023, 14201 व 0118 के प्लॉटों का भी निरीक्षण किया जिसमें अभी तक बीमारी का प्रकोप नहीं दिखाई दिया। महाप्रबन्धक 'गन्ना' राजीव तोमर ने कृषकों को बताया कि तापमान अधिक है, इसलिये समय-समय पर सिंचाई एवं गुड़ाई का विशेष ध्यान रखें, ताकि नमी संचित रहे। गन्ना फसल की अच्छी पैदावार लेने हेतु कीट एवं रोग आदि का समय से समुचित उपचार करें। चीनी मिल और गन्ना समिति द्वारा दी जा रही फफूंदनाशक एवं कीटनाशक दवाइयां, अपने क्षेत्र के अधिकारी से सम्पर्क कर प्राप्त कर सकते हैं। जो किसान समिति के सदस्य नहीं हैं वह 30 सितम्बर 2026 से पूर्व सदस्य बन जाये।

बड़े मंगल पर हुआ सुंदरकांड पाठ और कन्या भोज

गोला गोकर्णनाथ, खीरी। वीओएल। ज्येष्ठ माह के द्वितीय बड़े मंगल के अवसर पर बाबा त्रिलोक गिरि मंदिर पर धार्मिक आयोजन धूमधाम से संपन्न हुए। मंदिर परिसर में आयोजित सुंदरकांड पाठ, कन्या भोज और भंडारे में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लेकर धर्म लाभ प्राप्त किया। पूरे दिन मंदिर परिसर भक्तिमय माहौल में सराबोर रहा।

सुबह से ही मंदिर में श्रद्धालुओं का पहुंचना शुरू हो गया था। भक्तों ने सामूहिक रूप से सुंदरकांड पाठ कर क्षेत्र की सुख-समृद्धि और मंगल कामना की। हनुमान जी के जयकारों और भजन-कीर्तन से वातावरण भक्तिमय बना रहा। कार्यक्रम में विधायक अमन गिरि ने पूजा-अर्चना कर क्षेत्रवासियों की खुशहाली की कामना की। इसके बाद विधायक की ओर से कन्या भोज कराया गया, जिसमें कन्याओं को विधिविधान से भोजन कराया गया और आशीर्वाद लिया गया। आयोजन के दौरान मंदिर परिसर में विशाल भंडारे का भी आयोजन किया गया, जिसमें दूर-दराज से पहुंचे श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में रामभक्त, क्षेत्रीय लोग और जनप्रतिनिधि मौजूद रहे।

बिना परमिट के चार स्कूली वाहन सीज

जौनपुर। ए0आर0टी0ओ0 (प्रवर्तन) सत्येन्द्र कुमार सिंह के निर्देश पर यात्री/मालकर अधिकारी प्रमोद कुमार द्वारा विशेष अभियान चलाकर स्कूली बसों की जाँच की गयी। जिसमें परमिट, फिटनेस एवं अन्य प्रपत्र न मिलने पर 04 बसों को सीज कर दिया, जबकि 09 बसों का चालान किया गया। जनपद के समस्त प्रबन्धक/प्रधानाचार्य/वाहन स्वामी को निर्देशित किया जाता है कि जिन विद्यालयों में वाहनों से बच्चों का आवागमन होता है और उनका परमिट समाप्त/बिना परमिट के संचालित है तो वे तत्काल परमिट का नवीनीकरण/नया परमिट बनवा लें। यद्यपि बिना परमिट के जो भी वाहन संचालित पायी जायेगी उनके विरुद्ध चालान/निरुद्ध की कार्यवाही अमल में लायी जायेगी। उक्त अभियान आगे भी जारी रहेगा।

बंजर जमीन पर कब्जे का आरोप, न्याय की गुहार

जौनपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को भेजे गए शिकायती पत्र में जफराबाद के अहमदपुर गांव के ग्रामीणों ने बंजर भूमि पर कथित फर्जी तरीके से नाम दर्ज कराकर बैनामा किए जाने और अवैध कब्जे की कोशिश का गंभीर आरोप लगाया है। मामला तहसील सदर के ग्राम अहमदपुर, परगना हवेली से जुड़ा बताया जा रहा है ग्रामीणों की ओर से आशुतोष यादव समेत अन्य लोगों ने आरोप लगाया है कि आराजी नंबर 304 और 305, जो 1359 फसली अभिलेखों में बंजर खाते में दर्ज हैं, उन पर विपक्षी पक्ष द्वारा कथित रूप से कूटरचित दस्तावेजों के माध्यम से नाम दर्ज करा लिया गया। इसके बाद उक्त भूमि का विभिन्न लोगों के नाम बैनामा भी कर दिया गया शिकायतकर्ताओं का कहना है कि प्रभावशाली बैनामेदार अब जमीन पर कब्जा करने का प्रयास कर रहे हैं तथा अलग-अलग बाउंड्री दिखाकर गांव के लोगों का रास्ता भी अवरुद्ध किया जा रहा है। ग्रामीणों ने इसे जमीन हड़पने की साजिश करार दिया है। ग्राम अहमदपुर वर्तमान में चकबंदी प्रक्रिया के अधीन है। ऐसे में भूमि की प्रकृति में बदलाव और कब्जे की कार्रवाई को नियम विरुद्ध एवं न्याय के खिलाफ बताया गया है ग्रामीणों ने मुख्यमंत्री से मांग की है कि मामले की राजस्व विभाग से निष्पक्ष जांच कराई जाए तथा यदि अभिलेखों में फर्जीवाड़ा पाया जाए तो दोषियों के खिलाफ कठोर कानूनी कार्रवाई की जाए।

रात्रि में राहगीरों के साथ अराजकतत्वों की बदसलूकी, दहशत में लोग

सोनभद्र। राबर्ट्सगंज-घोरावल मुख्य मार्ग पर सदर कोतवाली क्षेत्र के जैत और परासी दुबे गांव के बीच रात्रि के समय अराजकतत्वों की गतिविधियों से राहगीरों में भय का माहौल बना हुआ है। आए दिन राह चलते लोगों के साथ बदसलूकी और डराने-धमकाने की घटनाएं सामने आने से रात में आवागमन करना मुश्किल हो गया है। स्थानीय लोगों ने पुलिस प्रशासन से रात्रि गश्त बढ़ाने की मांग की है। बताया जाता है कि बीती रात करीब नौ बजे रितेश नामक युवक ड्यूटी से बाइक द्वारा अपने घर लौट रहा था। इसी दौरान एक ही बाइक पर सवार तीन युवकों ने तेज गति से पीछे से आते हुए गाली-गलौज शुरू कर दी तथा उसकी बाइक को ओवरटेक कर रोकने का प्रयास किया। युवक ने किसी अनहोनी की आशंका को भांपते हुए अपनी बाइक की रफ्तार बढ़ाई और किसी तरह वहां से निकलकर अपनी जान बचाई। पीड़ित युवक के अनुसार यदि वह सतर्कता नहीं दिखाता तो अराजकतत्व किसी बड़ी घटना को अंजाम दे सकते थे। इस घटना के बाद क्षेत्र के अन्य राहगीरों में भी दहशत का माहौल है। लोगों का कहना है कि इस सुनसान मार्ग पर पहले भी कई लोगों के साथ ऐसी घटनाएं हो चुकी हैं, जिससे रात के समय कामकाज से लौटने वाले लोग भयभीत रहते हैं। स्थानीय नागरिकों ने पुलिस अधीक्षक का ध्यान इस ओर आकर्षित करते हुए राबर्ट्सगंज-घोरावल मुख्य मार्ग पर जैत और परासी दुबे गांव के बीच नियमित पुलिस गश्त कराने तथा अराजकतत्वों पर कड़ी कार्रवाई की मांग की है।

जल निकासी व्यवस्था को लेकर पालिकाध्यक्ष ने किया निरीक्षण

गोला गोकर्णनाथ, खीरी। वीओएल। नगर में बरसात के दौरान होने वाली जलभराव की समस्या के स्थायी समाधान को लेकर प्रशासन और नगर पालिका सक्रिय हो गई है। पालिकाध्यक्ष विजय शुक्ला रिंकू की पहल पर जिलाधिकारी अंजनी कुमार सिंह के निर्देश में सिंचाई विभाग, जल निगम और नगर पालिका की संयुक्त टीम ने नगर के विभिन्न क्षेत्रों का स्थलीय निरीक्षण कर जल निकासी व्यवस्था का जायजा लिया।

निरीक्षण टीम में सिंचाई विभाग के अधिशासी अभियंता राम बहादुर, जल निगम के अधिशासी अभियंता अनिल कुमार और अवर अभियंता निशांत आर्य शामिल रहे। टीम ने शिव मंदिर कॉरिडोर क्षेत्र का विशेष निरीक्षण किया, जहां उत्तर प्रदेश प्रोजेक्ट्स कॉरपोरेशन लिमिटेड के जेई एपीसी सिंह, विवेक बाजपेई और रोहित कुमार ने निर्माण कार्यों और जल निकासी व्यवस्था की तकनीकी जानकारी दी। इसके अलावा टीम ने नीलकंठ मैदान के पास नाला, मेला मैदान स्थित नलकूप क्षेत्र, कल्लू बांसवाले के पास, अंबेडकर चौराहा, डॉ. संजीव सेठी के पास सतौती नाला, कोयले वाली गली, केडिया फार्म के पास पुलिया, भूतनाथ क्षेत्र की फॉरेस्ट पुलिया और रेलवे अंडरपास क्षेत्र का निरीक्षण कर जल निकासी की वर्तमान स्थिति का मूल्यांकन किया। निरीक्षण के बाद संबंधित विभाग विस्तृत रिपोर्ट जिलाधिकारी को सौंपेंगे, जिसके आधार पर आगे की कार्ययोजना तैयार की जाएगी। पालिकाध्यक्ष विजय शुक्ला रिंकू ने कहा कि नगरवासियों को जलभराव की समस्या से स्थायी राहत दिलाना नगर पालिका की प्राथमिकता है। उन्होंने बताया कि बरसात से पहले प्रमुख नालों, छोटी नालियों और जल निकासी मार्गों की सफाई कराई जा रही है ताकि पालिका की टीमें प्रतिदिन क्षेत्रवार निरीक्षण कर रही हैं। उन्होंने नगरवासियों और व्यापारियों से अपील की कि नालों में कूड़ा-कचरा न डालें और सफाई कर्मचारियों का सहयोग करें, ताकि नगर को स्वच्छ और जलभराव मुक्त बनाया जा सके। निरीक्षण के दौरान अधिशासी अधिकारी संजय कुमार, सफाई एवं खाद्य निरीक्षक संदीप वर्मा, जेई सिविल अनिल कुमार यादव, जेई जलकर आदर्श मिश्रा, मोहित अवस्थी, रविंद्र कटियार समेत नगर पालिका कर्मचारी मौजूद रहे।

बड़े मंगल पर भंडारे का आयोजन

जंगबहादुरगंज खीरी। पसगवां ब्लॉक के कस्बा जगबहादुरगंज में आइसीआइसीआइ बैंक के सामने हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी ज्येष्ठ माह के दूसरे बड़े मंगल पर मोहिद्दीनपुर निवासी जिला पंचायत सदस्य अनूप सिंह के द्वारा विशाल भंडारे का आयोजन किया गया जिसका शुभारंभ पूजन अर्चन करने के पश्चात कन्याओं को प्रसाद खिलाकर किया गया साथ ही सुंदर काण्ड का पाठ भी किया गया, भंडारे में सब्जी पूड़ी, बूंदी और शीतल पेय जल आदि का प्रसाद वितरित किया गया जिसे भक्तों ने खाकर खुब आनंद लिया है। अनूप सिंह ने बताया कि बालाजी महाराज का भंडारा पिछले 6 वर्षों से लगातार होता आ रहा है ईश्वर ने चाहा तो ऐसे ही भंडारा आगे भी होता रहेगा। इस दौरान कोतवाली प्रभारी पसगवां जितेंद्र प्रताप सिंह, थाना प्रभारी उचौलिया गोपाल नारायण सिंह, जे बी गंज चौकी प्रभारी राघवेंद्र प्रताप सिंह, गन्ना सचिव जे बी गंज गजेंद्र कटियार, पत्रकार अनूप गुप्ता, पत्रकार जयगोपाल, पत्रकार विमल सिंह, पत्रकार सुखदेव भार्गव, महिला मोर्चा जिला उपाध्यक्ष सीमा कश्यप, देवेंद्र सिंह, देवेश सिंह गिल, संजय गुप्ता, कोविद राज सिंह, मोहित त्रिपाठी, सचिन सिंह, दीपन सिंह, लिटिल सिंह, आयुष सिंह, रजत सिंह, राहुल गुप्ता, वेदपाल, चरित्र त्रिपाठी आदि लोग मौजूद रहे।

आवागमन के लिए रूट डायवर्जन किया

सोनभद्र। उप जिलाधिकारी रॉबर्ट्सगंज अश्वनी कुमार ने अवगत कराया है कि त्वरित आर्थिक विकास प्राधिकरण योजना के अन्तर्गत रॉबर्ट्सगंज नगर पालिका क्षेत्र में महिला थाना के पास आर0सी0सी0 कलवर्ट नाले का निर्माण कार्य कराया जाना है। यह निर्माण कार्य लगभग 22 दिवस तक संचालित रहेगा। निर्माण कार्य के दौरान हल्के वाहनों के आवागमन के लिए रूट डायवर्जन किया गया है। हल्के वाहन कलवर्ट नाले से लगभग 100 मीटर पूर्व स्थित पुलिया से दाहिनी ओर मुड़कर हाइडिल मैदान से सटे कलवारी-खलियारी मार्ग का प्रयोग करेंगे। भारी वाहनों के लिए वैकल्पिक मार्ग निर्धारित करते हुए बताया गया कि वाराणसी-शक्तिनगर मार्ग पर स्थित किलोमीटर-56 से तेन्दू होते हुए बभनौली, कलवारी, रॉबर्ट्सगंज-खलियारी मार्ग से बेलखुरी की ओर आवागमन कराया जाएगा। उप जिलाधिकारी ने आमजन से अपील की है कि निर्माण कार्य अवधि में निर्धारित वैकल्पिक मार्गों का उपयोग कर प्रशासन का सहयोग करें, जिससे यातायात व्यवस्था सुचारु बनी रहे।

ट्रक की टक्कर से बाइक सवार दो की मौत

महोबा। जिले के सदर कोतवाली क्षेत्र में मंगलवार को एक तेज रफ्तार ट्रक की चपेट में आने से बाइक सवार दो युवकों की मौत हो गयी। पुलिस उप अधीक्षक ए के सिंह ने बताया कि सीमावर्ती मध्य प्रदेश में छतरपुर जिले के प्रकाश बम्हौरी निवासी राम सनेही (28) अपने भाई नवाब (19) के साथ बहन के शादी समारोह के लिए, जेनरेटर का डीजल खरीदने महोबा आये थे। वे बाइक से घर वापस लौट रहे थे, तभी पसवारा गांव के पास ग्रिट लादकर आ रहे एक ट्रक ने उन्हें रौंद दिया इस हादसे में राम सनेही की ट्रक के पहिये के नीचे आने से मौत हो गयी। राहगीरों की सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने नवाब को इलाज के लिए जिला अस्पताल पहुंचाया लेकिन उपचार के दौरान उसकी भी मौत हो गयी घटना को अंजाम देकर भाग रहे ट्रक को ग्रामीणों की मदद से पकड़ कर पुलिस ने सीज कर दिया है।

प्रतापगढ़ में शिक्षामित्र ने आत्महत्या की

प्रतापगढ़। सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापन कार्य में सहायता करने वाले 35 वर्षीय शिक्षामित्र ने प्रतापगढ़ जिले में अपने घर पर पिस्तौल से गोली मारकर कथित तौर पर आत्महत्या कर ली। पुलिस ने मंगलवार को यह जानकारी दी।

पुलिस क्षेत्राधिकारी प्रशांत राज हुड्डा ने बताया कि देहात कोतवाली थाना क्षेत्र के बहलोलपुर गांव के निवासी योगेन्द्र सरोज इलाके के एक प्राथमिक विद्यालय में तैनात थे। सरोज सोमवार शाम स्कूल से घर लौटे और बाद में अपने कमरे में खुद को गोली मार ली, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गये। उन्हें मेडिकल कॉलेज ले जाया गया जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा। पुलिस ने कहा कि जिला मजिस्ट्रेट के आदेश पर, शव परीक्षण दो डॉक्टरों के एक पैनल द्वारा किया गया और वीडियोग्राफी की गई। परिजनों ने पुलिस को बताया कि सरोज पिछले कई दिनों से मानसिक तनाव में थे। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

संक्षेप

ट्रेन की चपेट से युवक की मौत

जसवंतनगर, इटावा। थाना क्षेत्र के ग्राम तमेरा निवासी एक युवक की फिरोजाबाद में ट्रेन की चपेट में आने से मौत हो गई। घटना की सूचना मिलते ही परिवार में कोहराम मच गया। मंगलवार को पोस्टमार्टम के बाद शव गांव पहुंचा तो परिजनों की चीख-पुकार से माहौल गमगीन हो उठा। ग्राम तमेरा निवासी 26 वर्षीय अवशांत उर्फ नीतू पुत्र मुकेश बाबू सोमवार रात करीब 11 बजे फिरोजाबाद रेलवे स्टेशन के मालगोदाम के पास ट्रेन की चपेट में आ गया, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। बताया गया है कि मृतक फिरोजाबाद के नगला पिपरिया क्षेत्र के साथी मार्ग पर रहकर माईसेम सीमेंट की सप्लाई का काम करता था। घटना के समय वह किसी कार्य से रेलवे ट्रैक के पास पहुंचा था, तभी हादसा हो गया। मृतक अविवाहित था। परिजनों के अनुसार उसके पिता मुकेश बाबू मजदूरी कर परिवार का पालन-पोषण करते हैं। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम कराया। मंगलवार शाम करीब तीन बजे जैसे ही युवक का शव गांव तमेरा पहुंचा, पूरे गांव में शोक की लहर दौड़ गई।

युवक ने फांसी लगायी

जसवंतनगर, इटावा। थाना क्षेत्र के ग्राम नगला हुलासी में सोमवार-मंगलवार की रात एक युवक ने कमरे में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। सूचना पर पहुंची पुलिस ने दरवाजा काटकर शव को नीचे उतारा और पोस्टमार्टम के लिए भेजते हुए जांच शुरू कर दी। घटना के बाद गांव में शोक का माहौल है। थानाध्यक्ष कमल भाटी ने बताया कि नगला हुलासी निवासी 34 वर्षीय दिलीप पुत्र राम बहादुर शाक्य ने कमरे का दरवाजा अंदर से बंद कर साड़ी का फंदा बनाकर पंखे से लटककर आत्महत्या कर ली। घटना के समय परिवार के लोग कस्बे में आयोजित एक समारोह में शामिल होने गए थे। मंगलवार सुबह करीब छह बजे परिजन लौटे तो कमरे का दरवाजा अंदर से बंद मिला। काफी देर तक आवाज लगाने पर भी कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली तो पुलिस को सूचना दी गई। मौके पर पहुंचे उपनिरीक्षक ललित चतुर्वेदी ने कटर से दरवाजा कटवाया। अंदर युवक का शव फंदे पर लटका देख परिजनों में चीख-पुकार मच गई। पुलिस ने शव को नीचे उतारकर फोरेंसिक टीम को बुलाया और पंचायतनामा भरकर कार्रवाई शुरू की।

सेवा ही मानव जीवन का मूल्य उद्देश्य हो

इटावा। अंतर्राष्ट्रीय नर्सिंग दिवस के उपलक्ष में ब्रहमकुमारिज की सिविल लाइंस शाखा द्वारा एएन एम प्रशिक्षण केंद्र में आयोजित नर्सिंग सम्मान समारोह में बोलते हुए ब्रह्माकुमारी नीलम ने फ्लोरेंस नाइटिंगेल के जन्म दिवस की सभी को बधाई देते हुए सभी नर्स बहनों से अनुरोध किया की सेवा करना ही दुआओं का पात्र बनना है ! ब्रह्माकुमारी प्रीति ने कहा कि ईश्वर ने हमें मानव तन देकर मानव मात्र की सेवा के निमित्त बनाया है ! कठिन से कठिन परिस्थिति में भी अचल रहकर सेवारत रहना है क्योंकि ईश्वर हमारे साथ है ! एएनएम केंद्र प्रभारी प्रमोद सिंह ने सभी बहनों से कहा कि आप कहीं भी जाएं पूरे दिल से पूरी ईमानदारी से कार्य करें ! प्रशिक्षिका नम्रता यादव ने बच्चों को आज के दिन की बधाई दी और बताया कि फ्लोरेंस नाइटेंगल संभ्रांत परिवार की होते हुए भी गरीबों की सेवा निस्वार्थ भाव से करती थी इसलिए उनका नाम लेडी विद द लैंप पड़ गया था ! भ्राता अनिरुद्ध सिंह ने कहा कि नरसिंह का प्रोफेशन पैसा कमाने के उद्देश्य से नहीं सेवा भावना से करें ताकि आप दुआएं कमा सके।

मां की तरह सेवा करती हैं नर्सें : डॉ. महेश प्रसाद

केएनआईएमटी में धूमधाम से मनाया गया अंतर्राष्ट्रीय नर्सेज दिवस

सुलतानपुर (वीओएल)। कमला नेहरू इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एण्ड टेक्नोलॉजी के नर्सिंग विभाग में मंगलवार को अंतर्राष्ट्रीय नर्सेज दिवस उत्साह और गरिमा के साथ मनाया गया। कार्यक्रम की शुरूआत संस्थान के निदेशक डा. महेश प्रसाद एवं प्रशासक राजेश कुमार दूबे ने मां सरस्वती, फ्लोरेंस नाइटिंगल तथा संस्थापक बाबू केदार नाथ सिंह की प्रतिमा पर दीप प्रज्वलन और माल्यार्पण कर की। कार्यक्रम में जीएनएम द्वितीय वर्ष की छात्रा ईशी पाण्डेय ने शिव स्तुति प्रस्तुत किया। फरीदीपुर कैंपस में आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए डा. महेश प्रसाद ने कहा कि स्वास्थ्य सेवाओं में नर्सों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। नर्सें निस्वार्थ भाव से मरीजों की सेवा करती हैं और एक मां की तरह उनकी देखभाल करती हैं। उन्होंने कहा कि समर्पण और सेवा भाव ही नर्सिंग पेशे की सबसे बड़ी पहचान है। इस अवसर पर हमारी नर्सें, हमारा भविष्य थीम के अंतर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। पोस्टर मेकिंग एवं प्रेजेंटेशन प्रतियोगिता में जीएनएम तृतीय वर्ष की आर्या मौर्या प्रथम रहीं। फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता में मानषी, मेहंदी प्रतियोगिता में अनुराधा तथा रंगोली प्रतियोगिता में शिवानी गुप्ता ने पहला स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता में प्रतिभाग करने वाली छात्राओं को डायरेक्टर डा. महेश प्रसाद व प्रशासक राजेश दूबे ने स्मृति चिन्ह तथा प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन अर्चना यादव ने किया। इस मौके पर प्रशिक्षिकाएं आंचल मिश्रा, चन्द्रावती दूबे, सुरभी सिंह, प्रांजलि देवी, खुशबू, हीना परवीन, आर्या त्रिपाठी, दिव्यांशी शुक्ला, ऋचा सिंह, निधि जायसवाल, विभा यादव, मृदुला पांडेय, तारा देवी, आदि मौजूद रही।

- प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली छात्राएं सम्मानित

जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक आयोजित

इटावा। डीएम शुभ्रांत कुमार शुक्ल की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट स्थित नवीन सभागार में जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में स्वास्थ्य विभाग की विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों की विस्तृत समीक्षा की गई।

बैठक में डीएम ने ग्रामीण आशाओं के चयन की स्थिति की समीक्षा करते हुए निर्देश दिए कि चयन प्रक्रिया में तेजी लाई जाए। जसवंतनगर में 44,, महेवा में 31 में के सापेक्ष 7 का चयन, बसरेहर में 18, भरथना में 16, बढ़पुरा में 38, ताखा में 15, चकरनगर में 10 तथा सैफई में 28 आशाओं का चयन शेष है। उन्होंने कहा आशा कार्यकर्ता स्वास्थ्य विभाग की महत्वपूर्ण मानव शक्ति हैं, इसलिए चयन प्रक्रिया शीघ्र पूर्ण कराई जाए। परिवार नियोजन कार्यक्रम की समीक्षा करते हुए डीएम ने निर्देश दिए कि लाभार्थियों की संख्या में वृद्धि सुनिश्चित की जाए तथा एफएसटी में शून्य स्थिति न रहे। पीपीआईयूसीडी इंसर्शन की संस्थागत उपलब्धि की समीक्षा करते हुए कम प्रगति वाले क्षेत्रों में सुधार के निर्देश दिए। अंतरा इंजेक्शन प्रगति की समीक्षा में बताया गया कि अप्रैल 2025 में 492 तथा अप्रैल 2026 में 455 लाभार्थी रहे। बसरेहर में वर्ष 2025 में 218 के सापेक्ष वर्ष 2026 में 70 तथा ताखा में वर्ष 2025 में 53 के सापेक्ष वर्ष 2026 में 17 लाभार्थी रहे। डीएम ने निर्देश दिए कि सभी स्थानों पर इंजेक्शन एवं दवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करते हुए कार्यक्रम पर विशेष फोकस रखा जाए। जनपद में संस्थागत प्रसव की स्थिति की समीक्षा में बताया गया कि अप्रैल 2025 में 1060 तथा अप्रैल 2026 में 1089 संस्थागत प्रसव हुए हैं। सीएससी एवं जिला महिला चिकित्सालय एफआरयू सिजेरियन की स्थिति की समीक्षा करते हुए सर्सईनावर अस्पताल में चिकित्सकों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। बैठक में मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. बृजेंद्र सिंह, मुख्य चिकित्सा अधीक्षक पुरुष डा. परितोष शुक्ला, मुख्य चिकित्सा अधीक्षक महिला डा. अनिल कुमार सहित समस्त संबंधित विभाग के अधिकारी उपस्थित रहे।

एनएसपीएस त्रिपुला में दूसरे मंगलवार पर प्रसाद वितरण

रायबरेली। ज्येष्ठ माह के पावन अवसर पर न्यू स्टैंडर्ड ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट्स की ओर से प्रसाद वितरण कार्यक्रम के तहत द्वितीय मंगलवार को एनएसपीएस त्रिपुला में भक्ति भाव के साथ कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में संस्थापक-प्रबंधक डॉ. शशिकांत शर्मा एवं संयुक्त सचिव डॉ. रश्मि शर्मा ने भगवान हनुमान जी की विधिवत पूजा-अर्चना की तथा पवन पुत्र को प्रिय चने के प्रसाद का भोग अर्पित किया तत्पश्चात प्रसाद वितरित किया गया। संस्थापक-प्रबंधक डॉ. शर्मा ने कहा कि हनुमान जी शक्ति, सेवा, समर्पण और श्रद्धा के प्रतीक हैं। ऐसे धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजन समाज में सकारात्मक ऊर्जा और आपसी सौहार्द को बढ़ावा देते हैं। इस अवसर पर शिव लखन प्रजापति (प्रधानाचार्य एनएसपीएस त्रिपुला), राजीव सिंह (प्रधानाचार्य एनएसपीएस सलेथू), मो. फैजान खान, शिवकरन पाल, अरुण चैधरी, संचिता त्रिवेदी, प्रशांत पांडेय, शुभी सिंह, अजय सिंह, गिरीश श्रीवास्तव, आदित्य मिश्रा, संजय श्रीवास्तव सहित शिक्षक-शिक्षिकाएं, शिक्षणेत्तर कर्मचारी और बड़ी संख्या में भक्तजन उपस्थित रहे।

हनुमत आराधना, भंडारा व शर्बत वितरण का आयोजन

सलोन,रायबरेली। ज्येष्ठ माह के दूसरे मंगलवार पर जगह-जगह हनुमत आराधना, भंडारा व शर्बत का आयोजन किया गया। श्रद्धालुओं ने प्रसाद चखा। राहगीरों ने गर्मी में नीबू पानी की ठंड शर्बत से अपनी प्यास बुझाई।कस्बे के भारतीय स्टेट बैंक,विद्यार्थी बुक डीपो , ऊंचाहार रोड राज पेटल, परशदेपुर रोड किसान ट्रैक्टर सामने विशाल भंडारे का आयोजन किया गया जहाँ श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा,और प्रसाद वितरित किया गया।सलोन कस्बे के भारतीय स्टेट बैंक मैनेजर सर्वेश कुमार त्रिपाठी, बृजेश सिंह,आशीष सिंह,सुधीर सिंह, राजेन्द्र सिंह,सचिन सिंह,आशीष श्रीवास्तव, अर्जुन के नेतृत्व में भंडारे का आयोजन किया गया।सर्व प्रथम सामूहिक सुंदरकांड का पाठ किया गया। आरती के बाद हनुमान जी को को लड्डू और हलवा पूड़ी का भोग लगाया गया।इसके बाद दोपहर 12 बजे सायं सात बजे तक भंडारे में पूड़ी सब्जी श्रद्धालुओ को वितरित की गई।ग्रामीण क्षेत्र करहिया,कमालगंज,सूची आदि जगहों पर शर्बत,फल आदि प्रसाद वितरित किया गया।इस मौके पर नरेंद्र रस्तोगी, नगर पंचायत अध्यक्ष चन्द्र शेखर रस्तोगी, तरुण रस्तोगी , सतेंद्र, रस्तोगी शुभ्रत रस्तोगी आदि लोग मौजूद रहे।

गुरुकुल कम्प्यूटर संस्थान के 63 मेधावियों ने क्वालीफाई किया ओ लेवल कोर्स

रायबरेली। नाईलिट (डोयक) द्वारा ओ लेवल परीक्षा परिणाम घोषित किया गया जिसमें रायबरेली जनपद में संचालित गुरुकुल कम्प्यूटर संस्थान के 63 मेधावियों ने ओ लेवल कोर्स को पूर्ण रुप से क्वालीफाई किया तथा 233 छात्र-छात्राओं ने सेमेस्टर परीक्षा को क्वालीफाई किया। इन 63 मेधावियों में 43 मेधावी पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित निःशुल्क ओ लेवल कोर्स के हैं। छात्र-छात्राओं की इस सफलता के अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रवीण शुक्ल एवं प्रबन्धक पवन विक्रम द्वारा शुभकामनाएँ दी गई और उज्जवल भविष्य की कामना की गई निदेशक ने कहा कि इन छात्रों की यह सफलता न केवल उनकी मेहनत का परिणाम है, बल्कि संस्थान की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और प्रशिक्षकों के मार्गदर्शन का भी प्रमाण है। संस्थान के प्रबन्धक द्वारा बताया गया कि ये सभी छात्र भविष्य में समीक्षा अधिकारी,सहायक लेखाकार,एएसआई,कम्प्यूटर आपरेटर,और तकनीशियन जैसे विभिन्न सरकारी पदों के लिए योग्य हो गए है साथ ही मशीन लर्निंग,डेटा सांइस,और वेब डेवलपमेंट जैसे आधुनिक क्षेत्रो में प्रशिक्षण लेकर आईटी सेक्टर में रोजगार के नए अवसर प्राप्त कर सकते है।

एएसएमसी में आधुनिक तकनीक से आंख की नली का हुआ सफल ऑपरेशन

सुलतानपुर (वीओएल)। स्वशासी राज्य चिकित्सा, महाविद्यालय के ईएनटी विभाग में एंडोस्कोपिक डीसीआर सर्जरी के माध्यम से आंख की आंसू की नली का सफल ऑपरेशन किया गया। आजमगढ़ के अहिरौला निवासी 43 वर्षीय लालमणि यादव पिछ्ले तीन महीनों से आंख से लगातार पानी आने और सूजन की समस्या से परेशान थे। कई अस्पतालों में उपचार के बावजूद राहत नहीं मिलने पर उन्होंने एएसएमसी सुलतानपुर में परामर्श लिया। जांच में आंख की आंसू की नली में रुकावट पाई गई, जिसके बाद ईएनटी विभाग में आधुनिक एंडोस्कोपिक तकनीक से सफल सर्जरी की गई। चिकित्सकों ने बताया कि इस प्रक्रिया में चेहरे पर कोई बाहरी चीरा नहीं लगाया जाता, जिससे मरीज को कम दर्द और शीघ्र आराम मिलता है। यह सर्जरी प्राचार्य डॉ. प्रियांक वर्मा के मार्गदर्शन में ईएनटी विभागाध्यक्ष डॉ. अम्बर केसरवानी व उनकी टीम ने सफलतापूर्वक सम्पन्न की। ऑपरेशन के बाद मरीज स्वस्थ है।

पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे के नीचे पुलिस की दबिश, गोवध मामले में पांच गिरफ्तार

जयसिंहपुर, सुलतानपुर (वीओएल)। पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे के नीचे जयसिंहपुर थाना क्षेत्र में पुलिस ने गोवध निवारण अधिनियम के तहत बड़ी कार्रवाई करते हुए पांच आरोपियों को गिरफ्तार कर न्यायालय भेज दिया। सोमवार को हाईवे किनारे 24 मृत गोवंश मिलने के बाद पुलिस लगातार जांच में जुटी थी। पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर चलाए जा रहे अभियान के तहत जयसिंहपुर पुलिस ने सराय नौरंग अंडरपास के पास दबिश देकर चाँदबाबू, मुजस्सम, मोहम्मद नूरुल, वकील और असगर अली को गिरफ्तार किया। आरोपियों के पास से 25 रस्सियां और एक आधार कार्ड बरामद हुआ है। पुलिस जांच में सामने आया कि आरोपी वकील और मुजस्सम पर पहले से कई गंभीर मुकदमे दर्ज हैं। कार्रवाई में उप निरीक्षक प्रेमनरायन राजपूत, राजेश कुमार सिंह सहित पुलिस टीम शामिल रही।

ज्येष्ठ माह के दूसरे बड़े मंगल पर हनुमान गढ़ी मंदिर में भव्य धार्मिक आयोजन

- विशाल भंडारे में उमड़ा श्रद्धालुओं का सैलाब

महराजगंज, रायबरेली। रायबरेली रोड स्थित हनुमान गढ़ी मंदिर परिसर में ज्येष्ठ माह के दूसरे बड़े मंगलवार पर भव्य धार्मिक आयोजन व हवन पूजन के साथ विशाल भंडारे का आयोजन श्रद्धा और उत्साह के साथ संपन्न हुआ। कार्यक्रम का संयोजन अदिति गैस एजेंसी प्रबंधक डॉ. महेंद्र सिंह के नेतृत्व में किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं, जनप्रतिनिधियों एवं क्षेत्रीय गणमान्य लोगों की सहभागिता देखने को मिली।

कार्यक्रम की शुरूआत विधिवत सुंदरकाण्ड पाठ से हुई, जिसके पश्चात हवन-पूजन एवं धार्मिक अनुष्ठान संपन्न कराए गए। पूजा-अर्चना के बाद श्रद्धालुओं के लिए विशाल भंडारे का शुभारंभ किया गया, जिसमें सैकड़ों लोगों ने प्रसाद ग्रहण कर पुण्य लाभ अर्जित किया।

पूरे मंदिर परिसर में भक्तिमय वातावरण देखने को मिला और गगन भेदी जय श्रीराम व बजरंगबली के जयकारों से माहौल गुंजायमान रहा। इस अवसर पर डॉ. महेंद्र सिंह ने कहा कि बड़े मंगल का पर्व सेवा, समर्पण और आस्था का प्रतीक है। ऐसे धार्मिक आयोजनों से समाज में एकता, भाईचारा और सद्भाव का संदेश प्रसारित होता है। उन्होंने आयोजन समिति एवं सहयोगियों के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम समाज को जोड़ने का कार्य करते हैं। वहीं नगर पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि एवं पूर्व जिला पंचायत सदस्य प्रभात साहू ने कहा कि हनुमान जी की कृपा से ही इस प्रकार के सेवा कार्य निरंतर संपन्न हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि बड़े मंगल पर भंडारा आयोजित करना केवल परंपरा नहीं, बल्कि समाज सेवा का माध्यम भी है। उन्होंने लोगों से सेवा भाव बनाए रखने और सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेने का आह्वान किया।

कार्यक्रम में लक्ष्मी शंकर श्रीवास्तव, सुनील कुमार शर्मा, ज्ञानप्रकाश जायसवाल, नामित सभासद सूर्य प्रकाश वर्मा, विजय धीमान, धनश्याम चरसिया, दयाशंकर सिंह, भाजपा नेता अवधेश मिश्रा, अशोक वर्मा, अनुराग अग्रहरी अभिषेक पाण्डेय, राजू मौर्य, शिवशरन साहू, सुधीर साहू सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे। पूरे आयोजन के दौरान हनुमान भक्तों ने सेवा भाव से व्यवस्थाएं संभालीं तथा श्रद्धालुओं को प्रसाद वितरण में सक्रिय भूमिका निभाई।

राजकुमार को मिला बाल वीरता पुरस्कार

- गोमती में डूब रहे तीन बच्चों की बचायी थी जान
- डीएम और एसपी ने किया सम्मानित, दिया प्रशस्ति पत्र

जिला संवाददाता (vol)

जयसिंहपुर, सुलतानपुर। क्षेत्र के अर्जुनपुर बेलहरी गांव के पास गोमती नदी में डूब रहे तीन बच्चों की जान बचाने वाले 13 वर्षीय राजकुमार निषाद को सोमवार को कलेक्ट्रेट सभागार में सम्मानित किया गया। जिलाधिकारी इन्द्रजीत सिंह और पुलिस अधीक्षक चारू निगम ने राजकुमार को बाल वीरता पुरस्कार प्रदान कर उसके साहस और सूझबूझ की सराहना की। 5 मई 2026 को गोसाईगंज थाना क्षेत्र के अर्जुनपुर बेलहरी गांव के तीन बच्चे गोमती नदी किनारे मछली पकड़ने गए थे। नहाते समय तीनों गहरे पानी में चले गए और डूबने लगे। उसी दौरान पास में भैंस चरा रहे राजकुमार पुत्र रामलाल 13 वर्ष ने बच्चों को संकट में देखा और बिना अपनी जान की परवाह किए नदी में छलांग लगा दी। किशोर ने साहस का परिचय देते हुए तीनों बच्चों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया।

मंगलवार को कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित सम्मान समारोह में अधिकारियों ने राजकुमार के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। इस दौरान उसे कक्षा 9 की किताब की किट प्रशस्ति पत्र और स्मृति चिह्न देकरसम्मानित किया गया। कार्यक्रम में उपजिलाधिकारी जयसिंहपुर प्रभात कुमार सिंह और प्रशासन एवं पुलिस विभाग के अधिकारी मौजूद रहे।

विजय नारायण हत्याकांड में आरोपितों को तलब करने पर सुनवाई टली

सुलतानपुर (वीओएल)। विजय नारायण सिंह हत्याकांड के मामले में वादी मुकदमा सतीश नारायण सिंह की ओर से आरोपित जयंत मिश्र, दीपक मिश्र व विनय तिवारी को तलब करने के लिए दी गई अर्जी पर मंगलवार को सुनवाई टल गई। अभियोजन पक्ष के अधिवक्ता अरविंद सिंह राजा ने बताया कि मामले में अगली सुनवाई के लिए 25 मई की तिथि तय की गई है। कोतवाली नगर के नरायनपुर गांव के विजय नारायण सिंह की सात अप्रैल 2024 को शहर के दरियापुर तिराहे पर गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। मृतक के भाई सतीश नारायण सिंह ने अंबेडकर नगर जिले के महरूआ के शूटर अजय प्रताप सिंह सिलावट के साथ ही दीपक मिश्र, जयंत मिश्र व विनय तिवारी समेत कई अन्य के खिलाफ हत्या और साजिश करने के आरोप में मुकदमा दर्ज कराया था। पुलिस ने अजय प्रताप सिंह सिलावट के खिलाफ चार्जशीट दाखिल की थी, जबकि अन्य आरोपितों को क्लीनचिट दे दी थी।

अपरा एकादशी पर होगी श्री कल्पवृक्ष धाम में महाआरती

सुलतानपुर (वीओएल)। अपरा एकादशी के पावन अवसर पर बुधवार 13 मई को सायं 06:30 बजे कल्पवृक्ष सेवा समिति के तत्वावधान में श्री कल्पवृक्ष धाम पर भगवान श्री ठाकुर कल्पवृक्ष (पारिजात वृक्ष) की महाआरती आयोजित की जाएगी। समिति द्वारा प्रत्येक एकादशी पर नियमित रूप से महाआरती का आयोजन किया जाता है, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल होकर पूजा-अर्चना करते हैं। समिति अध्यक्ष अंकित श्रीवास्तव ने सभी भक्तों से महाआरती में शामिल होकर धार्मिक अनुष्ठान का पुण्य लाभ प्राप्त करने की अपील की है। आयोजन को लेकर श्रद्धालुओं में उत्साह का माहौल है।

श्याम सुंदर इंटर कॉलेज के छात्र-छात्राओं को मिली साइकिल, खुशी से खिल उठे चेहरे

ऊंचाहार, रायबरेली। ब्लॉक रोहनिया के छतौना मरियानी में स्थित श्याम सुंदर इंटर कॉलेज ने एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। ग्रामीण क्षेत्र के गरीब,निर्धन असहाय परिवार के मेधावी छात्र-छात्राओं को प्रबंधक द्वारा साइकिल वितरित की गई है। इस शुभ अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रहे विद्यालय के प्रबंधक सर्वेश सिंह चैहान ने कहा कि छात्र-छात्राओं की पढ़ाई में और आवागमन में कोई बाधा न उत्पन्न हो इसलिए पात्र छात्र-छात्राओं को साइकिल वितरित की गई है। इसी दौरान प्रेस वार्ता के दौरान मुख्य प्रबंधक ने कहा कि विद्यालय पूरी तरह से असहाय गरीब परिवारों एवं मेधावी छात्र-छात्राओं के प्रति कटिबद्ध है। जो हमेशा मदद एवं सहायता के संकल्प से संचालित हो रहा है। प्रबंधक ने बताया कि आगे भी इसी तरह की कई योजनाएं प्रस्तावित है जो विद्यालय के समस्त छात्र-छात्राओं को लाभान्वित करेगी। इस शुभ अवसर पर छात्र-छात्राओं के अभिभावक बंधु भी मौजूद रहे, जिन्होंने विद्यालय की इस योजना की भूरी भूरी प्रशंसा की। विद्यालय में प्रधानाचार्य ने कहा कि जो छात्र छात्रा दूर से पैदल आते थे उनको सब किसी भी प्रकार की समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। कार्यक्रम के शुभ अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य गिरधारी लाल भार्गव, दिनेश प्रताप मिश्र, रमेश शुक्ला, सतीश श्रीवास्तव, उमेश तिवारी, रमेश कुमार पाण्डेय, आलोक कुमार यादव सहित समस्त शिक्षक बंधु एवं सैकड़ों अभिभावक बंधु मौजूद रहें।

एएसपी आलोक सिंह ने की पीआरवी और पवन मोबाइल की आकस्मिक चेकिंग

रायबरेली। अपराध नियंत्रण और आमजन की सुरक्षा को लेकर पुलिस प्रशासन सतर्क है। इसी क्रम में अपर पुलिस अधीक्षक आलोक सिंह ने थाना कोतवाली नगर क्षेत्र अंतर्गत संचालित पीआरवी और पवन मोबाइल वाहनों की आकस्मिक चेकिंग की। चेकिंग के दौरान ड्यूटी पर तैनात पुलिसकर्मियों की उपस्थिति, उपकरणों और वाहनों की स्थिति का बारीकी से निरीक्षण किया गया। एएसपी ने पुलिसकर्मियों को सतर्कता के साथ प्रभावी गश्त करने, संदिग्ध व्यक्तियों और वाहनों की नियमित चेकिंग करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि बीट और गश्त के दौरान आमजन से बेहतर संवाद बनाए रखना जरूरी है, ताकि लोगों का पुलिस पर भरोसा बढ़े और समय पर सूचना मिल सके। साथ ही किसी भी आपात स्थिति में त्वरित प्रतिक्रिया के लिए हमेशा तैयार रहने को कहा गया। अधिकारियों के अनुसार इस तरह की आकस्मिक चेकिंग आगे भी जारी रहेगी, ताकि फील्ड में तैनात पुलिस बल की मुस्तैदी बनी रहे और कानून-व्यवस्था सुदृढ़ बनी रहे।

अंतर्राष्ट्रीय नर्सेज डे सेवा, समर्पण व संवेदना का प्रतीक

लालगंज, रायबरेली। रघुवीर इंस्टीट्यूट आफ नर्सिंग एण्ड पैरामेडिकल साइंसेज लालगंज में आयोजित समारोह में बोलते हुए चेयरमैन रमेश दीक्षित ने कहा कि हर वर्ष 12 मई को मनाया जाने वाला अंतर्राष्ट्रीय नर्सेज डे आधुनिक नर्सिंग की जनक फ्लोरेंस नाइटिंगेल की जयंती को समर्पित है। सफेद यूनिफॉर्म में दिखने वाली नर्स केवल दवा देने वाली नहीं, बल्कि मरीज के लिए उम्मीद, हौसला और मां जैसी ममता का रूप होती हैं।

इंस्टिट्यूट की प्रबंध निदेशक डॉ मोनिका मिश्रा ने कहा कि कोरोना काल ने पूरी दुनिया को नर्सों के त्याग और साहस से परिचित कराया। दिन-रात पीपीई किट में, परिवार से दूर रहकर उन्होंने लाखों जिंदगियां बचाईं थी। आज भी अस्पताल का हर वार्ड, हर आईसीयू उनकी निःस्वार्थ सेवा का साक्षी रहता है। दर्द में मुस्कान देना, रोते को चुप कराना और अंतिम सांस तक मरीज का हाथ थामे रहना कृ यही नर्सिंग का धर्म है। नर्सें स्वास्थ्य व्यवस्था की रीढ़ हैं। जरूरत है कि हम उन्हें उचित सम्मान, सुरक्षा और सुविधाएं दें। डॉ मोनिका मिश्रा ने नर्सेज डे पर सभी को प्रेरित किया कि हर नर्स को ह्लसिस्टरह्व कहकर नहीं, बल्कि ह्लजीवनरक्षकह्व मानकर उनका आदर करना चाहिए, क्योंकि जहां डॉक्टर इलाज देते हैं, वहां नर्सें जीवन देती हैं। नर्सिंग डे के अवसर पर रघुवीर इंस्टिट्यूट में शिक्षा ग्रहण कर रहे विद्यार्थियों ने कैंडल लेकर फ्लोरेंस नाइटिंगेल की मूर्ति के सामने समाज सेवा की शपथ ली। इस अवसर पर इंस्टिट्यूट की बालिकाओं ने शानदार सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया। इंस्टिट्यूट के अध्यक्ष रमेश दीक्षित और प्रबंध निदेशक डॉक्टर मोनिका मिश्रा ने समाज के लोगों को सम्मानित भी किया। वहीं विद्यार्थियों और शिक्षकों को भी इंस्टिट्यूट की तरफ से पुरस्कृत किया गया। डॉ धर्मेंद्र सिंह, इंस्टिट्यूट के प्राचार्य विवेक कुमार, वाइस प्रिंसिपल फैजल खान और उनकी टीम के द्वारा मंच की बहुत सुंदर व्यवस्था की गई।इस अवसर पर शशांक दीक्षित, शुभ्रा दीक्षित, डॉक्टर मणिका दीक्षित, डॉक्टर मणि दीक्षित, राजेंद्र मिश्रा , लालगंज नगर पंचायत अध्यक्ष श्रीमती सरिता गुप्ता, दीपेंद्र गुप्ता, अंबुज दीक्षित ,प्रेम शंकर मिश्रा , महादेव दीक्षित, भाजपा नेता अनूप पांडे, अभिषेक शुक्ला ,नीरज दीक्षित, आलोक द्विवेदी, शशि कुमार मौर्य, रामकुमार यादव आदि मौजूद रहे।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में आईजीआरएस की बैठक

इटावा। जिलाधिकारी शुभ्रांत कुमार शुक्ल की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट स्थित नवीन सभागार में आईजीआरएस संबंधी बैठक आयोजित की गई। बैठक में जिलाधिकारी ने कहा कि शासन स्तर पर आईजीआरएस की रैंकिंग लगातार समीक्षा में रहती है, इसलिए सभी अधिकारियों को गंभीरता के साथ कार्य करना होगा। उन्होंने निर्देश दिए कि प्रत्येक प्रकरण में शिकायतकर्ता से अनिवार्य रूप से फीडबैक लिया जाए तथा डिफाल्टर प्रकरणों पर विशेष ध्यान दिया जाए, क्योंकि यह शासन की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल है। बैठक में जिला स्तरीय आईजीआरएस अधिकारियों की समीक्षा के दौरान पाया गया कि कृषि विभाग के 9 में से 8, वन विभाग के 8 में से 6, जिला विद्यालय निरीक्षक कार्यालय के 9 में से 6, खान निरीक्षक के 5 में 5, एआरटीओ के 4 में 4, पंचायत विभाग के 4 में 3, सिंचाई विभाग के 5 में 3, मुख्य चिकित्सा अधिकारी के 2 में 2 तथा बेसिक शिक्षा अधिकारी के 3 में 2 प्रकरणों में असंतोषजनक फीडबैक प्राप्त हुआ। वहीं लोक निर्माण विभाग के 5 में 1 तथा विद्युत विभाग के 3 में 1 प्रकरण में असंतोषजनक फीडबैक प्राप्त हुआ। बैठक में अपर जिलाधिकारी अभिनव रंजन श्रीवास्तव, वरिष्ठ कोषाधिकारी डोगरा शक्ति, उप कृषि निदेशक आरएन सिंह, डीएसटीओ रमेश चंद्र, जिला विद्यालय निरीक्षक अतुल सिंह, जिला विकास अधिकारी राकेश प्रसाद सहित समस्त संबंधित विभाग के अधिकारी उपस्थिति रहे।

संक्षेप

विनोद प्रताप कुंवर पुनः बने रालोद जिलाध्यक्ष

कुशीनगर । राष्ट्रीय लोक दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष जयंत चौधरी के निर्देशन में प्रदेश अध्यक्ष रामाशीष राय ने विनोद प्रताप कुंवर को पुनः रालोद का कुशीनगर जिलाध्यक्ष मनोनीत किया है। वर्ष 2027 में प्रदेश में होने वाले विधान सभा चुनावों को देखते हुए संगठन की मजबूती को लेकर प्रदेश अध्यक्ष द्वारा महत्वपूर्ण कदम उठाए जा रहे हैं। इसी क्रम में प्रदेश नेतृत्व द्वारा पुराने सहयोगी कुशल संगठनकर्ता कसया तहसील क्षेत्र के भैंसहा निवासी विनोद प्रताप कुंअर सिंह पर भरोसा जताते हुए पुनः जिला अध्यक्ष मनोनीत किया गया है। श्री सिंह के मनोनयन पर उत्तर प्रदेश सरकार के मंत्री अनिल कुमार, प्रदेश सचिव सिया शरण पांडेय, भगवान दयाल विश्वकर्मा, गणेश प्रसाद, सुरेश शाही, शिवचरण सिंह, पुर्व विधायक मनिषा पांडेय, सीताराम मौर्या, हरी कसेरा सहित रालोद पदाधिकारी और कार्यकताओं ने खुशी व्यक्त करते हुए बधाई दी है।

सरयू पुल पर सुसाइड नोट और सामान छोड़कर लौटा युवक, छह घंटे तक चला तलाश अभियान

देवरिया । देवरिया जिले में सरयू नदी के पुल पर सुसाइड नोट, चप्पल और आधार कार्ड मिलने के बाद पुलिस ने सोमवार को कई घंटे तक एक युवक की तलाश की, लेकिन बाद में वह अपने घर पर सकुशल मिला। पुलिस ने यह जानकारी दी।

पुलिस के अनुसार, भगलपुर क्षेत्र में सुबह टहलने निकले ग्रामीणों ने पुल की रेलिंग के पास एक सुसाइड नोट, चप्पल और आधार कार्ड पड़े देखे और इसकी सूचना पुलिस को दी आधार कार्ड के आधार पर युवक की पहचान मईल थानाक्षेत्र के भटौली गांव के 22 वर्षीय अयोध्या राजभर के रूप में हुई। सुसाइड नोट मिलने के बाद पुलिस को आशंका हुई कि अयोध्या राजभर ने सरयू नदी में छलांग लगा दी होगी। उसके बाद पुलिस और स्थानीय लोगों ने नदी तथा आसपास के इलाके में करीब छह घंटे तक तलाशी अभियान चलाया। पुलिस ने बताया कि अयोध्या राजभर तीन दिन पहले काम के सिलसिले में मुंबई जाने की बात कहकर घर से निकला था। तलाशी के दौरान परिजनों में अनहोनी की आशंका बनी रही। हालांकि बाद में सूचना मिली कि अयोध्या राजभर सकुशल अपने घर लौट आया है। पुलिस ने उसके घर पहुंचकर पूछताछ की। पूछताछ में अयोध्या राजभर ने बताया कि वह तनाव के कारण घर छोड़कर चला गया था। उसने गुस्से और हताशा में पुल पर सुसाइड नोट, चप्पल और आधार कार्ड छोड़ दिए थे ताकि लोगों को लगे कि उसने नदी में छलांग लगा दी है, लेकिन बाद में उसने अपना इरादा बदल दिया और घर लौट आया। मईल के थाना प्रभारी संतोष सिंह ने बताया कि युवक का बयान दर्ज कर लिया गया है और मामले की जांच की जा रही है।

3 मासूमों की मौत के बाद सवालों के घेरे में पंकज ईंट उद्योग

- **जिले में ईंट भट्ठे के लाइसेंस से लेकर सुरक्षा मानकों की उठी जांच की मांग**

कुशीनगर । जनपद के कसया थाना क्षेत्र के ग्राम सभा मैनपुर के टोला दीनापट्टी स्थित पंकज ईंट उद्योग (आरएम मार्का ईंट) पर शनिवार को तीन मासूम बच्चों की हुई दर्दनाक मौत ने पूरे जिले को झकझोर कर रख दिया है। सबब यह है कि यह हादसा अब केवल डूबने की घटना भर नहीं रह गया है। हादसे के बाद पंकज ईंट उद्योग सहित जिले के अन्य ईंट भट्ठों की कार्यप्रणाली, सुरक्षा इंतजाम, विभागीय अनुमति और कानूनी दस्तावेजों को लेकर गंभीर सवाल खड़े होने लगे हैं। लोगों का कहना है कि यदि भट्ठे पर सुरक्षा मानकों का पालन हुआ होता तो तीन मासूम असमय काल के गाल में नहीं समाते।

बताते कि ईंट निर्माण के लिए बड़े पैमाने पर मिट्टी की खुदाई की जाती है। नियमानुसार खुदाई के बाद बने गहरे गड्ढों की सुरक्षा, घेराबंदी और समतलीकरण जरूरी होता है, ताकि कोई हादसा न हो। लेकिन मैनपुर स्थित पंकज ईंट उद्योग पर मिट्टी खनन के बाद बने गहरे गड्ढे खुले छोड़ दिए गए। नतीजतन बरसात का पानी भरने के बाद यह गड्ढा मौत का तालाब बन गया और उसी में तीन मासूम समा गए। अब सवाल यह है कि आखिर भट्ठा संचालक किन नियमों के तहत काम कर रहे थे? क्या मिट्टी खनन के लिए वैध अनुमति ली गई थी? क्या खनन विभाग ने खुदाई की सीमा और सुरक्षा मानकों की जांच की थी? क्या प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड से एनओसी जारी है ? क्या श्रम विभाग में मजदूरों का पंजीकरण था? क्या वहां मजदूर परिवारों और बच्चों की सुरक्षा के लिए कोई व्यवस्था की गयी थी? इन सवालों ने प्रशासनिक सिस्टम को भी कटघरे में खडा कर दिया है।

जानकार बताते हैं कि किसी भी ईंट भट्ठे के संचालन के लिए कई विभागीय की अनुमतियां आवश्यक होती हैं। इनमें प्रमुख रूप से प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की एनओसी, खनन विभाग की अनुमति, राजस्व विभाग से भूमि संबंधी स्वीकृति, श्रम विभाग में मजदूरों का पंजीकरण, जीएसटी एवं व्यवसायिक दस्तावेज, अग्निशमन विभाग की अनापत्ति और पर्यावरणीय मानकों का पालन मुख्य रूप शामिल होता है। साथ ही मजदूरों की सुरक्षा, बाल सुरक्षा, पानी भरे गड्ढों की बैरिकेडिंग और चेतावनी बोर्ड लगाना भी जरूरी होता है। लेकिन जिस स्थान पर यह हादसा हुआ, वहां न कोई सुरक्षा घेरा दिखा, न चेतावनी बोर्ड और न ही कोई ऐसा इंतजाम जिससे बच्चों को खतरनाक गड्ढे के पास जाने से रोका जा सके। यही वजह है कि ईंट भट्ठों की निगरानी में प्रशासनिक लापरवाही और भट्ठा संचालकों की मनबढई को देखते हुए लोगों में आक्रोश है। ग्रामीणों का आरोप है कि जिले में तमाम ईंट भट्ठें पर नियम सिर्फ कागजों में चल रहे हैं, जमीन पर कुछ नहीं है, सबसे दर्दनाक पहलू यह है कि जिन मजदूर परिवारों ने पेट पालने के लिए अपना घर-गांव छोड़कर कुशीनगर का रुख किया था, उन्हीं के मासूम बच्चे लापरवाही की भेंट चढ़ गए। घटना के बाद परिजनों की चीखें सुन हर किसी की आंखें नम हो गईं। मासूम बच्चों का शव जब पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया तो पूरा माहौल गमगीन हो उठा।

डीएम ने भले ही पांच सदस्यीय जांच समिति गठित कर दी हो और मृतकों के परिजनों को सहायता राशि देने की घोषणा की हो, लेकिन तीन मासूम बच्चों की मौत के बाद अब जांच केवल हादसे तक सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि ईंट भट्ठे के संचालन से जुड़े हर पहलू की गहनता से जांच पड़ताल जरूरी है। सूत्रों का दावा है कि बिना किसी प्रभाव में आये प्रशासन द्वारा गंभीरता से निष्पक्ष जांच की जाती है तो निसंदेह कई चौंकाने वाले तथ्य सामने आ सकते है। अब देखना दिलचस्प होगा कि डीएम द्वारा गठित जांच टीम की जांच सिर्फ हादसे तक सीमित रहती है या फिर भट्ठे के लाइसेंस, खनन अनुमति, श्रम कानून, सुरक्षा मानकों के साथ साथ विभागीय मिलीभगत के गिरेहवान तक भी पहुंचती है? क्योंकि यह सार्वजनिक होना जरूरी है कि आखिर तीन मासूमों की मौत का जिम्मेदार सिर्फ पानी से भरा गड्ढा है, या फिर नियमों को ताक पर रखकर चल रही पूरी व्यवस्था?

तेल की बचत करें सोना खरीदने में संयम बरतें : दीपक

इटावा । भारतीय उद्योग व्यापार मंडल के जिलाध्यक्ष दीपक गुप्ता ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की देश हित में तेल उपयोग को सीमित करने व सोने खरीद से परहेज करने की अपील को व्यवहारिक बताते हुए कहा कि आज विश्व में भारतीय अर्थव्यवस्था को गतिशील बनाए रखने के लिए और देश को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए हमें तेल के उपयोग को काम करने की और सोना खरीद को कम करने की आवश्यकता है। प्रधानमंत्री की यह टिप्पणी ऐसे वक्त में सामने आई है जब खाड़ी युद्ध में ईरान-अमेरिका व पश्चिमी देशों के बीच युद्ध का खतरा लगातार गहराता जा रहा है। इस युद्ध के लम्बे चलने के आसार नजर आ रहे है इस युद्ध का असर भारतीय अर्थव्यवस्था पर ना पड़े इसके लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देशवासियों से कड़ा फैसला करने के लिए संयम बरतने की सलाह दी है। क्योंकि भारत का बहुत बड़ा विदेशी आयात तेल, सोना-चांदी व अन्य तकनीकी उत्पादों को खरीदने में खर्च होता है। तेल बचत के लिए हमें अनावश्यक यात्राओं से बचना होगा। सार्वजनिक परिवहन या शेयरिंग वाहनों का प्रयोग करना होगा। विदेश यात्रा भी यदि आवश्यक न हो तो बचना चाहिए। स्वर्ण आभूषण खरीदने में भी संयम आवश्यक है।

एसपी ने कराया ऑनलाइन स्व-गणना पंजीकरण

देवरिया । जनपद में चल रहे जनगणना-2027 के प्रथम चरण के अंतर्गत जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी के नेतृत्व एवं मुख्य विकास अधिकारी राजेश कुमार सिंह के निर्देशन में स्व-गणना अभियान लगातार संचालित किया जा रहा है। इसी क्रम में अपर जिलाधिकारी (वित्त एवं राजस्व) एवं जनगणना प्रभारी रामशंकर ने पुलिस अधीक्षक अभिजीत आर. शंकर की ऑनलाइन स्व-गणना कराई। इस दौरान पुलिस अधीक्षक अभिजीत आर. शंकर ने स्व-जनगणना को महत्वपूर्ण बताते हुए आमजन से इसमें बढ़-चढ़कर सहभागिता करने की अपील की। उन्होंने कहा कि सभी लोगों को स्वयं अपनी स्व-गणना अवश्य करानी चाहिए। इससे आगामी दिनों में जनगणना के द्वितीय चरण के दौरान गणनाकर्मियों को भी सुविधा होगी। उन्होंने कहा कि स्व-गणना के बाद प्राप्त आईडी को सुरक्षित रखें तथा गणनाकर्मी के आने पर उन्हें उपलब्ध कराएं, जिससे जनगणना प्रक्रिया सरल एवं सुगम तरीके से पूरी की जा सके। अपर जिलाधिकारी (वित्त एवं राजस्व) एवं जनगणना प्रभारी रामशंकर ने बताया कि स्व-गणना का प्रथम चरण 7 मई से प्रारंभ होकर 21 मई तक संचालित किया जाएगा। उन्होंने लोगों से अपील की कि अधिक से अधिक लोग ऑनलाइन स्व-गणना कर इस महत्वपूर्ण अभियान को सफल बनाने में सहयोग करें। उन्होंने कहा कि स्व-गणना की सुविधा से आमजन को काफी सहूलियत होगी तथा जनगणना कार्य भी अधिक व्यवस्थित एवं सुगमता से संपन्न कराया जा सकेगा।

टीबी के प्रति किया जागरूक

देवरिया । पथरदेवा ब्लॉक के आयुष्मान आरोग्य मंदिर, गरीब पट्टी से संबद्ध आंगनबाड़ी केंद्र पर मंगलवार को पेसेंट स्टेकहोल्डर प्लेटफॉर्म के सहयोग से टीबी एवं संचारी रोग जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। साथ ही फाइलेरिया मरीजों के लिए एमएमडीपी (मॉर्बिडिटी मैनेजमेंट एंड डिसएबिलिटी प्रिवेंशन) प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। कार्यक्रम में समुदाय से आए लोगों को टीबी सहित विभिन्न संचारी रोगों के प्रति जागरूक किया गया। इस दौरान टीबी से संबंधित वीडियो के माध्यम से लोगों को बीमारी के लक्षण, बचाव एवं उपचार की जानकारी दी गई। आयुष्मान आरोग्य मंदिर गरीब पट्टी में सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी के नेतृत्व में ग्राम प्रधान, एएनएम, शिक्षक, कोटेदार, आशा, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, सहायिका एवं फाइलेरिया मरीजों के सहयोग से पीएसपी का गठन किया गया है। इसी मंच के माध्यम से जागरूकता कार्यक्रम आयोजित कर लोगों को स्वास्थ्य संबंधी जानकारी दी गई। कार्यक्रम में एएनएम रीता यादव ने बताया कि यदि किसी व्यक्ति को दो सप्ताह से अधिक समय तक खांसी, भूख न लगना, लगातार बुखार रहना, बलगम में खून आना, कमजोरी महसूस होना या वजन कम होने जैसी समस्याएं हों तो उसे तुरंत टीबी की जांच करानी चाहिए। उन्होंने कहा कि टीबी की जांच एवं उपचार सरकारी स्वास्थ्य केंद्रों पर पूरी तरह निशुल्क उपलब्ध है। नियमित रूप से छह माह तक दवा का सेवन करने से टीबी का मरीज पूरी तरह स्वस्थ हो सकता है। टीबी के फैलने का प्रमुख कारण लोगों द्वारा शुरूआती लक्षणों को गंभीरता से न लेना एवं समय पर जांच न कराना है। कार्यक्रम में बुखार, खांसी, फाइलेरिया, मलेरिया, चिकनगुनिया, कालाजार एवं डेंगू जैसी संचारी बीमारियों से बचाव के उपायों की भी जानकारी दी गई। लोगों को स्वच्छ एवं शुद्ध पानी पीने, खुले में शौच न करने, घर के आसपास पानी जमा न होने देने तथा भोजन से पहले साबुन से हाथ धोने के लिए प्रेरित किया गया। फाइलेरिया मरीजों को प्रभावित अंगों की सफाई एवं देखभाल के संबंध में एमएमडीपी प्रशिक्षण दिया गया। जागरूकता शिविर में बीपीएम नागेंद्र मल्ल, डीसीजी सदस्य, प्रधान नवल किशोर, फाइलेरिया मरीज पंचमी सिंह, सहयोगी संस्था सीफार के जिला प्रतिनिधि नीरज सहित पीएसपी सदस्य, शिक्षक, आशा, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, सहायिका, फाइलेरिया मरीज एवं ग्रामीण मौजूद रहे।

स्व-जनगणना में देवरिया प्रदेश में 16वें स्थान पर

- **जनपद न्यायाधीश ने कराया ऑनलाइन पंजीकरण**

देवरिया । डीएम मधुसूदन हुल्गी एवं सीडीओ राजेश कुमार सिंह के नेतृत्व में संचालित स्व-जनगणना अभियान में जनपद देवरिया को प्रदेश स्तर पर 16वां स्थान प्राप्त हुआ है। लगातार बढ़ रही जनभागीदारी के चलते जनपद स्व-जनगणना अभियान में तेजी से प्रगति कर रहा है। अभियान के तहत एडीएम एवं जनगणना प्रभारी रामशंकर ने जनपद न्यायाधीश, प्रमुख न्यायाधीश परिवार न्यायालय व मोटर दुर्घटना दावा अधिकरण के न्यायाधीश से मुलाकात कर उनकी ऑनलाइन स्व-जनगणना कराई। स्व-जनगणना पूर्ण होने के उपरांत पोर्टल के माध्यम से जनरेटेड आईडी भी प्राप्त हुई। एडीएम रामशंकर ने बताया कि स्व-जनगणना की व्यवस्था आमजन की सुविधा को ध्यान में रखते हुए लागू की गई है। उन्होंने कहा कि यदि गणनाकर्मी के घर पहुंचने के समय कोई व्यक्ति घर पर उपस्थित नहीं रहता अथवा किसी कार्य में व्यस्त रहता है, तो ऐसी स्थिति में स्व-जनगणना की सुविधा बेहद उपयोगी साबित होगी। इससे जनगणना कार्य सरल व सुगम तरीके से संपन्न हो सकेगा। उन्होंने जनसामान्य से अपील करते हुए कहा कि इस महत्वपूर्ण कार्य में सभी लोग बढ़-चढ़कर अपनी सहभागिता निभाएं तथा स्वयं ऑनलाइन स्व-जनगणना कर जनगणना कार्य को आसान एवं सुविधाजनक बनाने में सहयोग करें। उन्होंने कहा कि इस अभियान की सफलता में आमजन की भागीदारी अत्यंत महत्वपूर्ण है। एडीएम ने लोगों से अपने आसपास एवं पड़ोस के लोगों को भी स्व-जनगणना के प्रति जागरूक करने की अपील की। उन्होंने बताया कि स्व-जनगणना की प्रक्रिया मोबाइल फोन के माध्यम से भी आसानी से पूरी की जा सकती है। उन्होंने कहा कि स्व-जनगणना के बाद प्राप्त आईडी को सुरक्षित रखें तथा जब गणनाकर्मी घर पहुंचे तो उन्हें उक्त आईडी उपलब्ध कराएं। इससे गणनाकर्मी परिवार की जनगणना प्रक्रिया को आसानी एवं शीघ्रता से पूरा कर सकेंगे। एडीएम (वित्त एवं राजस्व) ने अभियान की प्रगति की जानकारी देते हुए बताया कि 7 मई को 639 लोगों द्वारा स्व-जनगणना कराए जाने से जनपद की प्रगति 84.35% रही। इसके बाद 8 मई को 1290 लोगों ने स्व-जनगणना कराई, जिससे उपलब्धि बढ़कर 86.35% हो गई। वहीं 9 मई को 2390 लोगों द्वारा स्व-जनगणना किए जाने के बाद प्रगति 87.59% तक पहुंच गई। उन्होंने बताया 10 मई को 4800 लोगों द्वारा स्व-जनगणना कराए जाने के बाद जनपद ने 91.47 प्रतिशत उपलब्धि हासिल की। इसी क्रम में 11 मई को 10 हजार लोगों द्वारा स्व-जनगणना किए जाने के साथ जनपद ने 94 प्रतिशत लक्ष्य प्राप्त कर लिया।

निरंकारी इंटर कॉलेज की छात्राओं ने नुक्कड़ नाटक में स्वच्छता का दिया संदेश

कुशीनगर । नगर पालिका परिषद कुशीनगर द्वारा संचालित स्वच्छता जागरूकता अभियान के क्रम में नगर में निरंकारी इंटर कालेज की छात्राओं ने नुक्कड़ नाटक एवं रोल प्ले के माध्यम से स्वच्छता का संदेश दिया। मंगलवार को गैर सरकारी संगठन सीटी यानो डे सोल्यूशन प्रालि एसबीए की टीम आईसी एवं नगर पालिका परिषद कुशीनगर द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित कार्यक्रम में निरंकारी इंटर कालेज के प्रधानाचार्य एके चौरसिया, शिक्षक मनोज चौरसिया के निर्देशन में छात्राओं अंकिता सिंह, शबनम, पायल, खुशी, खुशी कुशवाहा एवं दिव्या मद्धेशिया ने शानदार प्रस्तुति देकर लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया। छात्राओं ने अपने अभिनय के माध्यम से गीले एवं सूखे कचरे को अलग-अलग रखने, सार्वजनिक स्थानों पर कूड़ा न फैलाने तथा स्वच्छ वातावरण बनाए रखने का संदेश दिया। इस दौरान आई ई सी टीम के सदस्य विकास जाटू, सचिन यादव एवं रोशनी आरा, एसबीए इन्वायरो टेक प्राइवेट लिमिटेड के साइड इंचार्ज अजय कुमार द्विवेदी मौजूद रहे। उपस्थित लोगों ने छात्राओं की प्रस्तुति की सराहना करते हुए स्वच्छता अभियान को सफल बनाने का संकल्प लिया।

डीएम की अध्यक्षता में हुई पोषण समिति की बैठक

- **निजी भवनों में संचालित न हों आंगनबाड़ी केंद्र, तीन माह में सरकारी संस्थाओ में संचालन की हो व्यवस्था : डीएम**

देवरिया । डीएम मधुसूदन हुल्गी की अध्यक्षता में मंगलवार को कलेक्ट्रेट सभागार में जिला स्तरीय पोषण समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में बाल विकास विभाग द्वारा संचालित पोषण कार्यक्रमों एवं विभिन्न गतिविधियों की समीक्षा करते हुए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। डीएम ने बाल विकास एवं स्वास्थ्य विभाग से जुड़े अधिकारियों, आशा कार्यकताओं, आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों एवं एएनएम को निर्देशित किया कि पोषण कार्यक्रमों का संचालन पूरी तन्मयता एवं टीम भावना के साथ किया जाए। उन्होंने कहा कि कुपोषण मुक्त जनपद बनाने के लिए सभी विभाग समन्वय स्थापित कर कार्य करें तथा योजनाओं का लाभ पात्र लाभार्थियों तक समय से पहुंचाना सुनिश्चित करें।

उन्होंने निर्देश दिया कि आशा, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता एवं एएनएम संयुक्त रूप से घर-घर जाकर बच्चों, गर्भवती महिलाओं एवं धात्री माताओं के स्वास्थ्य एवं पोषण की जानकारी लें तथा आवश्यक परामर्श उपलब्ध कराएं। डीएमने कहा कि फील्ड स्तर पर समन्वित प्रयासों से ही पोषण अभियान को प्रभावी बनाया जा सकता है। बैठक के दौरान डीएम ने स्पष्ट निर्देश दिए कि कोई भी आंगनबाड़ी केंद्र निजी भवन अथवा निजी स्थान पर संचालित नहीं होना चाहिए। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि आगामी तीन माह के भीतर सभी आंगनबाड़ी केंद्रों को सरकारी भवनों अथवा सरकारी संस्थानों में संचालित कराया जाना सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि आंगनबाड़ी केंद्रों पर नियमित रूप से पोषण संबंधी गतिविधियां संचालित की जाएं तथा बच्चों की स्वास्थ्य जांच एवं वजन मापन कार्य में विशेष सतर्कता बरती जाए। कुपोषित एवं अति कुपोषित बच्चों की नियमित मॉनिटरिंग करते हुए उनके स्वास्थ्य में सुधार के लिए प्रभावी प्रयास किए जाएं।

जनेश्वर तिवारी 'अनुभवी' की कृति आत्मोद्गार का लोकार्पण

लखनऊ । राजधानी लखनऊ के एक प्रतिष्ठित होटल में श्री जनेश्वर तिवारी 'अनुभवी' द्वारा रचित कविता संग्रह 'आत्मोद्गार' का लोकार्पण प्रख्यात कवि, साहित्यकार और पूर्व पुलिस महानिदेशक महेश चन्द्र द्विवेदी ने किया। इस अवसर पर अनुभवी जी ने अपनी पुस्तक पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इससंग्रह की हर कविता अमृततुल्य है, जो भी इसका अध्ययन करेगा, मनन करेगा और तदनुरूप जीवन जीने का प्रयास करेगा, उसका जीवन धन्य हो जाएगा। हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड के राजभाषा अधिकारी संजय पांडेय ने कहा कि अनुभव जी की पुस्तक का शीर्षक आत्मोद्गार है। मतलब मेरे उद्गार। इससे कोई सहमत हो या न हो। उन्होंने कहा कि अनुभवी जी सुधी रचनाकार हैं। मेरी कामना है कि वे शतायु हों और इसी तरह रचनाओं का सृजन करते रहें। इस अवसर पर डॉ. अनूप मोहन बाला, श्रीधर अग्निहोत्री, सियाराम पांडेय 'शांत', श्रीधर अग्निहोत्री, उद्योगपति राजीव कुमार पांडेय प्रभृति तमाम गणमान्य कवि, लेखक उपस्थित रहे।

14 व 15 को लगेगा दो दिवसीय रोजगार मेला

देवरिया । प्रभारी जिला सेवायोजन अधिकारी रोहन अपूर्व सिन्हा ने बताया कि भारत सरकार एवं उत्तर प्रदेश शासन की मंशा के अनुरूप बेरोजगार युवाओं की रोजगार क्षमता बढ़ाने के उद्देश्य से जिला सेवायोजन कार्यालय एवं मॉडल करियर सेंटर, देवरिया के संयुक्त तत्वावधान में 14 एवं 15 मई 2026 को पूर्वाह्न 10 बजे से जिला सेवायोजन कार्यालय, जीआईटीआई कैंपस देवरिया परिसर में दो दिवसीय रोजगार मेले का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि रोजगार मेले में निजी क्षेत्र की प्रतिष्ठित संस्था उत्कर्ष स्मॉल फाइनेंस बैंक द्वारा विभिन्न पदों पर अभ्यर्थियों का साक्षात्कार के माध्यम से चयन किया जाएगा। रोजगार मेले में ट्रेनी क्रेडिट ऑफिसर के 40 पदों पर भर्ती की जाएगी, जिसके लिए आयु सीमा 18 से 32 वर्ष तथा शैक्षिक योग्यता इंटरमीडिएट एवं स्नातक निर्धारित की गई है। वहीं ट्रेनी क्रेडिट रिलेशनशिप ऑफिसर (बिजनेस लोन) के 10 पदों हेतु आयु सीमा 18 से 32 वर्ष तथा शैक्षिक योग्यता स्नातक रखी गई है। इसके अतिरिक्त ट्रेनी क्रेडिट कलेक्शन ऑफिसर के 25 पदों पर भर्ती के लिए आयु सीमा 18 से 32 वर्ष एवं शैक्षिक योग्यता इंटरमीडिएट तथा स्नातक निर्धारित है। ट्रेनी क्रेडिट कस्टमर सर्विस ऑफिसर (कैशियर) के 10 पदों हेतु आयु सीमा 18 से 28 वर्ष तथा शैक्षिक योग्यता स्नातक के साथ छह माह का कंप्यूटर प्रमाणपत्र अनिवार्य किया गया है। सभी पदों के लिए वेतनमान 10,476 रुपये से 16,113 रुपये तक निर्धारित किया गया है। इसके अतिरिक्त इंसेंटिव एवं फ्यूल चार्ज भी देय होगा। प्रभारी जिला सेवायोजन अधिकारी ने बताया कि इच्छुक अभ्यर्थी सेवायोजन पोर्टल पर रिक्तियों का अवलोकन कर अपनी योग्यता एवं रुचि के अनुसार आवेदन कर सकते हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि रोजगार मेला पूर्णतः निशुल्क है। रोजगार मेले में प्रतिभाग करने वाले अभ्यर्थियों को किसी प्रकार का भत्ता अथवा मार्ग व्यय देय नहीं होगा।

अब घर बैठे ऑनलाइन मिलेगी खतौनी की प्रमाणित प्रति

देवरिया । उत्तर प्रदेश राजस्व परिषद के निर्देश पर खतौनी की प्रमाणित प्रति प्राप्त करने की प्रक्रिया को पूर्णतः ऑनलाइन कर दिया गया है। मुख्य राजस्व अधिकारी वीके सिंह ने बताया कि ई-गवर्नेंस एवं डिजिटल इंडिया की संकल्पना के अनुरूप अब भूमिधर एवं आमजन घर बैठे ऑनलाइन माध्यम से खतौनी की प्रमाणित प्रति प्राप्त कर सकेंगे। उन्होंने बताया कि राजस्व परिषद द्वारा संचालित भूलेख पोर्टल पर पहले से ही खतौनी की प्रति ऑनलाइन एवं रियल टाइम उपलब्ध कराई जा रही थी। अब नई व्यवस्था लागू होने के बाद आवेदक किसी भी समय एवं किसी भी स्थान से ऑनलाइन शुल्क का भुगतान कर खतौनी की प्रमाणित प्रति डाउनलोड कर सकेंगे। मुख्य राजस्व अधिकारी ने बताया इस व्यवस्था के लागू होने से तहसीलों में अनावश्यक भीड़ एवं जनदबाव कम होगा। साथ ही भूमिधरों के समय, श्रम एवं संसाधनों की भी बचत होगी। यह सुविधा पूरी तरह 247 उपलब्ध रहेगी। उन्होंने बताया कि खतौनी की प्रमाणित प्रति प्राप्त करने के लिए आवेदक को सबसे पहले राजस्व विभाग की आधिकारिक वेबसाइट भूलेख पोर्टल https://bor.up.nic.in/ पर लॉगिन करना होगा। इसके बाद मुख्य पृष्ठ पर उपलब्ध खतौनी की नकल विकल्प पर क्लिक कर जनपद, तहसील व ग्राम का चयन करना होगा। संबंधित गाटा संख्या चुनने के बाद खतौनी का विवरण देखा जा सकेगा। ऑनलाइन भुगतान के लिए क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड, यूपीआई व क्यूआर कोड स्कैन सहित विभिन्न विकल्प उपलब्ध रहेंगे। आवेदक 15 रुपये शुल्क का ऑनलाइन भुगतान कर किसी भी गाटा संख्या की खतौनी की प्रमाणित प्रति डाउनलोड कर सकेंगे। सीडीओ ने बताया कि नई व्यवस्था से आमजन को तहसील कंप्यूटर केंद्र या कॉमन सर्विस सेंटर के चक्कर नहीं लगाने पड़ेंगे तथा उन्हें घर बैठे डिजिटल सुविधा का लाभ प्राप्त होगा।

यूपी में आसाम व प.बंगाल से बड़ी जीत की तैयारी करें

कुशीनगर । भाजपा तुर्क पट्टी मंडल की संगठनात्मक बैठक मंगलवार को सूर्य-मंदिर परिसर में आयोजित हुई। जिसमें संगठन को बूथ स्तर तक मजबूत करने और सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को आमजन तक पहुंचाने पर चर्चा की गई। मुख्य अतिथि जिला महामंत्री विवेकानंद शुक्ल ने कार्यकताओं को बूथ स्तर तक संगठन को मजबूत बनाने और जिम्मेदारी से अपने कार्यों का निर्वहन करने का आह्वान करते हुए कहा कि भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता हमेशा जनता के बीच रहते हुए उनके सुख-दुख में सहभागी रहते हैं। इसी का प्रतिफल है कि हाल ही में पश्चिम बंगाल, आसाम और पुण्डुचेरी में हमारी ऐतिहासिक विजय हुई है। जिला महामंत्री ने कहा कि अति उत्साह में न रहें बल्कि 2027 में उत्तर प्रदेश में आसाम और पश्चिम बंगाल से बड़ी जीत दर्ज करने की तैयारी करें। सभी बूथों को मजबूत बनाएं। उन्होंने

राष्ट्रीय नेतृत्व द्वारा तय किए गए मासिक बैठकों व कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए बताया कि पहले सप्ताह में मंडल पदाधिकारी, दूसरे में जिला पदाधिकारी, तीसरे में शक्ति केंद्र और अंतिम सप्ताह में प्रधानमंत्री के मन की बात कार्यक्रम को सुना जाएगा। साथ ही, बूथ बैठकों में आगामी चुनावों की रणनीति पर चर्चा होगी। जिला मंत्री कन्हैया शर्मा ने मण्डल पदाधिकारी, शक्ति केंद्र संयोजकों से आग्रह किया कि बूथ कार्यकारिणी से निरंतर संपर्क बनाए रखने केसाथ ही, हर कार्यक्रम की तस्वीरें सरल ऐप पर अपलोड करने में सहयोग करें। मण्डल अध्यक्ष महेन्द्र शर्मा ने बैठक की अध्यक्षता व आभार व्यक्त किया तथा संचालन मण्डल महामंत्री लल्लन कुशवाहा ने किया। इस अवसर पर युवा मोर्चा जिला संयोजक शैलेन्द्र तिवारी, पूर्व मण्डल अध्यक्ष विद्ययाघर सोझा, राजेन्द्र यादव, प्रसाद पाण्डेय, अनिल निर्मल, अशोक तिवारी, अनिरुध दूबे, अजय शाही, वसन्त पटेल, विपीन सिंह, उपेन्द्र सिंह आदि उपस्थित थे।

सनातन को गाली देने वालों का जल्द होगा तर्पण : रामदेव

वाराणसी । योग गुरु बाबा रामदेव ने मंगलवार को वाराणसी में आयोजित सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के दौरान सनातन धर्म और भारतीय संस्कृति को लेकर कहा कि जिन्होंने सनातन को गालियां दीं, उनकी अंत्येष्टि तो हो ही गई है, श्राद्ध और तर्पण भी अब जल्दी हो जाएगा। काशी हिंदू विश्वविद्यालय में आयोजित आध्यात्मिक संगोष्ठी में बाबा रामदेव ने कहा कि भगवान शिव सनातन शक्ति के केंद्र बिंदु हैं। उन्होंने कहा कि शिव आदि देव, महादेव, आदि योगी और महायोगी हैं तथा सोमनाथ स्वाभिमान पर्व केवल शिव का गौरव पर्व नहीं बल्कि शिवत्व, रामत्व, कृष्णत्व और सनातन संस्कृति की आत्मा का उत्सव है।

चलती कार बनी आग का गोला, बाल-बाल बचे सवार

कसया, कुशीनगर । थाना क्षेत्र के बनवारी टोला चौराहे के समीप मंगलवार शाम उस समय अफरा-तफरी मच गई, जब एक चलती कार में अचानक आग लग गई। देखते ही देखते कार आग का गोला बन गई। घटना को देखकर मौके पर भारी संख्या में लोग जुट गए और आग बुझाने का प्रयास शुरू कर दिया। मिली जानकारी के अनुसार मंगलवार शाम एक कार बनवारी टोला चौराहे के पास पहुंची ही थी कि उसमें अचानक आग लग गई। आग लगते ही कार में सवार लोगों ने किसी तरह बाहर निकलकर अपनी जान बचाई। गनीमत रही कि इस हादसे में कोई हताहत नहीं हुआ और सभी सवार बाल-बाल बच गए। घटना की सूचना मिलने पर स्थानीय पुलिस मौके पर पहुंची और मामले की जानकारी ली। आग लगने के कारणों का पता लगाया जा रहा है।

गिग वर्कर्स की चुनौतियां

प्रौद्योगिकी आधारित अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ रही है। इसमें बड़ी संख्या में युवाओं को रोजगार मिल रहा है लेकिन इन रोजगार की सबसे खतरनाक प्रवृत्ति यह है कि इसमें कम आमदनी, सामाजिक सुरक्षा का अभाव और अत्यधिक प्रतिस्पर्धा जैसी स्थितियों के कारण ई-कॉमर्स, लॉजिस्टिक्स, क्विक कॉमर्स, फूड डिलीवरी और टैक्सी जैसी तमाम सेवाओं में लगे गिग वर्कर्स को चौतरफा शोषण का शिकार होना पड़ता है। इन्हीं चुनौतियों के मद्देनजर बीते साल के अंत में गिग कर्मियों और विभिन्न प्लेटफॉर्म्स के लिए काम करने वाले कामगारों के एक वर्ग द्वारा मेहनताने और काम के हालात को लेकर की गई हड़ताल ने क्विक कॉमर्स और फूड डिलिवरी कंपनियों को अपने कारोबारी मॉडल को नये सिरे से तैयार करने का अवसर प्रदान किया है। गिग कर्मचारियों की मांगें बुनियादी थीं। इनमें न्याय संगत और पारदर्शी वेतन, 10 मिनट में सामान की आपूर्ति करने पर प्रतिबंध तथा अधिसूचित श्रम संहिताओं के अनुरूप वेतन और लाभों का समायोजन करना शामिल था। कुछ

मांगे मसलन दस मिनट में डिलीवरी को कंपनियों ने बंद किया। बीते कुछ सालों में क्विक कॉमर्स का तेजी से विस्तार हुआ है और गिग तथा प्लेटफॉर्म श्रमिकों की मांग में भारी इजाफा होने की संभावना है। नीति आयोग का अनुमान है कि राइड शेयरिंग, डिलीवरी, लॉजिस्टिक्स और पेशेवर सेवाओं जैसे क्षेत्रों में कार्यरत कामगारों की संख्या एक करोड़ तक हो चुकी है। वर्ष 2029-30 तक यह बढ़कर 2.3 करोड़ तक पहुंच सकती है। दूसरे शब्दों में कहें तो अर्थव्यवस्था का यह खंड युवाओं के लिए रोजगार का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र बनने की क्षमता रखता है। इसके बावजूद यह तेजी से स्पष्ट होता जा रहा है कि उनके काम करने के हालात को आदर्श नहीं माना जा सकता है। पहली बात तो यही कि क्विक कॉमर्स तेजी से एक ऐसा व्यापार मॉडल बनता जा रहा है जो ट्रैफिक नियमों को तोड़ने पर आधारित है। उपभोक्ताओं तक पहुंचने की प्रतिस्पर्धी होड़ ने एक ऐसी संरचना बना दी है जो डिलिवरी पार्टनर्स को तेज रफ्तार से गाड़ी चलाने, ट्रैफिक नियमों की अनदेखी करने और न केवल खुद को बल्कि आम जनता को भी खतरे में डालने के लिए मजबूर करती है। डिलिवरी समय-सीमा और सड़क सुरक्षा के बीच संबंध को साबित करने के लिए आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं, लेकिन समस्या इतनी गंभीर हो गई थी कि बेंगलूरु पुलिस ने इस पर ध्यान दिया और डिलिवरी कर्मियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए। वहां की पुलिस ने यह कदम तब उठाया जब उसने लापरवाह ड्राइविंग के कारण डिलिवरी पार्टनर्स के खिलाफ बुकिंग और जुर्माने में उल्लेखनीय वृद्धि देखी। इसलिए, गिग श्रमिकों की यह मांग कि इन समय-सीमाओं को समाप्त किया जाए, उचित था और इसी माना भी गया। दूसरे, पिछले वर्ष एक से 30 सितंबर के बीच किए गये एक सर्वेक्षण ने गिग कर्मियों और स्थायी कर्मचारियों के बीच बड़े अंतर को उजागर किया। इसमें 47 फीसदी उत्तरदाताओं ने कहा कि गिग कर्मियों को 10 से 25 फीसदी कम मेहनताना मिलता है। अन्य सर्वेक्षणों ने यह भी दिखाया है कि गिग श्रमिक बेहद असुरक्षित स्थिति में रहते हैं। लंबे समय तक काम करने के बावजूद यानी दिन में 16-16 घंटे काम करने के बावजूद कई गिग कर्मी ईंधन और प्लेटफॉर्म कमीशन जैसी लागतों के बाद न्यूनतम तय वेतन से भी कम कमाते हैं। उन्हें बुनियादी चिकित्सा और सामाजिक सुरक्षा लाभ नहीं मिलते। इसके कारण कोई बीमारी या दुर्घटना उनकी मामूली कमाई को पूरी तरह समाप्त कर सकती है। नीति आयोग के वर्ष 2024 के एक सर्वेक्षण ने खुलासा किया कि 90 फीसदी गिग श्रमिकों के पास बचत नहीं है। सामाजिक सुरक्षा, स्वास्थ्य बीमा जैसी बुनियादी चीजें भी नहीं मिलती है। ऐसे में सरकार को आगे आकर गिग वर्कर्स की रोजगार सुरक्षा, सामाजिक सुरक्षा, न्यूनतम आय आदि को सुनिश्चित करने की गंभीर पहल करनी चाहिए क्योंकि इसमें रोजगार की बड़ी संभावना है।

महाबलियों के मिलन के कूटनीतिक निहितार्थ

संजय श्रीवास्तव

ट्रंप और शी जिनपिंग अपने देशों की आपसी होड़ को भुलाकर एक बड़ा, ऐसा ऐतिहासिक, समझौता कर सकें जिसमें संतुलित व्यापार, चीनी बाजार में असली मौके और पूर्वी एशिया में अमेरिकी सेना की कटौती का कुछ मिला-जुला रूप शामिल हो, ऐसा 'ग्रैंड बार्गेन' मुमकिन नहीं लगता। ट्रंप तनावपूर्ण व्यापारिक शांति को ही आगे बढ़ा पाएं इतना ही बहुत होगा। फिर भी भारत को इस सम्मेलन को अत्यंत सतर्क दृष्टि से देखना होगा।

अमेरिकी राष्ट्रपति और चीन के सर्वोच्च नेता शी जिनपिंग की 14 और 15 मई 2026 को बीजिंग की प्रस्तावित मुलाकात इस साल संभावित चार मुलाकातों में से पहली होगी। एक-दूसरे को आर्थिक नुकसान पहुंचाने के डर से प्रेरित ये मुलाकातें, बदलती वैश्विक शक्ति-संरचना की दिशा तय करने वाली हो सकती हैं। ट्रंप कहते हैं कि अमेरिका और चीन ही वो दो महाशक्तियां हैं, जो दुनिया का नेतृत्व कर रही हैं। इसलिये भारत समेत तमाम देश इस पर निगाहें लगाए हुए हैं। यह वार्ता ऐसे समय हो रही है, जब अमेरिका-चीन संबंध, व्यापार युद्ध, तकनीकी प्रतिस्पर्धा, ताइवान, दक्षिण चीन सागर, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, सेमीकंडक्टर नियंत्रण और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला जैसे मुद्दों पर तीव्र तनाव के दौर से गुजर रहे हैं। चीन की अर्थव्यवस्था धीमी पड़ रही है, रियल एस्टेट संकट बना हुआ है, विदेशी निवेश घटा है और पश्चिमी देशों में चीन के प्रति अविश्वास बढ़ा है। दूसरी ओर अमेरिका भी राजनीतिक ध्रुवीकरण, चुनावी तनाव और बढ़ते कर्ज से जूझ रहा है।

चीन संभवतः यह मानता है कि अमेरिका पहले जितना अजेय नहीं रहा, लेकिन वह अभी भी सैन्य, तकनीकी और वित्तीय दृष्टि से बेहद खतरनाक प्रतिद्वंद्वी हर। इसलिए बीजिंग 'सीधी टक्कर' के बजाय 'रणनीतिक दबाव' की नीति अपना सकता है। चीन अमेरिका को आर्थिक निर्भरता, दुर्लभ खनिजों, वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं और क्षेत्रीय गठबंधनों के माध्यम से दबाने की कोशिश कर सकता है। वहीं अमेरिका की रणनीति 'पूर्ण अलगाव' नहीं बल्कि 'नियंत्रित प्रतिस्पर्धा' और तकनीकी बढ़त बनाये रखने की होगी। इसलिए यह बैठक 'सहयोग' से अधिक 'नियंत्रित प्रतिस्पर्धा' का प्रयास मानी जाएगी जिसका असर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से लेकर रक्षा सुरक्षा, व्यापार, व्यवसाय और आपूर्ति श्रृंखला के अलावा ताइवान से लेकर ईरान तक हर जगह पड़ सकता है। भारत को इस सम्मेलन को अत्यंत सतर्क दृष्टि से देखना होगा। अमेरिका और चीन दोनों भारत के लिए महत्वपूर्ण हैं- एक रणनीतिक साझेदार हैं, तो दूसरा सबसे बड़ा पड़ोसी और बड़ा व्यापारिक भागीदार। यदि अमेरिका और चीन के बीच किसी

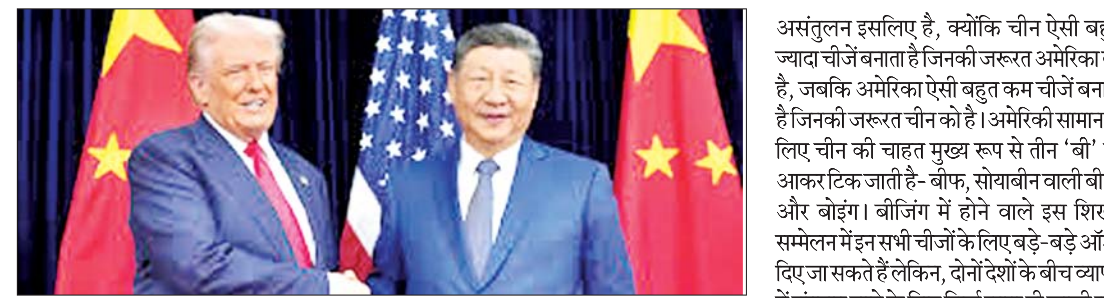

प्रकार की सामरिक समझ बनती है, तो इसका प्रभाव भारत की इंडो-पैसिफिक भूमिका, क्वाड की सक्रियता और सीमा संबंधी समीकरणों पर पड़ सकता है। दूसरी ओर यदि तनाव बढ़ता है, तो भारत पर अमेरिकी रणनीतिक अपेक्षाएं और बढ़ सकती हैं। एक साल पहले चीन और अमेरिका एक बहुत बड़े व्यापार युद्ध के कगार पर खड़े थे। अमेरिका ने चीनी सामानों पर 145 फीसद तक का टैरिफ लगा दिया था और चीन द्वारा दुर्लभ खनिज के निर्यात पर लगाए नियंत्रणों से वैश्विक उद्योग पर खतरा मंडरा रहा था। इसी खतरे ने शांति समझौते का रास्ता खोला, जिस पर अक्टूबर 2025 में सहमति बनी।

ट्रंप की चीन यात्रा

दोनों ने टैरिफ कम किए, चीन ने 'रेयर-अर्थ' की खेप फिर से भेजना शुरू किया और अमेरिका ने चीन पर और ज्यादा निर्यात नियंत्रण लगाने से खुद को रोक लिया। दोनों देशों के बीच इन मुद्दों को लेकर इस शांति समझौते के बावजूद तनाव कायम है। व्हाइट हाउस ने एक मेमो जारी किया, जिसमें चीनी संस्थाओं पर अमेरिकी एआई तकनीक की 'बड़े पैमाने पर' चोरी करने का आरोप लगाया और उसने ईरानी तेल खरीदने के लिए पांच चीनी रिफाइनरियों पर प्रतिबंध लगाए। यह उन चीनी फर्मों के लिए एक चेतावनी थी, जो ईरान के साथ सहयोग कर रही हैं। चीन ने ऐसी योजनाओं पर काम जारी रखा है जिनसे अमेरिकी फर्मों के लिए मुश्किलें बढ़ सकती हैं। उसने अमेरिकी प्रतिबंधों का पालन करने वाली कंपनियों के खिलाफ वित्तीय दंड की धमकी दी। चीन दुर्लभ खनिजों की सप्लाई रोककर वैश्विक उद्योगों को ठप कर सकता है, वहीं अमेरिका हाई-टेक सामानों और वित्तीय लेन-देन पर कड़े प्रतिबंध लगा सकता है। जैसे-जैसे अमेरिका दुर्लभ धातुओं पर चीन की पकड़ तोड़ने की कोशिश कर रहा है, चीन सेमीकंडक्टर उत्पादन को बढ़ावा दे रहा है और डॉलर से खुद को मुक्त करने का प्रयास कर रहा है। वार्ता से उम्मीद जगी है कि दोनों शांति समझौते को आगे बढ़ा पाएंगे। लगभग एक दशक से व्यापारिक जंग में उलझे हुए दोनों देशों के बीच होने वाली बातचीत का मुख्य मुद्दा व्यापार होगा। संभव है कि अमेरिका चीन में बड़े निवेश की पेशकश करे, दोनों नेता एक द्विपक्षीय निवेश संधि पर सहमत हो जाएं। एक ऐसा समझौता जो सीमा पार निजी निवेश के लिए नियम और शर्तें तय करता हो। इसके पीछे का विचार निवेश की रुकावटों को कम करके विकास को बढ़ावा देना है। इसके जरिए वे उन 'संवेदनशील' क्षेत्रों पर काम करने लायक समझौते कर सकते हैं, जिन्हें वे सीमा-पार निवेश के लिए खोलना नहीं चाहते।

अमेरिका दोनों देशों के बीच व्यापार प्रबंधन के लिए एक व्यापार बोर्ड चाहता है। नियमित संवाद के लिए यह एक बेहतर तंत्र होगा। दोनों देश 'बोर्ड ऑफ ट्रेड' के गठन पर राजी होने की तरफ भी बढ़ सकते हैं, जिससे दोनों देशों के बीच व्यापार को संतुलित किया जा सके। अमेरिका के साथ चीन का व्यापार अधिशेष या सरप्लस 2018 के 400 अरब डॉलर से गिरकर पिछले साल लगभग आधा रह गया है। अमेरिका का मानना है कि यह बोर्ड इस अधिशेष को घटाकर शून्य तक ले जाएगा। फिर भी, 'बोर्ड ऑफ ट्रेड' का यह विचार काफी कमजोर है। अमेरिका के साथ चीन के व्यापार में असंतुलन इसलिए है, क्योंकि चीन ऐसी बहुत ज्यादा चीजें बनाता है जिनकी जरूरत अमेरिका को है, जबकि अमेरिका ऐसी बहुत कम चीजें बनाता है जिनकी जरूरत चीन को है। अमेरिकी सामान के लिए चीन की चाहत मुख्य रूप से तीन 'बी' पर आकर टिक जाती है- बीफ, सोयाबीन वाली बीन्स और बोइंग। बीजिंग में होने वाले इस शिखर सम्मेलन में इन सभी चीजों के लिए बड़े-बड़े ऑर्डर दिए जा सकते हैं लेकिन, दोनों देशों के बीच व्यापार में संतुलन लाने के लिए सिर्फ.इतना ही काफी नहीं होगा। अमेरिका एक 'अधिकार-संपन्न' बोर्ड बनाना चाहता है, वह नहीं चाहता कि चीन इस बोर्ड को सिर्फ.'बातचीत का अड्डा' या खरीदारी से जुड़े अपने वादों को टालने का एक जरिया बना चाहता है। जबकि चीन एक ऐसा बोर्ड जो व्यापार से जुड़ी समस्याओं को सुलझाने के लिए मात्र एक 'कार्य-प्रणाली' के तौरपर काम करे।

अमेरिका और चीन के बीच की समस्याएं बुनियादी और ढांचागत हैं, शी के विचार भी एक समस्या है। उन्हें पक्का यकीन है कि अमेरिका कमजोर पड़ रहा है और दुनिया को उभरते हुए चीन के सामने झुकना चाहिए। चीनी अधिकारी संकेत दे रहे हैं कि ताइवान के मामले में वे जितना अधिक झुकेंगे, चीन व्यापार के मामले में उन्हें उतना ही अधिक रियायत देगा। उन्हें उम्मीद है कि वे इस द्वीप को हथियारों की बिक्री कम कर सकते हैं या यह कह सकते हैं कि वे ताइवान की स्वतंत्रता के खिलाफ हैं। ऐसा होना मुश्किल है। इस वार्ता से भारतीय हित कई स्तरों पर प्रभावित हो सकते हैं। यदि अमेरिका, चीन के साथ व्यापारिक समझौते करता है, तो 'चीन प्लस वन' रणनीति के तहत भारत को मिलने वाले निवेश अवसर सीमित हो जाएंगे। वहीं यदि तकनीकी और आपूर्ति श्रृंखला प्रतिस्पर्धा तेज होती है, तो भारत को वैकल्पिक विनिर्माण केंद्र के रूप में लाभ भी मिल सकता है। रक्षा और भू-राजनीति के स्तर पर भारत चाहेगा कि अमेरिका चीन के प्रति पर्याप्त कठोर बना रहे, ताकि एशिया में शक्ति संतुलन बना रहे। फिलहाल तो दोनों सरकारों के बीच तनाव इतना गहरा है कि इस शिखर सम्मेलन से किसी बड़ी सफलता की उम्मीद करना बेमानी है, शायद जबरदस्ती की मुस्कुराहटों के अलावा और कुछ हासिल नहीं होगा।

सोशल मीडिया

पुनर्निर्मित सोमनाथ मंदिर के लोकार्पण की 75वीं वर्षगांठ के मौके पर एक बार फिर वहां जाने का सौभाग्य मिलने वाला है, यह पीढ़ियों के निरंतर संघर्ष को याद दिलाता है। पीएम मोदी.

मां कामाख्या के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ, मां कामाख्या से सभी देश वासियों के उत्तम स्वास्थ्य, समृद्धि व उनके कल्याण की कामना की। जय मां कामाख्या। राजनाथ सिंह.

नीट 2026 की परीक्षा रद्द हो गयी, 22 लाख से ज्यादा छात्रों की मेहनत त्याग और सपनों को भ्रष्ट भाजपाई व्यवस्था ने कुचल दिया, युवाओं के भविष्य के साथ यह खिलवाड़ है। राहुल गांधी.

जीवन में प्रसन्नता

अंतर्दृष्टि

जब तुम प्रेम में होते हो और खुश होते हो तो भूल जाते हो। लेकिन, जब संघर्ष, नफरत और गुस्सा होता है तो तुम उसे बढ़ा-चढ़ाकर पेश करने लगते हो। ऊपर से वे अक्षम लोग, वे नैतिकतावादी, वे पुरोहित, वे राजनेता, वे मिल कर चिल्लाते हैं एक स्वर से कि देखो, हमने तुमसे पहले ही कहा था, और तुमने हमारी नहीं सुनी। प्रेम को त्यागो। प्रेम दुख बनाता है। इसे त्यागो, उसे त्यागो, जीवन को त्यागो। इन बातों को अगर बार-बार दोहराया जाता रहता है तो उनका असर होने लगता है। लोग उनके सम्मोहन में फँस जाते हैं। तुम कहते हो कि तुम उपवास करते रहे हो, तुमने ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किया है। उपवास का भला बुद्धत्व से क्या ताल्लुक हो सकता है? ब्रह्मचर्य का बुद्धत्व से कोई संबंध नहीं हो सकता? बेतुकी बात है। जो भी तुम करते हो जैसे कि तुम कहते हो कि मैं बुद्धत्व प्राप्त करने के लिए रात-रात भर जागता रहता हूँ। दिन में बुद्धत्व प्राप्त करने की कोशिश क्यों नहीं करते? रात भर जागने की क्या जरूरत है? ये कुदरत के विरोध में तुम कयों खड़े हुए हो? बुद्धत्व प्रकृति के खिलाफ नहीं होता। वह प्रकृति की परितृप्ति है। वह तो प्रकृति की चरम अभिव्यक्ति है। वह तो जितना संभव हो सकता है, उतनी प्रकृति है। प्रकृति के खिलाफ होने पर नहीं, बल्कि साथ होने पर ही तुम बुद्धत्व तक पहुँचते हो। वह बहाव के खिलाफ तैरने से नहीं, बल्कि उसके साथ बहने से मिलता है। नदी की यात्रा तो पहले से ही समुद्र की तरफ है। तुम्हें उसके खिलाफ तैरना शुरू करने की कोई जरूरत नहीं, जबकि तुम करते यही रहे हो। अब तुम पूछोगे कि तो मुझे क्या करना चाहिए? मैं कहूँगा कि दुख के प्रति अपनी आसक्ति त्याग दो। तुम बुद्धत्व की खोज नहीं कर रहे हो, बल्कि तुम तो दुख की खोज में लगे हुए हो। बुद्धत्व तो सिर्फ एक बहाना है। जीवन से प्रेम करो, और अधिक खुश रहो। जब तुम एकदम प्रसन्न होते हो, संभावना तभी होती है, वरना नहीं। कारण यह है कि दुख तुम्हें बंद कर देता है, सुख तुम्हें खोलता है। क्या तुमने यही बात अपने जीवन में नहीं देखी? जब भी तुम दुखी होते हो, बंद हो जाते हो, एक कठोर आवरण तुम्हें घेर लेता है। तुम खुद की सुरक्षा करने लगते हो, तुम एक कवच-सा ओढ़ लेते हो। वजह यह है कि तुम जानते हो कि तुम्हें पहले से काफी तकलीफ है और अब तुम और चोट बर्दाश्त नहीं कर सकते। दुखी लोग हमेशा कठोर हो जाते हैं। उनकी नरमी खत्म हो जाती है, वे चट्टानों जैसे हो जाते हैं। एक प्रसन्न व्यक्ति तो एक फूल की तरह है। उसे ऐसा वरदान मिला हुआ है कि वह सारी दुनिया को आशीर्वाद दे सकता है।

-वीओएल.

कमेटी सदस्य का महत्व

व्यंग्यलोक

आपको खुशी होगी या नहीं, यह तो मैं नहीं जानता, लेकिन मुझे इस बात की अपार खुशी है कि मुझे एक समिति का सदस्य बनाया गया है। लोग अपने व्यक्तित्व निर्माण के लिए समिति का सदस्य बनने के लिए बड़ी बड़ी तिकड़में लगाते हैं, मैं बिना तिकड़म के ही कमेटी में आ गया हूँ। हमारे यहाँ कमेटी निर्माण की परम्परा वैसे तो प्राचीनकाल से है, लेकिन वर्तमान काल में कमेटी बनाना, आयोग गठित करना आम घटनायें हैं। वर्तमान में कमेटियाँ मामले को टालने अथवा जिम्मेदारियों से बचने का माध्यम बन गयी हैं। लोकतन्त्र में इससे बढ़िया अपने को बचाने का लोकतान्त्रिक ढंग दूसरा नहीं है। इस दृष्टि से जिस कमेटी का मै सदस्य बना हूं। वह भी गालियाँ सुनाने के अलावा अन्य कुछ नहीं दे पायेगी। पर भाई कुछ भी हो आखिर कमेटी में लिया तो गया। हर ऐसे गैरे, नत्थू खैरे को तो नहीं लिया जाता या आपको तो नहीं लिया गया। मुझे लिया गया इसलिए मैं महत्वपूर्ण व्यक्ति तो हूं ही। कमेटियों की कार्य शैली पर प्रकाश डालना भी समीचीन होगा। पहली बात तो कमेटी की बैठक नहीं होती और हो जाती है तो निर्णय नहीं होता। इस प्रकार एक अनन्त सिलसिला निष्क्रियता का जारी रहता है तथा सदस्य जलपान तथा आवागमन भत्ता लेने के कुछ भी नहीं कर पाते। कई बार तो कमेटी पर कमेटी और कमेटी, बस कमेटी ही कमेटी, इतनी कमेटी कि पता ही नहीं चलता कि किस कमेटी को किस बात पर निर्णय करना है? पहली मूल कमेटी को खोजना मुश्किल हो जाता है। कमेटियों की कार्य-सूची और विवरण नहीं मिलते तथा इस प्रकार एक अनावश्यक अराजकता का माहौल रहता है। भारत में यह परम्परा निरन्तर फल-फूल रही है तथा लोगों का कमेटियों में प्रवेश का क्रेज बना हुआ है। आदमी जितनी कमेटियों का सदस्य होता है उतना ही बड़ा और महत्त्वपूर्ण माना जाता है। यह नहीं देखा जाता कि उसने निर्णय क्या किये हैं, किये भी हैं या नहीं अथवा टालू मिक्चर मिलाता रहा है। लेकिन कौन ध्यान देता है, चलता रहता है। मुझे जिस कमेटी में लिया गया है, वह कमेटी उल्लेखनीय तो नहीं है लेकिन भाई है तो कमेटी? क्या बड़ी और क्या छोटी। हमें भी एक अदद कमेटी चाहिए थी सो मिल गयी है। वैसे आपसे क्या छिपाना, हमें मोहल्ले की विकास समिति ने सफाई समिति में शामिल किया है। मोहल्ले की सफाई की चुनौती को स्वीकारने का मतलब अपना पारिवारिक जीवन विषाक्त बनाना। इधर आपने सफाई कराई कि मिसेज धारकर आयेंगी और फलों के छिलके गलियारे में फैला जायेंगी। फिर खाने के लिए महाभोज होगा- कुत्ता, सुअर, गाय और साँडों का। आपसी खींचतान, लड़ाई-झगड़ा समाप्त होने से पहले ही माथुर साहब अपना एंटिक काठ-कबाड़ डाल जायेंगे।

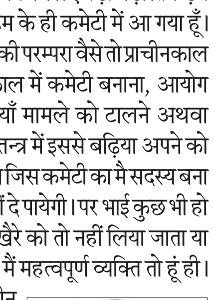
पूरन सरमा

असाधारण कलाकार मारियो मिरांडा के सौ वर्ष

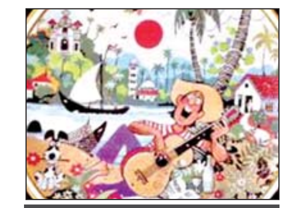
कला जगत

नरेंद्र शर्मा

एक मोटी तोंद वाला व्यक्ति अखबार में खुद को छुपाये हुए। एक युवा महिला अपनी बालकनी की रेलिंग पर झुकी हुई। एक संगीतकार गोवा की शादी में मस्ती में अपना साज बजाते हुए। गांव में एक मय्यत खामोश रिद्म में जाती हुई। मारियो मिरांडा के पास दुर्लभ प्रतिभा थी- वह चंद ब्रशस्ट्रोक्स से रोजमर्रा के जीवन को जीवंत थिएटर में बदल देते थे। हालांकि मारियो का जन्म 2 मई 1926 को दमन में हुआ था, लेकिन गोवा ने उन्हें संसार को देखना सिखाया। यह जगह उनके लिए दोपहर की नींद, हल्का-फुल्का हंसी मजाक व व्यंग्य और सुस्त ग्रामीण जीवन की थी। ह्यपोडरल्ल (बेकर) को मालूम था कि घर में कितने व्यक्ति रहते हैं। पड़ोसी दूर के कजन का नाम भी याद कर सकता था। धीमा ग्रामीण जीवन मीलों दूर था पूंजीवाद के आकर्षण से।

बाद में मारियो बॉम्बे (अब मुंबई) चले गये, पुर्तगाल के लिए स्कॉलरशिप हासिल की और लंदन व मकाउ की यात्राएं कीं। लेकिन वह जहां भी गये, लोगों व जगहों के प्रति उनका आकर्षण निरंतर बढ़ता गया, मजबूत होता गया। उनकी बहन फातिमा फिग्नेराडो शायद उन्हें सबसे अच्छी तरह समझती थीं- एक कलाकार जिसने बिना किसी दुर्भावना या लालच के रचना की, जैसे प्रकृति करती है, बदले में बिना कुछ मांगे। जैसे पक्षी श्रोताओं के लिए नहीं गाते हैं, जैसे गुलाब व लैवेंडर अपनी खुशबू के लिए कॉपीराइट नहीं मांगते हैं, जैसे सूरज अपनी रोशनी व गर्मी के लिए मुआवजा नहीं मांगता, जैसे चांद सिर्फ.चमकता रहता हैं, चाहे हम उसे देखें या न देखें, बस ऐसी थी मेरे भाई मारियो की कला। जो लोग मारियो को जानते थे, उन्हें वह एक ऐसे व्यक्ति के रूप में याद हैं, जो कभी किसी पर खुद को थोपते नहीं थे। शौन लोबो, जिनके पिता रोनी और मारियो की करीबी दोस्ती 30 वर्ष से अधिक तक रही और उनके पास मारियो की पेंटिंग्स का सबसे बड़ा कलेक्शन है, को याद है मारियो का गोवा में लम्बी विजिट करना और देर रात तक सहज गुफ्तगू करना। मारियो की पत्नी हबीबा द्वारा खाना पकाना, जिससे मुलाकातों में अतिरिक्त गर्माहट आ जाती थी। लोबो को दिल्ली की एक शाम भी याद है। जब अन्य लोग म्यूजिक परफॉर्म कर रहे थे, मारियो सुन रहे थे और अवलोकन कर रहे थे। बाद में वह पल उनके स्केच में उतर गये थे।

अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के बावजूद मारियो की पैसे में कोई खास दिलचस्पी नहीं रही। लोबो को याद है कि मारियो ने एक बार एक वाइन लेबल डिजाइन की थी, बिना पेमेंट की चिंता किये हुए; क्योंकि उन्हें तो रचना का आनंद लेना था। लोबो के अनुसार, हबीबा की कोशिशों से से मारियो का कार्य दुनियाभर में पहुंच सका। भारत की कोई पत्रिका व अखबार नहीं था, जिसमें मारियो का कार्य प्रकाशित न हुआ हो। मारियो के एक करीबी दोस्त जेरार्ड डा कुन्हा हैं, जो मारियो गैलरी के जरिये मारियो की विरासत को आगे बढ़ाने में लगे हुए हैं। उन्हें याद है कि मारियो निरंतर कहानियों से भरे रहते थे। मारियो व हबीबा के साथ बुक लांच के लिए मुंबई, दिल्ली व बंग्लुरु की यात्रा करते हुए जेरार्ड ने उनका एक अन्य पहलू देखा। एयरपोर्ट लाउन्ज में, आमतौर से अल्पभाषी रहने वाले मारियो भीड़ को स्कैन करते और अचानक जीवंत हो उठते, यह अंदाजा लगाते कि कौन बहस कर रहा है, कौन पहली बार उड़ान भर रहा है या हीरे के व्यापार में लगा हुआ है। वह हमेशा चीजों पर गौर करते, हमेशा अपने कार्टूनों के लिए मटेरियल एकत्र करते।

अपने पोते-पोतियों- रफेल व सैमुएल ऑस्ट्रिया में और गेल जलेमा अमेरिका में के लिए मारियो हमेशा उदार, प्रेरणा व भरोसेमंद रहे। अब भी जब वह उन्हें याद करते हैं तो उन्हें उनके लौटोलिम घर में देखते हैं अपनी कुर्सी में आराम करते हुए या सड़क के कोने में, हाथ में कलम लिए हुए, जिंदगियों को देखते हुए। मारियो के इर्दगिर्द का संसार कहानियों से भरा हुआ था। वह उन्हें देखना और कागज पर उतारना जानते था। भारत सरकार ने उनकी इस प्रतिभा को स्वीकार किया और उन्हें पदम्श्री (1988), व पदम्भूषण (2002) से सम्मानित किया। मारियो ने 11 दिसम्बर 2011 को इस दुनिया को अलविदा कह दिया और 2012 में उन्हें मरणोपरांत पदम विभूषण से सम्मानित किया गया। हालांकि अभी हम मारियो के शताब्दी वर्ष में हैं, लेकिन जो चमत्कार उन्होंने अपने पेन व ब्रश से किया वह सदियों तक उन्हें जिंदा रखेगा।

विचार

पानी और उसका बुलबुला एक ही चीज है। उसी प्रकार जीवात्मा और परमात्मा एक ही चीज है। अंतर सिर्फ यह है कि एक परिमित है, दूसरा अनंत, एक परतंत्र है दूसरा स्वतंत्र।

-गुरुनानक.

यदि आपका हृदय ईमान से भरा है तो एक शत्रु क्या, सारा संसार आपके सम्मुख हथियार डाल देगा।

-स्वामी रामतीर्थ.

अस्पृश्यता का कोई शास्त्रीय आधार नहीं। परमेश्वर का दरवाजा किसी के लिए बंद नहीं और यदि वह बंद हो जाये तो परमेश्वर, परमेश्वर नहीं।

-तिलक.

शिक्षा का उद्देश्य है मन को संयम में लाना, सजाना नहीं, उसको अपनी शक्तियों का योग करना सिखाना। दूसरे के विचारों को इकट्ठा करना नहीं।

-ड्रायन एडवर्ड.

आप की बात

कृषि क्षेत्र पर संकट

कृषि को लेकर लफ्फाजी अधिक और काम बहुत कम किया गया जिसका परिणाम आज देश के करोड़ों किसानों को गरीबी, कम आय और कृषि के लिए पर्याप्त बुनियादी संरचना की अनुपलब्धता के रूप में भुगतना पड़ रहा है। जिन्होंने अस्सी-नब्बे के दशक में पढ़ाई की है उन्होंने यह जरूर पढ़ा होगा कि, भारत कृषि प्रधान देश है, देश की सत्तर-अस्सी प्रतिशत लोगों की जीविका खेती पर निर्भर करती है, खेती से सर्वाधिक रोजगार मिलता है और तुर्रा यह भी कि 'देश की आत्मा गांवों में बसती है।' कृषि, गांव और ग्रामीण जीवन के बारे में इतना अच्छा-अच्छा किताबों में बताकर एक गुलाबी वातावरण जरूर बनाने का प्रयास किया गया लेकिन खुरदुरा सचाई यह है कि खेती और ग्रामीण जीवन को संवारने के लिए, कृषि के साथ भावनात्मक संबंधों को आगे बढ़ाते हुए इसे एक लाभप्रद व्यवसाय में बदलने के लिए कोई ठोस प्रयास नहीं किया गया। शायद इसके पीछे एक कारण यह भी रहा हो कि यह एक लंबी प्रक्रिया थी, इसमें भारी निवेश की जरूरत थी और एक लंबे समय तक इससे कोई सियासी लाभ भी मिलने मिलने वाला नहीं था।

आज जब देश में ऐसा चुनावी वातावरण बन गया है कि 'कर्ज माफी, मुफ्त बिजली' जैसे चुनावी वायदे सियासी जमातों को कुछ ही सप्ताहों, महीनों में फर्श से अर्श पर पहुंचा देते हैं, तब भला ग्रामीण विकास के लिए एक लंबी, शतत् और निवेश साध्य प्रक्रिया में उलझकर कोई भी अपने आपको घनचक्कर क्यों बनाना चाहेगा। वह भी तब जबकि मतदाता इतना सूझ-बूझ वाला है कि वह लंबे निवेश और विकास की ठोस योजनाओं के बजाय मुफ्त के माल पर ज्यादा आकर्षित होता है। बहरहाल यह सब तो सियासी हथकंडा है। असलियत यह है कि हर चुनाव में कर्जमाफी का वायदा किया जाता है, इसके बावजूद देश का किसान गंभीर कर्ज संकट के दौर से गुजर रहा है। यह सही है कि भारत की प्रगति का रास्ता गांवों से गुजरता है और इसके लिए सरकार को बड़े निवेश और दीर्घकालिक योजनाओं के साथ शतत् प्रयास की जरूरत है। अगर सरकार इस दिशा में पहल करती है, तो निश्चय ही एक-दो दशक बाद ग्रामीण भारत के साथ ही संपूर्ण देश की तकदीर बदल सकती है। केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने अनाज भंडारण की महत्वाकांक्षी योजना की जो घोषणा की है वह ऐसी ही एक योजना है जो भारत की तकदीर और तस्वीर दोनों बदल सकती है। देश में खाद्य सुरक्षा को लेकर भी बहुत लफ्फाजी की गयी है, गैर जिम्मेदाराना तरीके से कानून बनाये गये हैं, लेकिन यह सोचने का प्रयास नहीं किया गया कि खाद्य सुरक्षा कानून बनाने से कैसे मजबूत होगी। क्या लोग कानून खायेंगे?

प्रमोद कुमार शर्मा, लखनऊ.

आतंकवाद पर स्पष्ट नीति

आतंकवाद को लेकर भारत की नीति अब पूरी तरह से स्पष्ट है। नया भारत किसी भी रूप में आतंकवाद को बर्दास्त नहीं करता है। आतंकवाद के मुद्दे पर न तो घरेलू राजनीति की परवाह करता है और न ही अंतर्राष्ट्रीय दबाव का। अपनी बात साफ-साफ और दो-टूक दुनिया के सामने रखता है। अभी संयुक्त राष्ट्र महासभा की बैठक के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने फिलिस्तीनी राष्ट्रपति से मुलाकात किया और उनको हर तरह से मानवीय सहायता का वायदा किया। इजराइल भारत का घनिष्ठ और विश्वसनीय मित्र है, इसके बावजूद फिलिस्तीनियों के अधिकारों को लेकर भारत की स्पष्ट नीति है और भारत स्वतंत्र फिलिस्तीन का समर्थन करता है। लेकिन जब बात आतंकवाद की आती है, तो इजराइल पर हमास के हमले की निंदा करता है और हमास व हिजबुल्लाह के खिलाफ इजराइल के अभियान का भी समर्थन करता है। ईरान के साथ भी भारत के मधुर रिश्ते हैं। ईरान के साथ भारत का व्यापार करता है और हमारी ऊर्जा सुरक्षा के लिए भी ईरान महत्वपूर्ण है।

अशोक कुमार चौधरी, लखनऊ.

संक्षेप

जल जीवन मिशन में लापरवाही पर डीएम सख्त

फतेहपुर। जल निगम नगरीय एवं ग्रामीण विभाग की योजनाओं की गहन समीक्षा बैठक कलेक्ट्रेट के महात्मा गांधी सभागार में जिलाधिकारी निधि गुप्ता वत्स की अध्यक्षता में संपन्न हुई। डीएम ने स्वीकृत, निर्माणाधीन, पूर्ण एवं संचालित परियोजनाओं की अद्यतन प्रगति पर नाराजगी जताते हुए अधिकारियों को कड़ी चेतावनी दी। विशेष रूप से जल जीवन मिशन जेजेएम के तहत पाइप पेयजल योजनाओं में देरी पर निशाना साधा गया। जिले में जेजेएम के तहत १.२५ लाख हाउस होल्ड कनेक्शन का लक्ष्य है, जिसमें से कार्य पूर्ण हो चुका है, लेकिन शेष में लापरवाही बरती जा रही है।बैठक में डीएम ने अधिशासी अभियंता जल निगम नगरीय एवं ग्रामीण से विस्तृत जानकारी ली। जल निगम ग्रामीण के अंतर्गत कार्यदाई संस्था गायत्री द्वारा ग्रामिक रिपोर्ट प्रस्तुत करने और कार्य प्रगति धीमी पाए जाने पर सख्त रुख अपनाते हुए एई जल निगम ग्रामीण को निर्देश दिए कि संस्था को स्पष्टीकरण जारी कर ब्लैक लिस्ट करने की संस्तुति शीघ्र भेजी जाए। जिले मेंनिमार्णाधीन योजनाओं पर गायत्री एजेंसी कार्यरत है, जहां पाइपलाइन बिछाने के बाद सड़कें क्षतिग्रस्त हैं प्रमुख निर्देशः समयबद्ध कार्रवाई पर जोरडीएम ने साफ शब्दों में दिशा-निर्देश दिए जिनमें शामिल हैं सड़क मरम्मत जिन परियोजनाओं में पाइपलाइन बिछा दी गई है, सभी मार्ग जून हाल में मोटरेबल बनाएं। पूर्ण योजनाओं में सड़कों की पूर्ण मरम्मत कराएंअन्यथा विभागीय कार्रवाई होगी लंबित कार्य पूर्ण छोटे-मोटे कार्य शीघ्र समाप्त कर पानी आपूर्ति सुनिश्चित करें।

मोबाइल चोरों पर पुलिस का शिकंजा

फतेहपुर। चोरी या विलुप्त हो चुके दूरभाष यंत्र को पुनः प्राप्त करने का सरल एवं प्रभावकारी साधन प्रत्येक नागरिक के समक्ष उपलब्ध है। केंद्रीय उपकरण परिचय-पत्र पंजी सीईआईआर पोर्टल के माध्यम अनलाइखित शिकायत दर्ज कर कोई भी व्यक्ति स्वयं प्रक्रिया प्रारंभ कर सकता है, जो तत्काल सम्बद्ध थाने को प्रेषित हो जाती है। फतेहपुर जनपद में इस प्रणाली की सफलता का प्रत्यक्ष प्रमाण है, जहाँ इस मास विविध थानों द्वारा १३२ दूरभाष यंत्र बरामद किए गए हैं। इनकी अनुमानित मूल्य २० लाख रुपये से अधिक है तथास्वस्वामियों को प्रतिपादित किए जा रहे हैं पिछले मास भी इसी पोर्टल द्वारा अनेक यंत्र प्राप्त हो चुके थे। पुलिसाधीक्षक अभिमन्यु मांगलिक ने कहा सीईआईआर पोर्टल अत्यंत उपयोगी है। इसके द्वारा दूरभाष प्राप्ति का प्रतिशत रहता है। यत्र कहीं दूरभाष संचालित हो, वहाँ की पुलिस को स्वतः सूचना प्रेषित हो जाती है। उदाहरणार्थ, फतेहपुर से विलुप्त दूरभाष नोएडा में विक्रयित हो तो नोएडा पुलिस को अनुरोध प्राप्त होता है तथा वे उसे प्राप्त कर लेते हैं। प्रजाजनों से निवेदन है कि तुरंत पर शिकायत दर्ज करें सीईआईआर पोर्टल की प्रक्रिया क्रमानुसारसीईआईआरआईएमईआई संख्या पर आधारित है। प्रक्रिया इस प्रकार है अधिक दूरभाष प्राप्त हो चुके हैं, जो चोरों के जाल को संनाश कर रहा है। पुलिसाधीक्षक ने जागरण अभियान पर बल देते हुए कहा कि युवा वर्ग विशेषत इसका उपयोग करें, प्रतिशत चोरियाँ मूल्यवान स्मार्टफोन की होती हैं सफलता के आँकड़े फतेहपुर पुलिस की विजयथानों में स्वामीगण यंत्र ग्रहण करने उमड़ रहे हैं। पुलिसाधीक्षक ने थानाध्यक्षों को निर्देश दिए हैं कि सीईआईआर शिकायतों को प्राथमिकता दें।

पेयजल समस्या को लेकर उप जिलाधिकारी से गुहार

बांदा। पैलानी तहसील के डांडामऊ के लगभग एक दर्जन ग्रामीणों ने उप जिलाधिकारी अंकित वर्मा से मिलकर बताया कि हमारे गांव में जल जीवन मिशन के तहत सन 2022 में ट्यूबवेल व पानी की टंकी बनाई गई थी। इसमें बरसात के समय मात्र दो-तीन घरों को छोड़कर शेष गांव में पीने का पानी नहीं पहुंच रहा है। इससे पानी की विकराल समस्या है। ग्रामीण राजेंद्र सिंह गौतम, योगेश सिंह, धर्मेंद्र पाल, राकेश सिंह, अर्जुन सिंह चैहान, मातादीन सिंह, गौतम, रोहित सिंह सहित तमाम ग्रामीणों ने उप जिलाधिकारी से बताया कि इस तरह की भीषण गर्मी में हम लोग पीने के पानी को लेकर बेहद परेशान हैं। जानवरों के भी पीने की पानी की कोई व्यवस्था नहीं है। जल जीवन मिशन के तहत ऊंचाई वाले स्थान पर आज तक पीने का पानी नहीं पहुंचा है। ग्रामीणों का कहना है कि अलग से पीने के पानी की टंकी बनवाकर पीने के पानी की व्यवस्था की जाए।

व्यापारी से मांगी 5 लाख की रंगदारी

इंदौर के व्यापारी पर मुकदमा दर्ज

ललितपुर। शहर के एक सराफा व्यापारी को उसकी दुकान पर घुसकर जान से मारने की धमकी देने और रंगदारी मांगने का सनसनीखेज मामला सामने आया है। आरोपी ने व्यापारी के गले पर छुरी रखकर 5 लाख रुपये की मांग की। न्यायालय के आदेश पर कोतवाली पुलिस ने इंदौर के एक व्यापारी सहित 3-4 अज्ञात लोगों के खिलाफ गंभीर धाराओं में मामला दर्ज किया है।

शहर के मोहल्ला छत्रसालपुरा निवासी पीड़ित व्यापारी संजय सोनी ने बताया कि उनका इंदौर निवासी प्रशांत बंगाली के साथ पिछले 4-5 वर्षों से व्यापारिक संबंध था। आरोप है कि पिछले 2-3 वर्षों से प्रशांत खराब माल भेज रहा था। जब संजय ने इसकी शिकायत की और अपने 10 लाख रुपये वापस मांगे, तो प्रशांत अभद्रता पर उतारू हो गया। ?घटना 25 मार्च 2026 की है, जब प्रशांत बंगाली अपने 3-4 साथियों के साथ ललितपुर स्थित संजय की दुकान पर पहुंचा। वहां उसने संजय के गले पर छुरी लगा दी और गाली-गलौज करते हुए 5 लाख रुपये की रंगदारी मांगी। शोर मचाने पर जब आसपास के लोग बचाने आए, तो आरोपी धमकी देते हुए भाग निकले। ?पीड़ित का आरोप है कि जब वह शिकायत करने कोतवाली जा रहा था, तो आरोपियों ने रास्ते में चलती गाड़ी से उसका अपहरण करने का प्रयास किया और थाने तक उसका पीछा किया। व्यापारी ने किसी तरह भागकर अपनी जान बचाई। पीड़ित के पास आरोपियों की वीडियो फुटेज भी सुरक्षित है। पुलिस अधीक्षक को डाक द्वारा सूचना देने के बाद भी कार्रवाई न होने पर पीड़ित ने न्यायालय की शरण ली। न्यायालय के आदेश पर थाना कोतवाली ललितपुर में आरोपी प्रशांत बंगाली और उसके साथियों के खिलाफ बीएनएस की धारा 352, 351(3) और 308(4) के तहत मामला दर्ज किया गया है।

क्रेडिट कार्ड अपडेट के नाम पर युवक के खाते से उड़ा लिये 2.26 लाख

ललितपुर। साइबर ठगों ने क्रेडिट कार्ड का बैलेंस ठीक करने का झांसा देकर एक व्यक्ति के खाते से लाखों रुपये की चपत लगा दी। पीड़ित की शिकायत पर पुलिस ने अज्ञात बदमाशों के खिलाफ धोखाधड़ी और आईटी एक्ट की धाराओं में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। तालबेहट निवासी पीड़ित पंकज साहू, जो वर्तमान में ललितपुर के पिसनारी मोहल्ले में रह रहे हैं, ने बताया कि 26 दिसंबर 2025 को उनके मोबाइल पर एक अज्ञात नंबर से फोन आया। कॉल करने वाले ने खुद को बैंक प्रतिनिधि बताते हुए कहा कि उनके क्रेडिट कार्ड का बैलेंस माइनस में है और इसे शून्य करने के लिए एक व्हाट्सएप लिंक भेजा। हालांकि पीड़ित ने लिंक पर क्लिक करने के बाद मांगी गई जानकारी देने से मना कर दिया था, लेकिन कुछ ही देर में उनके खाते में संदिग्ध लेनदेन शुरू हो गए। पीड़ित के अनुसार, पहले उनके एचडीएफसी बैंक खाते में एक-एक लाख रुपये के दो अमाउंट क्रेडिट हुए। इसके तुरंत बाद उनके खाते से 1 लाख 90 हजार रुपए और 36 हजार रुपए (कुल 2 लाख 26 हजार रुपए) डेबिट कर लिए गए। ठगी का एहसास होने पर पंकज ने तुरंत नेशनल साइबर क्राइम रिपोर्टिंग पोर्टल और संबंधित बैंक को सूचना दी, जिससे करीब 40 हजार रुपए की राशि विभिन्न बैंकों में होल्ड करा दी गई है। पीड़ित का आरोप है कि घटना की सूचना कोतवाली ललितपुर की साइबर सेल को दी गई थी, लेकिन मामला दर्ज नहीं हुआ। इसके बाद उन्होंने न्यायालय की शरण ली।

दहन किये गये 1.10 करोड़ रुपये के जब्त मादक पदार्थ

ललितपुर। मादक पदार्थों के अवैध कारोबार के खिलाफ चलाए जा रहे विशेष अभियान ऑपरेशन दहन के तहत ललितपुर पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए करीब 1 करोड़ 10 लाख रुपये मूल्य के मादक पदार्थों का नियमानुसार निस्तारण कराया। यह कार्रवाई एसपी मो. मुश्ताक के निर्देशन में की गई।

पुलिस विभाग से मिली जानकारी के अनुसार उत्तर प्रदेश पुलिस के विशेष अभियान के अंतर्गत जनपद के विभिन्न थानों में दर्ज मामलों से संबंधित माल मुकदमाती मादक पदार्थों के निस्तारण हेतु न्यायालय से विधिक अनुमति प्राप्त की गई। इसके बाद जनपद स्तरीय गठित समिति की उपस्थिति में निस्तारण की कार्यवाई अमल में लाई गई। मंगलवार को चलाए गए इस अभियान में कोतवाली ललितपुर, नाराहट थाना, पूराकलां थाना, मड़ावरा थाना तथा पाली थाना में दर्ज विभिन्न अभियोगों से संबंधित कुल 212.100 किलोग्राम मादक पदार्थ नष्ट कराया गया। यह कार्रवाई मैसर्स मेडिकल पॉल्यूशन कंट्रोल कमेटी, बिजौली, जनपद झांसी में समिति की मौजूदगी में पूरी की गई। नष्ट किए गए मादक पदार्थों में 211.250 किलोग्राम गांजा, 200 ग्राम चरस तथा 650 ग्राम नशीला पाउडर शामिल रहा। पुलिस के अनुसार जब्त मादक पदार्थों की कुल अनुमानित कीमत करीब 1.10 करोड़ रुपये आंकी गई है। पुलिस अधीक्षक मो. मुश्ताक ने स्पष्ट किया कि जनपद में मादक पदार्थों की तस्करी और अवैध कारोबार के खिलाफ अभियान आगे भी लगातार जारी रहेगा और ऐसे अपराधों में शामिल लोगों के खिलाफ कठोर कार्रवाई की जाएगी।

नमस्ते योजना के तहत पीपीई किट का हुआ वितरण

बांदा। स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत नगर पालिका परिषद को प्रथम पायदान पर लाने के लिये निकाय के अंतर्गत सफाई व्यवस्था एवं कचरा एकत्र करने के कार्य में लगे हुये हमारे सफाई मित्रों, वेस्ट पिकर्स के सम्मान को नगर पालिका परिषद में कार्यक्रम आयोजित हुआ। नमस्ते योजना अंतर्गत नेशनल सफाई कर्मचारी फाईनेंस एंड डेवलपमेंट कारपोरेशन ने कर्मचारियों की सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के दृष्टिगत उपलब्ध कराई गयी पीपीई किट वितरित की गई। अवस्थी पार्क में सफाई मित्र सम्मान एवं वेस्ट पिकर्स किट वितरण कार्यक्रम का आयोजन नगर पालिका परिषद की अध्यक्ष मालती गुप्ता बासु, नगर पंचायत बबेरू के अध्यक्ष विवेकानंद गुप्त, नगर पंचायत ओरन की अध्यक्ष लक्ष्मीनारायण द्विवेदी के प्रतिनिधि मुख्य आतिथ्य में आयोजित किया गया। आयोजन में नगर पालिका के अधिशाषी अधिकारी श्रीचंद ने स्वच्छ सर्वेक्षण-2025-26 की सफलता के लिए सभी सफाई मित्रों को नगर की सफाई व्यवस्था दुरूस्त करने के निर्देश देते हुये सर्वेक्षण टूलकिट के अनुसार बिंदुवार अवगत कराया। नगर पंचायत बबेरू के अध्यक्ष ने शासन की योजनाओं के सफल बनाने के लिये नगर पालिका का सहयोग करने को कहा। नगर पंचायत ओरन के अध्यक्ष प्रतिनिधि ने नगर पालिका के कराये जा रहे कार्यों की सराहना की। उपस्थित कर्मचारियों को सभासद रामप्रसाद सोनी, विश्वप्रकाश श्रीवास्तव, आशीष गुप्ता ने भी संबोधित किया। स्वच्छ सर्वेक्षण सिटीजन फीडबैक में नगर पालिका परिषद बांदा को प्रदेश में प्रथम स्थान पर लाने के लिए सभी सफाई नायको एवं सफाई कर्मियों को अध्यक्ष प्रतिनिधि अंकित बासु ने बधाई दी। अध्यक्ष मालती गुप्ता बासु ने लगभग 600 पीपीई किट वितरण कर सभी का सम्मान किया। कार्यक्रम में सभासद देवेंद्र कुमार, हेमन्त प्रसाद सफाई निरीक्षक, समस्त सफाई नायक, केदारनाथ, प्रधान लिपिक, राहुल जैन ब्राण्ड एम्बेसडर, धीरज जियो स्टेट, सफाई मित्र, वेस्ट पिकर्स आदि मौजूद रहें। कार्यक्रम का संचालन अभिषेक खरे, डीपीएम स्वच्छ भारत मिशन-नगरीय ने किया।

सपा सांसद के आवास के बाहर कर्वी की महिलाओं का प्रदर्शन

बांदा। महिला आरक्षण के मुद्दे को लेकर मंगलवार को बांदा-चित्रकूट लोकसभा की सपा सांसद कृष्णा पटेल के आवास के सामने कर्वी विधान सभा की महिला मोर्चा ने एक दिवसीय धरना दिया। कहा जो महिला महिलाओं के हित में काम नहीं कर सकती उसे खुद इस्तीफा दे देना चाहिए। केंद्रीय नेतृत्व के आवाह्न पर कर्वी विधान सभा महिला मोर्चा एवं कार्यकताओं ने पूर्व मंत्री चंद्रिका प्रसाद उपाध्याय नेतृत्व एवं महिला मोर्चा की जिलाध्यक्ष दिव्या त्रिपाठी की अगुवाई में बबेरू के बांदा रोड स्थित सांसद कृष्णा पटेल आवास के सामने गायत्री मंदिर में एक दिवसीय धरना दिया। धरने को जिला महामंत्री अंजू वर्मा, दिव्या त्रिपाठी ने आरक्षण के समर्थन में कहा कि भाजपा देश की महिलाओं को चैका बर्तन से बाहर निकाल कर देश की सेवा करने का मौका देने का काम कर रही है। लेकिन कांग्रेस, सपा सहित तमाम दल इस महत्वपूर्ण विधेयक का विरोध करने का आरोप लगाया है। पूर्व मंत्री चंद्रिका प्रसाद उपाध्याय ने कहा कि कांग्रेस सपा एक ही थाली के चट्टे बट्टे हैं। यदि भाजपा 33 प्रतिशत का आरक्षण महिलाओं को देना चाहती है और यदि आप लोगों की भी सहमति है तो आरक्षण का विरोध क्यों, कहा कि इन दलों के खान और दिखाने के दांत अलग-अलग हैं। उत्तर प्रदेश के विधानसभा के चुनाव में भी महिलाओं का उग्र रूप विधेयक का विरोध करने वाले दलों को देखना पड़ेगा। इस दौरान चंद्रिका प्रसाद उपाध्याय, अजय पटेल, राकेश कुमार गुप्त लल्ला, सुधीर कुशवाहा, सौरभ शिवहरे, दिव्या त्रिपाठी, राजेश्वरी द्विवेदी, माया प्रजापति, सुनीता देवी, अंजू वर्मा सहित तमाम महिला पदाधिकारी हम कार्यकर्ता मौजूद रहे।

खनिज विभाग ने मारा छापा, अवैध खनन करते पांच वाहन जब्त

ललितपुर। तालबेहट तहसील के जखौरा थाना अंतर्गत ग्राम मिनौरा में अवैध खनन की शिकायत पर बड़ी कार्यवाही की गई। जिसमें मौके से 03 ट्रैक्टर ट्रॉली मुरम का खनन करते हुए पकड़े गए। बिना परमीशन के खेत में गड्ढा खोदकर मुरम निकाल कर मुरम का अवैध परिवहन कर रहे थे। जिला खनिज अधिकारी अमितोष वर्मा ने देर रात जखौरा थाना की पुलिस के साथ राजघाट रोड पर छापेमार कार्यवाही की। साथ ही जखौरा के 02 अन्य क्षेत्रों खसुआ और नोहर कलां में भी छापे मार कार्यवाही की गई, जहां से 01-01 ट्रैक्टर ट्रॉली मिट्टी ले जाते हुए पकड़ा गया। सभी पांचों ट्रैक्टर ट्रॉली को जखौरा थाने में पुलिस की अभिरक्षा में दे दिया गया है। अवैध खनन कर्ताओं पर अंकुश लगाने हेतु विभाग लगातार छापे मार कार्यवाही कर रहा है। विभाग जनमानस से अनुरोध करता है कि बिना वैध परमीशन के कोई भी खनन एवं खनिज परिवहन का कार्य न करें स अगर कोई भी अवैध खनन में लिप्त पाया गया तो उसके ऊपर कठोर कार्रवाई की जाएगी।

महिला ने किया अग्निस्नान

ललितपुर। कोतवाली अंतर्गत मोहल्ला बड़ापुरा में एक महिला ने अपने ऊपर डीजल उड़ेलकर आग लगाकर आत्महत्या कर ली। जानकारी मिलने पर पुलिस ने मौके पर जाकर शव का पंचनामा उपरांत पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। कोतवाली अंतर्गत मोहल्ला बड़ापुरा निवासी महिला अपने पति की मृत्यु उपरांत मानसिक रूप से परेशान चल रही थी। उसकी दो संताने हैं। पति का विगत वर्ष हार्ट अटैक आने निधन हो गया था। परिवार की जिम्मेदारी भी महिला के कंधों पर थी। बताया जा रहा है कि मंगलवार को पूर्वान्ह में वह अपने घर पर रोटी बना रही थी। बच्चे बाहर गये हुये थे, इसी दौरान महिला ने यह आत्मघाती कदम उठा लिया।

नर्सिंग स्टाफ स्वास्थ्य व्यवस्था की रीढ़ : डॉ. श्रुति सिंह

नर्सिंग पेशे के महत्व, मरीजों की सेवा में नर्सिंग स्टाफ की भूमिका

ललितपुर। स्वशासी राज्य चिकित्सा महाविद्यालय (एसएसएमसी), ललितपुर में अंतरराष्ट्रीय नर्सिंग दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का आयोजन नर्सिंग स्टाफ द्वारा किया गया, जिसमें चिकित्सकों, नर्सिंग अधिकारियों एवं छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। कार्यक्रम के दौरान नर्सिंग पेशे के महत्व, मरीजों की सेवा में नर्सिंग स्टाफ की भूमिका एवं स्वास्थ्य सेवाओं में उनके योगदान पर प्रकाश डाला गया। वक्ताओं ने कहा कि नर्सिंग स्टाफ स्वास्थ्य व्यवस्था की रीढ़ है, जो मरीजों की देखभाल एवं उपचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस अवसर पर उत्कृष्ट कार्य करने वाले नर्सिंग अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सम्मानित भी किया गया। कार्यक्रम में सांस्कृतिक प्रस्तुतियों एवं जागरूकता गतिविधियों का आयोजन किया गया, जिससे उपस्थित लोगों में उत्साह का वातावरण बना रहा। कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारी बहनों की विशेष उपस्थिति रही। उन्होंने सेवा, समर्पण एवं मानवता के मूल्यों पर अपने विचार व्यक्त करते हुए नर्सिंग स्टाफ के कार्यों की सराहना की। कार्यक्रम के सफल आयोजन में प्रभारी मैट्रन शर्मिला, सीनियर सिस्टर इंचार्ज प्रभा, नर्सिंग ऑफिसर वायला, पूजा, वर्षा, पूनम, पवन, अर्पण एवं अरुण पांडेय की विशेष भूमिका रही। कार्यक्रम प्राचार्य डॉ. मयंक शुक्ला की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इस अवसर पर उप प्राचार्य डॉ. श्रुति, सीएमएस डॉ. गजेंद्र, डॉ. पवन सूद, डॉ. एम.सी. गुप्ता, डॉ. डी.वी. सिंह, डॉ. आकृति, डॉ. अभिषेक गुप्ता, डॉ. सौरभ साहू, डॉ. प्रतीक, डॉ. विशाल एवं अन्य चिकित्सकगण की उपस्थिति रही। कार्यक्रम में महाविद्यालय के चिकित्सकगण, नर्सिंग स्टाफ, पैरामेडिकल स्टाफ एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे। अंत में सभी ने मरीजों की सेवा एवं समर्पण भाव से कार्य करने का संकल्प लिया।

प्रौद्योगिकी दिवस पर विज्ञान जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

बांदा। नरैनी क्षेत्र के उच्च प्राथमिक विद्यालय सढ़ा में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस पर विज्ञान जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेज बांदा, विज्ञान भारती बांदा-चित्रकूट विभाग एवं विज्ञान क्लब आरईसी बांदा के संयुक्त तत्वावधान में संपन्न हुआ। मुख्य वक्ता गोविंदबिहारी विश्वकर्मा ने पोखरण परमाणु परीक्षण की ऐतिहासिक उपलब्धि पर प्रकाश डालते हुए कहा कि राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस भारत की वैज्ञानिक क्षमता और आत्मनिर्भरता का प्रतीक है। प्रभारी प्रधानाध्यापक पंकज कुमार एवं सहायक अध्यापक राहुल सविता ने विद्यार्थियों को विज्ञान, तकनीकी और नवाचार के महत्व की जानकारी दी। कार्यक्रम में कक्षा छह के छात्र शुभांशु कुशवाहा ने बैटरी और मोटर से तैयार रिमोट कंट्रोल कार आकर्षण का केंद्र रही। छात्र के नवाचार की सभी ने सराहना की। आरईसी बांदा के निदेशक प्रो. शिव प्रसाद शुक्ला, डॉ. आशुतोष तिवारी तथा विज्ञान भारती संयोजक इंजी. राजेश कुमार सिंह ने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम में विद्यालय स्टाफ, ग्रामीणों सहित 50 से अधिक विद्यार्थियों की सहभागिता रही।

ललितपुर से मुंबई जाने वाली ट्रेनों के ठहराव की उठी मांग

ललितपुर। जिले के रेल यात्रियों, छात्रों, व्यापारियों और श्रमिकों ने क्षेत्र की लंबे समय से चली आ रही रेल समस्याओं को लेकर बड़ा कदम उठाया है। जनसमर्थकों ने उत्तर मध्य रेलवे के झांसी मंडल के मंडल रेल प्रबंधक को संबोधित ज्ञापन तैयार कर ललितपुर रेलवे स्टेशन पर कई महत्वपूर्ण ट्रेनों के ठहराव और मेमो ट्रेन के समय में बदलाव की मांग की है। ज्ञापन में कहा गया है कि ललितपुर से प्रतिदिन बड़ी संख्या में छात्र, प्राइवेट कर्मचारी, व्यापारी और श्रमिक वर्ग के लोग झांसी सहित अन्य शहरों के लिए अप-डाउन करते हैं। इसके अलावा मुंबई और महाराष्ट्र के औद्योगिक क्षेत्रों में रोजगार और व्यापार के लिए जाने वाले यात्रियों की संख्या भी काफी अधिक है, लेकिन ललितपुर स्टेशन पर ट्रेन संख्या 15066 पनवेल एक्सप्रेस, 11079 मुंबई एलटीटी एक्सप्रेस और 12173 उद्योग नगरी एक्सप्रेस का ठहराव नहीं होने से यात्रियों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। यात्रियों का कहना है कि इन ट्रेनों के ठहराव के अभाव में उन्हें दूसरे स्टेशनों तक जाना पड़ता है, जिससे समय, धन और श्रम तीनों की हानि होती है। हाल के दिनों में कई ट्रेनों के निरस्त होने से स्थिति और भी गंभीर हो गई है, जिसके चलते श्रमिक वर्ग को मजबूरी में बसों का सहारा लेना पड़ रहा है। ज्ञापन में यह भी मांग की गई है कि ट्रेन संख्या 64609/64509 खजुराहो-झांसी मेमो के समय में परिवर्तन किया जाए। वर्तमान में यह ट्रेन ललितपुर से सुबह 7.20 बजे रवाना होकर झांसी 10.45 बजे पहुंचती है, जो दैनिक यात्रियों के लिए सुविधाजनक नहीं है। यात्रियों ने मांग की है कि ट्रेन का झांसी पहुंचने का समय बदलकर सुबह 10 बजे किया जाए, ताकि नौकरीपेशा और छात्र वर्ग को राहत मिल सके। ज्ञापन की प्रतिलिपि स्थानीय सांसद, राज्य मंत्री, विधायक तथा जिलाध्यक्ष को भी भेजी जा रही है। क्षेत्रवासियों ने उम्मीद जताई है कि जनहित से जुड़े इस महत्वपूर्ण मुद्दे पर जल्द सकारात्मक निर्णय लिया जाएगा। इस दौरान विमल कुमार, चंद्रभूषण राठौर, सुमित अग्रवाल, संजीव कुमारसेन, डीके चतुर्वेदी, अनूप दीक्षित, मु.हारून, सतीश कुमार, पंकज झा, राजवेन्द्र साहू, उर्मिला साहू, योगेश, सजल साहू, संदीप, सुरेश कुमार, बृजेश कुमार, अनुराग पाराशर, नवीन सोनी, प्रदीप, अरिहन्त जैन, विजय पाल, विपिन यादव के अलावा अनेकों लोग मौजूद रहे।

वार्षिक पत्रिका दयानंद वाटिका का किया विमोचन

महोबा। डीएवी इंटर कॉलेज महोबा की वार्षिक पत्रिका दयानंद वाटिका का विमोचन कार्यक्रम विद्यालय के शिवचरण लाल तिवारी स्मृति सभागार में संपन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अपर जिलाधिकारी न्यायिक सुखबीर सिंह ने मां सरस्वती जी की चित्र पर दीपक प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। तत्पश्चात अपर जिलाधिकारी एवं विद्यालय के प्रबंधक मनोज तिवारी, प्रधानाचार्य एवं गणमान्य नागरिकों ने वार्षिक पत्रिका दयानंद वाटिका का विमोचन किया। कार्यक्रम का संचालन वेद प्रकाश द्विवेदी द्वारा किया गया। इस मौके पर विद्यालय के शिक्षक, कर्मचारी एवं छात्र मौजूद रहे।

बड़े मंगल पर भंडारे में उमड़े श्रद्धालु

फतेहपुर। ज्येष्ठ मास के दूसरे बड़े मंगलवार को फतेहपुर शहर में हनुमान जयंती की भव्यता के साथ भक्ति का अनोखा संगम देखने को मिला। पवनपुत्र बजरंग बली के प्रति भक्तों की अगाध श्रद्धा का प्रदर्शन करते हुए शहर के प्रमुख स्थानों पर विशाल भंडारों का आयोजन किया गया। हनुमान जी की आरती, भजन-कीर्तन और प्रसाद वितरण के बीच हजारों श्रद्धालुओं ने भाग लिया, जो शहर की एकता और सामाजिक सद्भाव का प्रतीक बना। इस अवसर पर प्रशासनिक अधिकारी, कर्मचारी, व्यापारी और आमजन बढ़-चढ़कर योगदान दिया जिला पंचायत में भव्य भंडाराः प्रशासनिक हस्तियां शामिलसर्वप्रथम जिला पंचायत राज कार्यालय परिसर में विशाल भंडारे का आयोजन किया गया। हनुमान जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण और विधिवत आरती के बाद श्रद्धालुओं को पूरी-सब्जी एवं बूंदी का स्वादिष्ट प्रसाद वितरित किया गया। लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया। इस मौके पर ज्ञान धन सिंह अपर प्रमुख अधिकारी दीक्षी सिंह अवर अभियंता ज्योत्सना, आनंद नारायण जे ई सुदेश कुमार सिंह प्रशासनिक अधिकारी नीरज कुमार कार्यकारी अधिकारी ठाकुर प्रसाद बाबू, प्रेम कुमार, रामू, चंद्रपाल, शुभम सिंह, केशव मिश्रा, विकास, बृजेंद्र सिंह, राघव अकाउंटेंट, मनोज सिंह ठेकेदार सहित समस्त स्टाफ उपस्थित रहा। आयोजकों ने बताया कि यह भंडारा ज्येष्ठ मास की परंपरा को जीवंत रखने के उद्देश्य से किया गया पीडब्ल्यूडी गेट पर भक्तों का जमावड़ासी क्रम में पीडब्ल्यूडी गेट पर एक अन्य विशाल भंडारा आयोजित हुआ। यहां हनुमान जी की फोटो स्थापित कर फूलमाला चढ़ाई गई और आरती उतारी गई। इसके बाद सैकड़ों श्रद्धालुओं को प्रसाद वितरित किया गया। अध्यक्ष मनोज कुमार सैनी, राहुल श्रीवास्तव, बलराम सिंह, रामगोपाल शुक्ला, अभिषेक, ऋषि शुक्ला, मनोज सिंह, अंकुर श्रीवास्तव, विजय कुमार, पवन एवं कर्मचारी- अधिकारी बंधु उपस्थित रहे। इस भंडारे ने स्थानीय लोगों में उत्साह भर दिया चौक फाटक पर व्यापारियों का सहयोग छोले-चावल का प्रसादचौक स्थित हजारीलाल फाटक के अंदर व्यापारियों के सहयोग से भंडारा आयोजित किया गया। हनुमान जी की फोटो पर माला अर्पित कर आरती के बाद छोले-चावल एवं शरबत का प्रसाद वितरित किया गया।

साइबर ठगी, फोन कॉल के जरिए खाते से उड़ाये 50 हजार

ललितपुर। जिले में साइबर अपराधियों के हौसले इतने बुलंद हैं कि अब वह पुलिस परिसर में रहने वाले लोगों को भी अपना निशाना बना रहे हैं। ताजा मामले में कोतवाली ललितपुर की पुलिस लाइन में रहने वाले एक युवक के खाते से जालसाजों ने फोन कॉल के जरिए 50 हजार रुपये पार कर दिए। कोर्ट के आदेश पर पुलिस ने अज्ञात आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। पीड़ित रोहित सिंह पुत्र रामगोपाल सिंह, जो वर्तमान में पुलिस लाइन ललितपुर के निवासी हैं, ने बताया कि उनके मोबाइल नंबर पर एक अज्ञात व्यक्ति का फोन आया था। आरोपी ने उन्हें अपनी बातों के जाल में फंसाकर छलपूर्वक उनके स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की ललितपुर शाखा स्थित खाते से 50 हजार रुपए ऑनलाइन ट्रांसफर कर लिए। ?घटना के तुरंत बाद पीड़ित ने भारत सरकार की साइबर हेल्पलाइन 1930 पर शिकायत दर्ज कराई थी।

न्यूनतम वेतन 26 हजार रुपये करने की मांग

मेडिकल एवं सेल्स प्रतिनिधियों ने श्रमिक हितों को लेकर उठायी आवाज

ललितपुर। श्रमिकों और कर्मचारियों के अधिकारों को लेकर मंगलवार को यू.पी.एम.एस.आर.ए. के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने प्रधानमंत्री के नाम संबोधित ज्ञापन जिलाधिकारी के माध्यम से सौंपा। संगठन ने देशभर के मजदूरों और कर्मचारियों की समस्याओं को उठाते हुए न्यूनतम मासिक वेतन 26 हजार रुपये घोषित किए जाने की मांग की। संगठन की ओर से दिए गए ज्ञापन में कहा गया कि वर्तमान समय में श्रमिकों और कर्मचारियों को विभिन्न कार्यस्थलों पर श्रम कानूनों के उल्लंघन, अनुचित श्रम प्रथाओं और रोजगार असुरक्षा जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। ज्ञापन में उत्तर प्रदेश, हरियाणा और एनसीआर क्षेत्रों में श्रमिक आंदोलनों पर की जा रही कार्रवाई पर भी चिंता व्यक्त की गई। संगठन ने मांग करते हुए कहा कि गिरफ्तार मजदूरों और श्रमिक नेताओं की रिहाई, श्रमिकों पर दर्ज मामलों की वापसी, श्रम अधिकारों की सुरक्षा और ट्रेड यूनियनों के अधिकारों का संरक्षण सुनिश्चित किया जाए। इसके साथ ही कर्मचारियों के लिए 8 घंटे का कार्य दिवस, ओवरटाइम का उचित भुगतान, कार्यस्थल पर सुरक्षा व्यवस्था और संविदा कर्मचारियों के नियमितीकरण की भी मांग उठाई गई। ज्ञापन में यह भी मांग की गई कि सेल्स प्रमोशन कर्मचारियों को निश्चित अवधि रोजगार के दायरे से बाहर रखा जाए तथा बढ़ती महंगाई को देखते हुए दैनिक भत्ता और यात्रा भत्ता बढ़ाया जाए। ज्ञापन पर संगठन के महासचिव विमेश कुमार मिश्रा सहित स्थानीय पदाधिकारियों और सदस्यों के हस्ताक्षर मौजूद रहे। संगठन ने उम्मीद जताई कि केन्द्र सरकार श्रमिक हितों से जुड़े इन मुद्दों पर गंभीरता से विचार कर जल्द सकारात्मक निर्णय लेगी। इस दौरान सचिव रवि पंथ, उपाध्यक्ष रूपम झा, कोषाध्यक्ष श्याम सोनी, अक्षय गौतम, सुजीत, निखिल, गौरव कुमार, ललित बघेल, योगेश नामदेव, राजकुमार आदि मौजूद रहे।

संक्षेप

फिक्की फ्लो ने गरुड़ एयरोस्पेस, निओस्काई इंडिया और वाईआरजी के साथ की साझेदारी

नई दिल्ली। फिक्की फ्लो ने गरुड़ एयरोस्पेस, निओस्काई इंडिया और वाईआरजी के साथ तीन ऐतिहासिक समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए। इसके साथ ही, देश के सबसे महत्वाकांक्षी, महिलाओं के नेतृत्व वाले ड्रोन कौशल कार्यक्रम की औपचारिक शुरूआत हुई, जिसने भारत में महिलाओं के नेतृत्व वाले बदलाव की कहानी में एक नया अध्याय लिख दिया है। भारत की ड्रोन क्रांति अब कोई दूर का सपना नहीं रह गई है – यह अब एक नीति बन चुकी है। फिक्की फ्लो की राष्ट्रीय अध्यक्ष, सुश्री पूजा गर्ग ने कहा कि प्रधानमंत्री की 'ड्रोन दीदी' पहल ने एक साहसिक राष्ट्रीय दृष्टिकोण स्थापित किया हैः कि भारत की महिलाएं न केवल ड्रोन तकनीक के उदय को देखेंगी, बल्कि वे इसका नेतृत्व भी करेंगी। 'स्किल इंडिया मिशन' और 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' जैसी पहलें, ठीक इसी तरह के हस्तक्षेप के लिए नैतिक और नीतिगत ढांचा प्रदान करती हैं।

बजाज ऑटो ने की पल्सर 125 पर छूट की घोषणा

पुणे। बजाज ऑटो लिमिटेड ने पल्सर 125 पर सीमित अवधि के लिए एक विशेष ऑफर पेश किया है, जिससे भारत की लोकप्रिय परफॉर्मेंस मोटरसाइकिल अब ग्राहकों के लिए और अधिक आकर्षक बन गई है।पल्सर 125 रेंज की शुरूआती एक्स-शोरूम (दिल्ली) कीमत रुपये 87,255 है।सीमित अवधि के लिए इस रेंज पर रुपये 3,000 की छूट दी जा रही है, जिससे भरोसेमंद विरासत के साथ परफॉर्मेंस चाहने वाले राइडर्स के लिए यह एक और बेहतर विकल्प बन गई है। रेंज को युवाओं को ध्यान में रखकर पेश किए गए नए कलर ऑप्शन्स और अपडेटेड ग्राफिक्स के साथ और आकर्षक बनाया गया है।इन बदलावों के साथ राइडर्स को अब अधिक आधुनिक और फीचर-समृद्ध अनुभव मिलेगा, जबकि परफॉर्मेंस, आराम और विश्वसनीयता जैसी इसकी मूल खूबियों को बरकरार रखा गया है।

नियोपोलिस ब्राण्ड्स के लिए जुटायी गयी 90 करोड़ की राशि

नई दिल्ली। फैशन रीटेल उद्योग के दिग्गज शैलेश चतुवेर्दी ने आज अपने नए उद्यम नियोपोलिस ब्राण्ड्स प्रा. लिमिटेड के लॉन्च की घोषणा की है। इसके लिए उन्होंने जाने-माने निवेशकों से रुपये 90 करोड़ की राशि जुटाई है। नियोपोलिस ने ऐसे ग्लोबल ब्राण्ड्स के साथ साझेदारी की योजना बनाई है, जो अपने घरेलू मार्केट में लीडर हैं तथा भारतीय बाजार में भी ऐसी ही मजबूत स्थिति बनाने की क्षमता रखते हैं।रु 90 करोड़ की शुरूआती फंडिंग का इंतजाम प्रतिष्ठित वेल्थ क्रिएटर्स से किया गया है। इनमें जाने-माने निवेशक जैसे एल्केमी कैपिटल के लशित संघवी एवं आशीष कचोलिया तथा स्टैज्टेजिक पार्टनर्स जैसे ब्रांडिक्स श्री लंका एवं मणिपाल टेक्नोलॉजीज शामिल हैं। नियोपोलिस टीम अपने डोमेन के कुछ अनुभवी विशेषज्ञों को एक साथ लेकर आई है, जो इससे पहले शैलेश के साथ काम कर चुके हैं।इनमें सीएफओ अंकुश टिबरेवाल और उनके पिछले कार्यकाल की भरोसेमंद टीम में शामिल हैं, जो काम को बेहतरीन तरीके से पूरा करने में मदद करेंगी। मुनाफा कमाने के लिए बिजनेस का पैमाना बढ़ाना बेहद जरूरी है। मैं कुछ बड़े ब्राण्ड्स बनाना चाहता हूं, जिनमें से हरेक के भारत में कम से कम 100 स्टोर हो, उपभोक्ताओं की पसंद के अनुसार ई-कॉमर्स में उनका बड़ा योगदान हो तथा कम से कम 40-50 शहरों में डिस्ट्रीब्यूशन हो।

पोगो पर नये शो संपत चंपत के प्रीमियर की घोषणा

नई दिल्ली। वार्नर ब्रदर्स डिस्कवरी (डब्ल्यूबीडी) भारतीय बच्चों के मनोरंजन के लिए अपनी प्रतिबद्धता को मजबूत बनाते हुए 2026 की गर्मियों के लिए लेकर आए हैं समर फीस्टा, जो कंपनी की सबसे बड़ी स्थानीय कंटेंट पहल है। साथ ही इसके दो मशहूर एवं प्रमुख ब्राण्ड्स- पोगो और कार्टून नेटवर्क पर भारत में बने दो ओरिजिनल आईपी भी लॉन्च किए गए हैं। तीन किड्स एंटरटेनमेन्ट चैनलों पर 200 से अधिक नए एपिसोड्स के साथ यह पहल भारत की अपनी रचनात्मक प्रतिभा और ओरिजिनल आईपी के विकास में निवेश के द्वारा अपने पोर्टफोलियो का विस्तार करने की वार्नर ब्रदर्स डिस्कवरी की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। वार्नर ब्रदर्स डिस्कवरी में हम सिर्फ शो नहीं बनाते- बल्कि हम दुनिया का निर्माण करते हैं। पोगो पर संपत चंपत तथा कार्टून नेटवर्क पर कियन एंड किकी के साथ हम फ्रैंचाइज आधार पर ओरिजिनल भारतीय आईपी में निवेश कर रहे हैं। हमारे हर किरदार और हर कहानी को इस तरह से डिजाइन किया जाता है कि यह टेलीविजन और सीमाओं के दायरे से कहीं आगे जाए।

सेंसेक्स में 1456 अंकों की गिरावट

मुंबई। स्थानीय शेयर बाजारों में मंगलवार को लगातार चौथे कारोबारी सत्र में गिरावट आई और बीएसई सेंसेक्स।,456 अंक लुढ़क गया, जबकि एनएसई निफ्टी 23,500 अंक के नीचे आ गया। कच्चे तेल की उंची कीमत और पश्चिम एशिया संघर्ष को लेकर अनिश्चितता से बाजार धारणा पर प्रतिकूल असर पड़ा है।

विदेशी संस्थागत निवेशकों की निरंतर पूंजी निकासी और रुपये के अब तक के सबसे निचले स्तर पर आने से भी निवेशकों की धारणा प्रभावित हुई। चौतरफा बिकवाली के बीच, तीस शेयरों पर आधारित बीएसई सेंसेक्स।,456.04 अंक यानी 1.92 प्रतिशत टूटकर 74,559.24 अंक पर बंद हुआ। कारोबार दौरान, यह।,565.78 अंक लुढ़क कर 74,449.50 अंक पर आ गया था। बीएसई में सूचीबद्ध शेयरों में 3,412 में गिरावट रही जबकि 869 शेयर लाभ में रहे। वहीं 129 के भाव में कोई बदलाव नहीं हुआ। पचास शेयरों पर आधारित एनएसई निफ्टी 436.30 अंक यानी 1.83 प्रतिशत का गोता लगाकर 23,379.55 अंक पर बंद हुआ। पश्चिमी एशिया में बढ़ते तनाव के बीच कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों और एफआईआई की पूंजी निकासी के कारण रुपये के रिकॉर्ड निचले स्तर आने से घरेलू शेयर बाजार दबाव में रहे। उन्होंने कहा कि आईटी और रियल एस्टेट शेयरों में गिरावट व्यापक रही। आईटी शेयरों का प्रदर्शन खराब रहा क्योंकि एआई (कृत्रिम मेधा) संचालित मूल्य दबाव को लेकर चिंताएं बढ़ गईं। चार कारोबारी सत्रों में, बीएसई सूचकांक 3,399.28 अंक यानी 4.36 प्रतिशत लुढ़का जबकि निफ्टी 951.4 अंक यानी 3.91 प्रतिशत नीचे आया है। सेंसेक्स में शामिल शेयरों में से टेक महिंद्रा, अदाणी पोर्ट्स, एचसीएल टेक, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज, टाइटन और भारत इलेक्ट्रॉनिक्स प्रमुख रूप नुकसान में रहे। वहीं सिर्फ भारतीय स्टेट बैंक के शेयर में तेजी रही। मझोली कंपनियों से संबंधित बीएसई मिडकैप सेलेक्ट सूचकांक 2.92 प्रतिशत नीचे आया जबकि छोटी कंपनियों से जुड़ा स्मॉलकैप 2.73 प्रतिशत लुढ़क गया।

वैश्विक तेल मानक ब्रेंट क्रूड 2.75 प्रतिशत बढ़कर 107.1 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया। डॉलर के मुकाबले रुपया मंगलवार को 35 पैसे टूटकर अबतक के सबसे निचले स्तर 95.63 (अस्थायी) पर आ गया। यह मुनाफावसूली कोई नियमित बिकवाली जैसी नहीं है। वर्तमान गिरावट बाजार में भरोसे की कमी का नतीजा लगती है। निवेशक हाल के नीतिगत संदेशों और मितव्ययिता की टिप्पणियों को इस संकेत के रूप में देख रहे हैं कि नीति निर्माता आने वाले कठिन वृहद आर्थिक परिवेश के लिए तैयारी कर रहे हैं।

रुपया 35 पैसे टूटकर 95.63 प्रति डॉलर के अपने सबसे निचले स्तर पर

मुंबई। अमेरिका और ईरान के बीच बढ़ते तनाव के बीच वैश्विक बाजारों में जोखिम से बचने की प्रवृत्ति बढ़ने से मंगलवार को रुपया अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 35 पैसे टूटकर 95.63 (अस्थायी) के अपने सबसे निचले स्तर पर रहा।

विदेशी मुद्रा कारोबारियों ने कहा कि पश्चिम एशिया में 10 सप्ताह से जारी संघर्ष के गहराने और तेल एवं गैस आपूर्ति पर असर पड़ने की आशंकाओं से बाजार की धारणा प्रभावित हुई है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा ईरान के शांति प्रस्ताव को ठुकराए जाने से अनिश्चितता और बढ़ गई है। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया 95.57 पर खुला और कारोबार के दौरान 95.74 के अब तक के निचले स्तर तक आ गया। कारोबार के अंत में यह 95.63 (अस्थायी) पर बंद हुआ जो पिछले बंद भाव से 35 पैसे की गिरावट है। सोमवार को भी रुपया 79 पैसे टूटकर 95.28 के रिकॉर्ड निचले स्तर पर बंद हुआ था। विश्लेषकों के अनुसार, कच्चे तेल की कीमतों में तेजी और डॉलर की मजबूती से रुपये पर दबाव बना हुआ है। हालांकि, निचले स्तर पर भारतीय रिजर्व बैंक के संभावित हस्तक्षेप से कुछ सहारा मिल सकता है। अमेरिका और ईरान के बीच शांति वार्ता को लेकर व्याप्त अनिश्चितता के बीच रुपये में कमजोरी का रुख बना रह सकता है। डॉलर-रुपये की हाजिर विनिमय दर 95.30 से 96 के दायरे में रहने की उम्मीद है। इस बीच, दुनिया की छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले डॉलर की स्थिति को दर्शाने वाला डॉलर सूचकांक 0.33 प्रतिशत बढ़कर 98.28 पर रहा। वैश्विक तेल मानक ब्रेंट क्रूड की वायदा कीमत 3.09 प्रतिशत बढ़कर 107.43 डॉलर प्रति बैरल हो गई। इससे आपूर्ति बाधित होने और ऊर्जा लागत बढ़ने की आशंकाएं बढ़ गई हैं। विशेषज्ञों के मुताबिक, पेट्रोल-डीजल के विवेकपूर्ण इस्तेमाल और विदेशी मुद्रा को बचाने की प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सलाह से देश की ऊर्जा स्थिति से जुड़ी चिंताएं और बढ़ गई हैं। इसका असर घरेलू शेयर बाजार पर भी देखा जा रहा है। बीएसई सेंसेक्स।,456.04 अंक टूटकर 74,559.24 अंक पर बंद हुआ, जबकि एनएसई निफ्टी 436.30 अंक गिरकर 23,379.55 अंक पर आ गया।

कच्चे तेल का वायदा भाव तीन प्रतिशत से ज्यादा बढ़ा

नयी दिल्ली। वायदा कारोबार में मंगलवार को कच्चे तेल की कीमतें तीन प्रतिशत से जूयादा बढ़कर 9,707 रुपये प्रति बैरल हो गईं। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा ईरान में संघर्ष-विराम के टिकने पर संदेह जताये जाने के बाद कच्चे तेल की कीमतों में यह तेजी आई है।

ट्रंप के इस संदेह से फिर से लड़ाई छिड़ने का डर पैदा हो गया है और आशंका है कि इससे पश्चिम एशिया से तेल की आपूर्ति में रुकावट आ सकती है। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज में कच्चे तेल का मई माह में डिलिवरी होने वाला अनुबंध 331 रुपये या 3.53 प्रतिशत की तेजी के साथ 9,707 रुपये प्रति बैरल हो गया। इसमें 12,239 लॉट के लिए कारोबार हुआ।

इसी प्रकार, कच्चे तेल के जून माह में डिलिवरी वाले अनुबंध की कीमत 278 रुपये या 3.05 प्रतिशत की तेजी के साथ 9,392 रुपये प्रति बैरल हो गई। इसमें 5,941 लॉट के लिए कारोबार हुआ। अंतरराष्ट्रीय बाज़ारों में, जुलाई डिलिवरी वाला ब्रेंट तेल 3.02 डॉलर या 2.90 प्रतिशत बढ़कर 107.23 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया। वहीं न्यूयॉर्क में जून अनुबंध वाले वेस्ट टेक्सास इंटरमीडिएट 3.15 डॉलर या 3.21 प्रतिशत बढ़कर 101.22 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया।

मूडीज ने आर्थिक वृद्धि का अनुमान घटाया

नयी दिल्ली। मूडीज रेटिंग्स ने 2026 के लिए भारत की आर्थिक वृद्धि दर का अनुमान मंगलवार को 0.8 प्रतिशत अंक घटाकर छह प्रतिशत कर दिया। यह कटौती निजी खपत और औद्योगिक गतिविधियों में सुस्ती के साथ-साथ उंची ऊर्जा लागत के कारण की गई है।

साख निर्धारण एजेंसी ने अपनी ग्लोबल मैक्रो आउटलुक के मई संस्करण में कहा कि अगले छह महीनों में ऊर्जा कीमतों में बढ़ोतरी तथा ईंधन एवं उर्वरक की कमी का असर विभिन्न देशों में अलग-अलग होगा जो उनकी निर्भरता तथा लचीलेपन पर निर्भर करेगा। वैश्विक परिदृश्य अत्यधिक अनिश्चित बना हुआ है क्योंकि अमेरिका और ईरान के बीच युद्धविराम की स्थिति नाजुक है। हम भारत के लिए वृद्धि दर में करीब 0.8 प्रतिशत अंक तक की गिरावट का अनुमान लगाते हैं। इसके अलावा, 2027 (कैलेंडर वर्ष) के लिए भी मूडीज रेटिंग्स ने भारत की जीडीपी (सकल घरेलू उत्पाद) वृद्धि दर का अनुमान 0.5 प्रतिशत अंक घटाकर छह प्रतिशत कर दिया है। एजेंसी के अनुसार, ऊर्जा आपूर्ति में सुधार और शिपिंग प्रवाह के सामान्य होने के साथ ये दबाव धीरे-धीरे कम होंगे एवं आर्थिक गतिविधियां सुधरेंगी। मूडीज ने साथ ही कहा कि भारत ऊंची तेल कीमतों के प्रति विशेष रूप से संवेदनशील है क्योंकि देश अपनी ऊर्जा जरूरतों का लगभग 90 प्रतिशत आयात करता है।

मजबूत हाजिर मांग से चांदी वायदा कीमतों में तेजी

नयी दिल्ली। पश्चिम एशिया संकट के बीच कारोबारियों द्वारा अपने सौदों का आकार बढ़ाने से मंगलवार को वायदा कारोबार में चांदी की कीमत 0.27 प्रतिशत की तेजी के साथ 2.79 लाख रुपये प्रति किग्रा हो गया।

मल्टी कमोडिटी एक्स्चेंज में चांदी के जुलाई महीने में डिलीवरी वाले अनुबंध की कीमत 751 रुपये यानी 0.27 प्रतिशत की तेजी के साथ 2,79,062 रुपये प्रति किलोग्राम हो गया। इसमें 4,350 लॉट का कारोबार हुआ। बाजार विश्लेषकों ने कहा कि घरेलू बाजार में मजबूती के रुख के कारण कारोबारियों द्वारा ताजा सौदों की लिवाली करने से चांदी वायदा कीमतों में तेजी आई। वैश्विक स्तर पर कॉमेक्स चांदी वायदा 0.91 प्रतिशत की गिरावट के साथ 85.27 डॉलर प्रति औंस रह गयी।

खाद्य कीमतें बढ़ने से अप्रैल में खुदरा मुद्रास्फीति बढ़कर 3.48 प्रतिशत पर

नयी दिल्ली। खाद्य वस्तुओं की कीमतें बढ़ने से अप्रैल में खुदरा मुद्रास्फीति मामूली रूप से बढ़कर 3.48 प्रतिशत हो गई जबकि मार्च में यह 3.40 प्रतिशत थी। मंगलवार को आधिकारिक आंकड़ों में यह जानकारी दी गई। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) की तरफ से जारी आंकड़ों के मुताबिक,वर्ष 2024 को आधार मानकर की गई गणना के आधार पर खुदरा मुद्रास्फीति दर अप्रैल में 3.48 प्रतिशत रही।

वहीं, खाद्य मुद्रास्फीति दर अप्रैल में सालाना आधार पर बढ़कर 4.2 प्रतिशत हो गई, जो मार्च में 3.87 प्रतिशत थी। आधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में मुद्रास्फीति की दर क्रमशः 3.74 प्रतिशत और 3.16 प्रतिशत दर्ज की गई। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने पिछले महीने वित्त वर्ष 2026-27 के लिए अखिल भारतीय उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) पर आधारित मुद्रास्फीति का अनुमान 4.6 प्रतिशत रखा था। इसमें पहली तिमाही के लिए चार प्रतिशत महंगाई का अनुमान जताया गया। आरबीआई ने कहा था कि पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष के कारण ऊर्जा संसाधनों की ऊंची कीमतें और संभावित अल नीनो प्रभाव के कारण महंगाई बढ़ने का जोखिम बना हुआ है।

सरकारी बैंकों का शुद्ध लाभ 2025-26 में 11 प्रतिशत बढ़कर 1.98 लाख करोड़ : वित्त मंत्रालय

नयी दिल्ली। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों (पीएसबी) ने वित्त वर्ष 2025-26 में 1.98 लाख करोड़ रुपये का अब तक का सबसे अधिक शुद्ध लाभ दर्ज किया है। वित्त मंत्रालय ने मंगलवार को बताया कि यह लगातार चौथा वर्ष है जब सरकारी बैंक मुनाफे में रहे हैं।

मंत्रालय के अनुसार, परिसंपत्ति की गुणवत्ता में सुधार, ऋण के स्वस्थ विस्तार और आय में वृद्धि ने वित्त वर्ष 2025-26 के दौरान सरकारी बैंकों की लाभप्रदता में योगदान दिया। इस दौरान कुल परिचालन लाभ 3.21 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच गया, जबकि कुल शुद्ध लाभ सालाना आधार पर 11.1 प्रतिशत बढ़कर 1.98 लाख करोड़ रुपये के ऐतिहासिक उच्च स्तर पर रहा। सरकारी बैंकों का कुल कारोबार 31 मार्च, 2026 तक 283.3 लाख करोड़ रुपये हो गया, जो पिछले वर्ष की तुलना में 12.8 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है। कुल जमा राशि सालाना आधार पर 10.6 प्रतिशत बढ़कर 156.3 लाख करोड़ रुपये रही, जो जमाकर्ताओं के निरंतर भरोसे और बैंकों द्वारा मजबूत संसाधन जुटाने का परिणाम है। कुल ऋण में सालाना आधार पर 15.7 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई और यह 127 लाख करोड़ रुपये रहा। यह अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में ज्ण की निरंतर मांग का संकेत है। मंत्रालय ने बयान में कहा, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों ने वित्त वर्ष 2025-26 के दौरान मजबूत वित्तीय प्रदर्शन जारी रखा, जो निरंतर व्यापार वृद्धि, बेहतर परिसंपत्ति गुणवत्ता, रिकॉर्ड लाभप्रदता और मजबूत पूंजी की स्थिति को दर्शाता है। मंत्रालय ने आगे कहा कि यह बेहतर प्रदर्शन तेजी से बढ़ती भारतीय अर्थव्यवस्था की ज्ण आवश्यकताओं को पूरा करने में इन बैंकों की स्थिरता और बढ़ी हुई संस्थागत क्षमता को सिद्ध करता है।

पेज एक का शेष

भारत के

(आईओसी), भारत पेट्रोलियम कॉरपोरेशन (बीपीसीएल) और हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉरपोरेशन (एचपीसीएल) ने बिना किसी रुकावट के आपूर्ति सुनिश्चित की है। अंतरराष्ट्रीय कीमतों में 50 प्रतिशत की वृद्धि के बावजूद, पेट्रोल और डीजल दो साल पुरानी दरों पर ही मिल रहे हैं।

ईंधन की

बचाने की भी अपील की। साथ ही कहा कि सरकारी भवनों, घरों, निजी प्रतिष्ठानों आदि में अनावश्यक बिजली का प्रयोग न हो। निजी प्रतिष्ठानों/व्यावसायिक कॉम्प्लेक्स आदि में रात 10 बजे के बाद सजावटी लाइटों का न्यूनतम प्रयोग हो। मुख्यमंत्री ने सार्वजनिक साइकिलिंग शेयरिंग योजना को प्रोत्साहित करने पर जोर दिया। उन्होंने लोगों से आग्रह किया कि अगले छह माह तक गैर आवश्यक विदेशी यात्राएं न करें। सीएम ने नागरिकों, वेडिंग प्लानर्स आदि से देश में ही आयोजन करने की अपील की। कहा कि यूपी में भी हैरिटेज, ईको साइट्स, किले समेत अनेक अच्छे स्थल हैं, वहां भी डेस्टिनेशन वेडिंग को बढ़ावा दें। विजिट माई स्टेट अभियान शुरू किया जाए, जिसमें वेलनेस, ईको, ग्रामीण, वन्यजीव तथा खानपान पर आधारित पर्यटन को बढ़ावा मिले। यूपी पहला राज्य है, जिसने 'वन डिस्ट्रिक्ट, वन कुजीन' को लागू किया। सीएम ने संग्रहालयों, स्मारकों आदि को कुछ समय निःशुल्क किए जाने का निर्देश दिया। पर्यटन विभाग होटल, एयरलाइंस, टूर ऑपरेटर, ट्रेवल एजेंट आदि के साथ बैठक कर आवश्यक निर्देश दे। उन्होंने कहा कि दुनिया में जहां भी उत्तर प्रदेश के प्रवासी नागरिक हैं, उन्हें प्रदेश में घूमने के लिए प्रेरित करें। इसके लिए शॉपिंग फेस्टिवल, हेरिटेज टूर, गोशाला, टेंपल आदि का दर्शन कराएं। स्थानीय कारीगरों, स्वयं सहायता समूहों, स्थानीय उद्यमियों की ओर से निर्मित उत्पादों के प्रयोग को बढ़ावा दें। त्योहारों, शादियों समेत विभिन्न आयोजनों में भारत में बने उपहारों, उत्पादों, हस्तशिल्प सामग्रियों को बढ़ावा दें। राज्य सरकार की ओर से ओडीओपी तथा जीआई टैग प्राप्त उत्पादों को उपहार के रूप में दिया जाए। स्वदेशी को बढ़ावा दिया जाए। मुख्यमंत्री ने प्रदेशवासियों से खाद्य तेल के उपयोग में कमी लाने का आग्रह किया। स्वास्थ्य, घरेलू बचत व आयात पर निर्भरता कम करने के लिए यह कदम जरूरी है। नाट्य श्रृंखलाओं के जरिए लोगों को जागरूक करें। स्वास्थ्य विभाग पोषण जागरूकता शिविर लगाए।

नीट यूजी

के लिए यह परीक्षा अब नए सिरे से आयोजित की जाएगी, जिसकी तिथियां अलग से अधिसूचित की जाएंगी। राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर जारी एक बयान में कहा कि यह निर्णय पारदर्शिता बनाए रखने और राष्ट्रीय परीक्षा प्रणाली में विश्वास को बरकरार रखने के लिए लिया गया है। उसने कहा केंद्रीय एजेंसियों के साथ मिलकर एनटीए द्वारा तथ्यों को परखे जाने और कानून प्रवर्तन एजेंसियों द्वारा साझा की गई जानकारी के आधार पर राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी ने तीन मई 2026 को आयोजित नीट (यूजी) 2026 परीक्षा को भारत सरकार की मंजूरी से रद्द करने और अलग से अधिसूचित तिथियों पर परीक्षा पुनः आयोजित करने का निर्णय लिया है। नीट यूजी 2026 परीक्षा तीन मई को भारत के 551 शहरों और अन्य देशों के 14 शहरों में आयोजित की गई थी। यह परीक्षा लगभग 23 लाख पंजीकृत परीक्षार्थियों के लिए आयोजित की गयी थी। एजेंसी ने कहा कि प्राप्त सूचनाओं और कानून प्रवर्तन एजेंसियों द्वारा साझा किए गए निष्कर्षों के आधार पर यह स्पष्ट हो गया है कि वर्तमान परीक्षा प्रक्रिया को जारी रखना उचित नहीं है। उसने कहा पुनः होने वाली परीक्षा की तिथियां और उनके लिए जारी किये जाने वाले प्रवेश पत्र की समय-सारणी अगले कुछ दिनों में एजेंसी के आधिकारिक माध्यमों से सूचित की जाएगी। एनटीए ने कहा कि सरकार ने परीक्षा से जुड़े आरोपों की व्यापक जांच के लिए मामले को केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) को सौंपने का फैसला किया है। उसने कहा एनटीए सीबीआई को पूरा सहयोग देगी और जांच के लिए आवश्यक सभी सामग्री, रिकॉर्ड और सहायता प्रदान करेगी। एनटीए ने कहा यह निर्णय विद्यार्थियों के हित में और राष्ट्रीय परीक्षा प्रणाली में भरोसे को ध्यान में रखते हुए लिया गया है। एजेंसी ने स्वीकार किया कि परीक्षा को दोबारा आयोजित करने से परीक्षार्थियों और उनके परिवारों को वाकई बड़ी असुविधा होगी। उसने कहा कि लेकिन परीक्षा प्रणाली में विश्वास को बड़ी और स्थायी क्षति से बचाने के लिए यह निर्णय आवश्यक था। एनटीए के अनुसार, मई 2026 के सत्र में पंजीकृत उम्मीदवारों की जानकारी और चुने गए परीक्षा केंद्रों को पुनः आयोजित होने वाली परीक्षा में शामिल किया जाएगा। बयान में कहा गया है, नये पंजीकरण की आवश्यकता नहीं होगी और कोई अतिरिक्त परीक्षा शुल्क नहीं लिया जाएगा।

बयान के अनुसार विद्यार्थियों द्वारा भुगतान की गई फीस वापस कर दी जाएगी और परीक्षा एनटीए के आंतरिक संसाधनों का उपयोग कर पुनः आयोजित की जाएगी। एजेंसी ने कहा कि परीक्षा की नयी तारीखें और संशोधित प्रवेश पत्र की समय सारणी की सूचना आने वाले दिनों में आधिकारिक चैनलों के माध्यम से दी जायेगी तथा परीक्षार्थियों एवं अभिभावकों को सलाह है कि वे केवल एजेंसी द्वारा जारी की गई सत्यापित जानकारी पर ही भरोसा करें। एनटीए ने रविवार को एक्स पर पोस्ट किया था कि प्रश्न पत्रों को जीपीएस-ट्रैकिंग वाले वाहनों में ले जाया गया था, जिन पर विशिष्ट, ट्रेस करने योग्य वॉटरमार्क लगे थे तथा परीक्षा केंद्रों की निगरानी एक केंद्रीय नियंत्रण कक्ष से एआई-सहायता प्राप्त सीसीटीवी निगरानी के माध्यम से की गई थी। उसने कहा था, राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी को नीट (यूजी) 2026 से संबंधित कथित अनियमितताओं के संबंध में राजस्थान विशेष अभियान समूह द्वारा शुरू की गई कार्वाई की जानकारी है। तीन मई, 2026 को परीक्षा निर्धारित समय पर और पूर्ण सुरक्षा प्रोटोकॉल के तहत आयोजित की गई थी।

सीबीआई ने

दिया। अधिकारियों ने बताया कि केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय के उच्च शिक्षा विभाग से लिखित शिकायत मिलने के बाद सीबीआई ने कार्वाई शुरू की। अधिकारियों ने बताया कि केंद्र से निर्देश मिलने के बाद सीबीआई ने तत्परता से कार्वाई करते हुए भारतीय न्याय संहिता के तहत आपराधिक साजिश, धोखाधड़ी, आपराधिक विश्वासघात तथा साक्ष्य नष्ट करने और भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के तहत अपराधों और सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों की रोकथाम) अधिनियम 2024 के तहत मामला दर्ज किया। एजेंसी ने विभिन्न स्थानों पर कई विशेष दलों को भेजा है और राजस्थान पुलिस के विशेष अभियान समूह (एसओजी) से भी सामग्री एकत्र करेगी। सीबीआई ने इससे पहले 2024 के नीट परीक्षा प्रश्न पत्र लीक मामले को सुलझाया था।

घटनाक्रम की जानकारी रखने वाले एक अधिकारी ने बताया, यह भी आरोप लगाया गया है कि एनटीए को नीट (यूजी) 2026 परीक्षा आयोजित होने से पहले परीक्षा से संबंधित कुछ दस्तावेजों के कथित प्रसार के बारे में शिकायत और सूचना प्राप्त हुई थी।

चंद्रनाथ रथ

है, जो जांच का प्रारंभिक बिंदु बन जाता है फिर जांच स्वतंत्र रूप से की जाती है। इसके बाद सीबीआई सक्षम न्यायालय के समक्ष अंतिम रिपोर्ट दाखिल करती है, जो उसकी जांच के निष्कर्षों के आधार पर आरोपपत्र या मामले को बंद करने संबंधी याचिका हो सकती है। पश्चिम बंगाल पुलिस ने रथ हत्याकांड के सिलसिले में सोमवार को उत्तर प्रदेश और बिहार से तीन लोगों को गिरफ्तार किया। यह गिरफ्तारी एक संदिग्ध द्वारा टोल प्लाजा पर किए गए यूपीआई लेनदेन से मिले सुरागों के आधार पर की गई। तीनों आरोपियों को रविवार को हिरासत में लिया गया और हत्या मामले की जांच के लिए गठित विशेष जांच दल (एसआईटी) ने उन्हें अगली सुबह गिरफ्तार कर लिया। तकनीकी निगरानी, डिजिटल ट्रैकिंग और अन्य सूचनाओं के आधार पर एसआईटी के सदस्यों को उत्तर प्रदेश और बिहार भेजा गया था।

राजनाथ सिंह

नजर आए। उनके बगल में यूपी सरकार में मंत्री ओमप्रकाश राजभर और संजय निषाद बैठे थे। इस दौरान केंद्रीय मंत्री अनुप्रिया पटेल भी मौजूद रहीं।असम में तीसरी बार भाजपा सरकार बनने जा रही है। असम लगातार देश के साथ कदमताल करते हुए आगे बढ़ रहा। पश्चिम बंगाल में आजादी के बाद पहली बार भाजपा ने सनातन संस्कृति की पताका फहराने का काम किया। पूरे देश में जिस ढंग से भाजपा आगे बढ़ रही है, उसी तरह असम और बंगाल विकसित भारत के संकल्प को पूरा करने के लिए आगे बढ़ेंगे।

एचएएल के

कर दिए और क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त को निर्देश दिया कि वह सुप्रीम कोर्ट के फैसलों और अदालत की टिप्पणियों के अनुरूप नए सिरे से निर्णय लेकर कर्मचारियों के संयुक्त विकल्प पर विचार करे।

याचियों की ओर से तर्क दिया गया था कि एचएएल एक छूट प्राप्त प्रतिष्ठान है, लेकिन कर्मचारी पेंशन योजना-1995 उस पर पूरी तरह लागू होती है। कर्मचारियों और नियोक्ता ने वास्तविक वेतन पर 8.33 प्रतिशत अंशदान जमा किया, इसलिए उन्हें उच्च पेंशन का अधिकार है। यह भी दलील दी गई कि सुप्रीम कोर्ट ने भी अपने दो फैसलों में स्पष्ट कर दिया है कि संयुक्त विकल्प का लाभ कर्मचारियों को दिया जाएगा। वहीं ईपीएफओ की ओर से तर्क दिया गया कि एचएएल ट्रस्ट नियमों में पेंशन योग्य वेतन की सीमा तय है और उसमें संशोधन नहीं हुआ है, इसलिए वास्तविक वेतन पर उच्च पेंशन नहीं दी जा सकती। हालांकि एचएएल प्रबंधन ने अदालत में स्पष्ट किया कि उसे उच्च पेंशन दिए जाने पर कोई आपत्ति नहीं है और कर्मचारियों से वास्तविक वेतन के आधार पर कटौती पहले ही की जा चुकी है। कोर्ट ने फैसला सुनाते हुए कहा कि ट्रस्ट नियमों का कोई भी प्रावधान यदि कर्मचारी हित में बने वैधानिक प्रावधानों और पेंशन योजना-1995 से कम लाभकारी है, तो वह प्रभावी नहीं माना जाएगा। कोर्ट ने कहा कि लाभकारी योजना का उद्देश्य कर्मचारियों को अधिक सुरक्षा देना है और ट्रस्ट नियमों के जरिए उस अधिकार को सीमित नहीं किया जा सकता।

विराज सागर

के अध्यक्ष विराज सागर दास ने भारी संख्या में श्रद्धालुओं को प्रसाद वितरण किया। इस मौके पर बीबीडी ग्रुप की वाइस प्रेसिडेंट श्रीमती देवांशी दास, बीबीडी के मुख्य अधिशासी निदेशक आर.के. अग्रवाल, गोपाल आर्य, अखिल भारतीय पर्यावरण गतिविधि संयोजक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, प्रो. राम कुमार तिवारी, विवेक उपाध्याय, सुश्री हर्षिता श्रीवास्तव मुख्य रूप से उपस्थित रहीं।

इस मौके पर विराज सागर दास ने कहा कि प्रतिवर्ष ज्येष्ठ माह के प्रत्येक मंगलवार को भण्डारे का आयोजन किया जाता है। इस प्रकार के आयोजनों से न सिर्फ मन को शांति मिलती है बल्कि धर्म के प्रति आस्था और अधिक प्रगाढ़ होती है। इस पावन माह में लोगों को प्रसाद वितरण कर बहुत खुशी मिलती है। साथ ही यह पुण्य कार्य है। उन्होंने प्रसाद वितरण के इस मौके पर सभी लोगों के सुख,समृद्धि एवं उन्नति की कामना की है। उन्होंने कहा कि लोगों के बीच उनका अपनापन पाकर और उनकी सेवा करने का मौका मिलने पर बड़ी खुशी होती है। सही मायने में यही ईश्वर के प्रति सच्चा प्रेम है और यही जीवन का सबसे बड़ा आनंद है। उन्होंने कहा कि वह सनातनी परंपराओं का पूरी तरह निर्वहन कर रहे हैं और इसके लिए दृढ़ संकल्पित हैं।

गुजरात ने हैदराबाद को दिया 169 रन का लक्ष्य

आईपीएल : सुदर्शन-सुंदर के अर्धशतक; प्रफुल और साकिब ने 2-2 विकेट लिए

एजेंसी

अहमदाबाद। गुजरात टाइटंस ने आईपीएल 2026 के 56वें मैच में सनराइजर्स हैदराबाद को 169 रन का टारगेट दिया। अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में हैदराबाद के कप्तान पैट कमिंस ने टॉस जीतकर बॉलिंग चुनी। गुजरात ने 20 ओवर में 5 विकेट खोकर 168 रन बनाए। साई सुदर्शन ने सबसे ज्यादा 61 रन की पारी खेली। वाशिंगटन सुंदर ने 33 बॉल पर 50 रन बनाए। हैदराबाद के लिए प्रफुल हिंगे और साकिब हुसैन ने 2-2 विकेट लिए। उनके अलावा पैट कमिंस को एक विकेट मिला। गुजरात टाइटंस ने आखिरी ओवर में 10 रन जोड़कर 5 विकेट पर 168 रन बनाए। वॉशिंगटन सुंदर ने 32 गेंदों में अर्धशतक पूरा किया, लेकिन अगली ही गेंद पर आउट हो गए। साकिब हुसैन की ऑफ-पेस गेंद पर सुंदर बड़ा शॉट खेलने गए, लेकिन गेंद हवा में ऊंची चली गई। विकेटकीपर ईशान किशन ने दौड़ते हुए शानदार डाइविंग कैच पकड़ा।

आखिरी गेंद पर राहुल तेवतिया ने चौका लगाकर टीम को 168 रन तक पहुंचाया। शुरुआती झटकों के बाद साई सुदर्शन और सुंदर ने पारी संभाली। सुदर्शन ने 61 रन की अहम पारी खेली। 19वें ओवर में वॉशिंगटन सुंदर ने 18 रन बटोरे। उन्होंने ओवर में दो चौके और एक शानदार छक्का लगाया। सुंदर ने लगभग यॉर्कर गेंद को फाइन लेग के ऊपर से लैप कर चौका बटोरा, जबकि आखिरी गेंद पर दमदार सिक्स जड़ दिया। इससे पहले उन्होंने शॉर्ट गेंद पर पुल शॉट खेलकर भी बाउंड्री हासिल की। इस ओवर के बाद गुजरात टाइटंस का स्कोर 19 ओवर में 158/4 पहुंच गया। प्रफुल हिंगे ने 18वें ओवर में शानदार गेंदबाजी करते हुए सिर्फ 7 रन दिए। उन्होंने जेसन होल्डर और वॉशिंगटन सुंदर को बड़े शॉट खेलने का मौका नहीं दिया। हिंगे ने लगातार यॉर्कर और हार्ड लेंथ गेंदों से बल्लेबाजों पर दबाव बनाए रखा। सुंदर ने जरूर पॉइंट के जरिए चौका निकाला, लेकिन बाकी गेंदों पर गुजरात खुलकर रन नहीं बना सका। 18 ओवर के बाद गुजरात का स्कोर 140/4 पहुंचा। 17वें ओवर में साई सुदर्शन तेज रन बनाने के प्रयास में अपना विकेट गंवा बैठे। साकिब हुसैन की यॉर्कर गेंद पर उन्होंने रिवर्स लैप खेलने की कोशिश की, लेकिन सही पोजिशन में नहीं आ सके। गेंद बल्ले पर ठीक से नहीं आई और शॉर्ट थर्ड पर खड़े प्रफुल हिंगे के हाथों में चली गई। हिंगे ने थोड़ा असहज अंदाज में कैच जरूर पकड़ा, लेकिन मौका नहीं गंवाया।

सुदर्शन 44 गेंदों में 61 रन बनाकर आउट हुए। उनकी पारी में 5 चौके और 2 छक्के शामिल रहे। सुदर्शन आईपीएल 2026 में 500 रन बनाने वाले पहले बैटर बने। उन्होंने लगातार तीसरी फिफ्टी लगाई। 14वें ओवर में साई सुदर्शन ने शानदार बल्लेबाजी करते हुए चौके के साथ अपना अर्धशतक पूरा किया। शिवांग कुमार की फुल लेंथ गेंद पर उन्होंने एक घुटना टेककर डीप स्क्वायर लेग और फाइन लेग के बीच बेहतरीन शॉट खेला। यह आईपीएल 2026 में सुदर्शन की पांचवीं फिफ्टी रही।

गुजरात टाइटंस ने 13वें ओवर में 10 रन जुटाए। साई सुदर्शन ने साकिब हुसैन की स्लोअर गेंद पर शानदार सिक्स लगाकर रनगति बढ़ाई। उन्होंने बैक नी मोड़ते हुए गेंद को मिड-ऑफ के ऊपर से स्टैंड्स में पहुंचाया। सुदर्शन ओवर खत्म होने तक 37 गेंदों में 48 रन बनाकर नाबाद रहे और अपने अर्धशतक के करीब पहुंच गए। वहीं वॉशिंगटन सुंदर ने भी स्ट्राइक रोटेट करते हुए साझेदारी आगे बढ़ाई। सनराइजर्स के स्पिनर शिवांग कुमार ने अपने पहले ओवर में गुजरात टाइटंस के बल्लेबाजों को खुलकर खेलने नहीं दिया। उन्होंने सिर्फ 6 रन खर्च किए। साई सुदर्शन और वॉशिंगटन सुंदर ने ज्यादातर गेंदों पर सिंगल लेकर स्ट्राइक रोटेट की। ओवर में दो वाइड भी आई, लेकिन शिवांग ने गुगली और टाइट लाइन से रनगति पर अंकुश बनाए रखा। 12 ओवर के बाद गुजरात का स्कोर 84/3 रहा। सनराइजर्स के कप्तान पैट कमिंस ने गुजरात को तीसरा झटका दिया। फुल लेंथ गेंद पर निशांत सिंधु बड़ा शॉट खेलने गए, लेकिन धीमी पिच पर टाइमिंग सही नहीं बैठी। गेंद सीधी लॉन्ग-ऑफ पर खड़े हेनरिक क्लासन के हाथों में चली गई। सिंधु 14 गेंदों में 22 रन बनाकर आउट हुए।

उन्होंने अपनी छोटी लेकिन तेज पारी में 3 चौके और 1 सिक्स लगाया। गुजरात ने आठवें ओवर में 9 रन जोड़े। ईशान मलिंगा के ओवर की पहली ही गेंद पर साई सुदर्शन ने बैकवर्ड पॉइंट के पास शानदार चौका जड़ा। हालांकि इसके बाद मलिंगा ने अच्छी वापसी करते हुए बल्लेबाजों को बड़े शॉट खेलने का मौका नहीं दिया। निशांत सिंधु एक गेंद पर ड्राइव लगाने की कोशिश में बीट भी हुए। 8 ओवर के बाद गुजरात का स्कोर 56/2 रहा। गुजरात ने 7वें ओवर में 13 रन बटोरे। निशांत सिंधु ने नीतीश कुमार रेड्डी पर एक छक्का और एक चौका जड़ा। उन्होंने शॉर्ट गेंद पर डीप मिडविकेट के ऊपर शानदार सिक्स लगाया, जबकि ओवर की आखिरी गेंद पर मिड-ऑफ के ऊपर से चौका बटोर लिया। इसी ओवर में प्रफुल हिंगे ने बेहतरीन फील्डिंग करते हुए संभावित चौका बचाया। 7 ओवर के बाद गुजरात का स्कोर 47/2 रहा। हैदराबाद के गेंदबाजों ने शुरूआती ओवरों में गुजरात टाइटंस को खुलकर खेलने का मौका नहीं दिया। पैट कमिंस ने कसी हुई गेंदबाजी करते हुए अपने दो ओवरों में सिर्फ 8 रन दिए। शुभमन गिल को नीतीश कुमार रेड्डी के ओवर में जीवनदान मिला, लेकिन वे इसका ज्यादा फायदा नहीं उठा सके और प्रफुल की गेंद पर मिड-ऑन में हेनरिक क्लासन को कैच दे बैठे।

केकेआर के गेंदबाजों के सामने आरसीबी के बल्लेबाजों को दिखाना होगा दम

रायपुर। प्लेऑफ की दहलीज पर खड़ी रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) की टीम को अगर अंतिम चार में अपनी जगह लगभग सुनिश्चित करनी है तो उसके बल्लेबाजों को बुधवार को यहां कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) के गेंदबाजों के सामने आक्रामक प्रदर्शन करना होगा। आरसीबी फिलहाल 14 अंकों के साथ अंक तालिका में शीर्ष पर है, लेकिन मंगलवार को होने वाले मैच के बाद इस स्थान पर सनराइजर्स हैदराबाद या गुजरात टाइटन्स काबिज हो जाएंगे जिनके पास भी 14 अंक हैं।

आरसीबी ने अब तक अच्छा प्रदर्शन किया है लेकिन पिछले कुछ मैच में उसके बल्लेबाज अपेक्षित खेल नहीं दिखा पाए। मुंबई इंडियंस के खिलाफ पिछले मैच में 167 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए उसकी बल्लेबाजी लड़खड़ा गई थी और उसने बमुश्किल जीत हासिल की थी। उसकी टीम आगे फिर से इस तरह की परिस्थिति से नहीं गुजरना चाहेगी। पिछले मैच में वह क्रुणाल पंड्या के अर्धशतक और अंतिम ओवर में भुवनेश्वर कुमार के छक्के से ही लक्ष्य तक पहुंच पाई

थी। आरसीबी के कप्तान रजत पाटीदार ने टूर्नामेंट के शुरू में अच्छा प्रदर्शन किया था लेकिन पिछले कुछ मैच में वह रन बनाने के लिए जूझते हुए नजर आए। अगर आरसीबी को वापसी करनी है तो पाटीदार को आगे बढ़कर नेतृत्व करना होगा। पिछली छह पारियों में वह केवल एक बार पचास से अधिक और एक बार बीस से अधिक का स्कोर ही बना पाए हैं। इससे आरसीबी की मध्यक्रम की बल्लेबाजी कुछ कमजोर पड़ गई है, लेकिन देवदत्त पडिक्कल और टिम डेविड जैसे अन्य बल्लेबाजों के योगदान ने उसे मुश्किलों से बाहर निकलने में मदद मिली।

अब उसके बल्लेबाजों का सामना केकेआर के मजबूत गेंदबाजी आक्रमण से होगा जिसमें सुनील नारायण और वरुण चक्रवर्ती जैसे रहस्यमयी स्पिनर शामिल हैं। उन्हें कार्तिक त्यागी, वैभव अरोड़ा और अनुकूल रॉय जैसे घरेलू गेंदबाजों का अच्छा सहयोग मिल रहा है। गेंदबाजों के अच्छे प्रदर्शन से केकेआर ने शुरू में लड़खड़ाने के बाद लगातार चार जीत दर्ज की हैं। अगर रायपुर की पिच पिछले मैच की तरह ही चिपचिपी रहती है और गेंद रुककर बल्ले पर आ रही हो तो आरसीबी के बल्लेबाजों को केकेआर के गेंदबाजों के सामने काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है। तीन बार की चैंपियन केकेआर की टीम अभी भी 10 मैचों में नौ अंकों के साथ तालिका में आठवें स्थान पर है और यहां थोड़ी सी चूक भी उसे प्ले-ऑफ की दौड़ से बाहर होने के करीब पहुंचा देगा। ऐसी किसी स्थिति से बचने के लिए केकेआर के बल्लेबाजों को अच्छा प्रदर्शन करना होगा।

संक्षेप

लक्ष्य फाइनल में, 4 भारतीय मुक्केबाजों को कांस्य

ताशकंद। भारत के लिये एशियाई अंडर 17 मुक्केबाजी चैम्पियनशिप में मंगलवार का दिन चुनौतीपूर्ण रहा जब लक्ष्य फोगाट अकेले फाइनल में पहुंचे जबकि चार अन्य मुक्केबाजों को सेमीफाइनल में हारने के बाद कांस्य पदक से संतोष करना पड़ा। 75 किलोवर्ग में लक्ष्य ने कोरिया के सियुंगमिन ली को 5-0 से हराकर फाइनल में जगह बनाई। सेमीफाइनल में नरेंद्र नेल्ला (46 किलो) को उजबेकिस्तान के अब्दुल्लाह नूरालीव ने 5-0 से हराया। यश यादव (50 किलो) को मंगोलिया के एस उसुखबातार ने 4-1 से मात दी जबकि निवेश पाल 54 किलोवर्ग में उजबेकिस्तान के अब्दुलबोसित युर्सुनबोएव से 5-0 से हार गए। नमन (70 किलो) को उजबेकिस्तान के अब्दुवोहिद अब्दुमाजिदोव ने 3-2 से हराया।

कृष त्यागी कर्नाटक ओपन के प्री क्वार्टर फाइनल में

बेंगलुरु। वाइल्ड कार्ड धारक कृष त्यागी ने घरेलू परिस्थितियों का फायदा उठाते हुए मंगलवार को यहां सीधे सेट में जीत के साथ कर्नाटक ओपन एटीपी चैलेंजर टेनिस टूर्नामेंट के प्री क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई। सत्र का अपना पहला पेशेवर टूर्नामेंट खेल रहे त्यागी ने जापान के क्वालीफायर ताइयो यमानाका को 6-2, 7-5 से हराया। मुकुंद शशिकुमार और मनीष सुरेशकुमार भी अगले दौर में प्रवेश करने में सफल रहे। मुकुंद ने मलेशिया के मित्सुकी वेई कांग लियोंग को 6-3, 7-6 से हराया जबकि मनीष ने अमेरिका के क्वालीफायर रोनित कार्की को 6-4, 7-6 से शिकस्त दी। कई भारतीय खिलाड़ियों को हालांकि शिकस्त भी झेलनी पड़ी। दिग्विजय प्रताप सिंह को कड़ी चुनौती पेश करने के बावजूद चौथे वरीय फिलिप सेकुलिक के खिलाफ 6-7, 6-7 से शिकस्त झेलनी पड़ी। छठे वरीय करण सिंह ने पहले सेट में 5-3 की बढ़त बनाने के बावजूद जापान के कोकोरो इसोमुरा के खिलाफ मुकाबला 6-7, 3-6 से गंवा दिया जबकि डी प्रज्जवल देव को ऑस्ट्रेलिया के जोशुआ चार्लटन ने 6-1, 6-4 से हराया। क्वालीफायर आदित्य विशाल बालसेकर को इजराइल के अमित वेल्स ने 6-2, 6-2 से हराया।

मां बनने के बाद खिलाड़ियों की वापसी में मदद करती है दुनिया : साक्षी मलिक

एजेंसी

नयी दिल्ली। ओलंपिक कांस्य पदक विजेता पहलवान साक्षी मलिक ने भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) के साथ खेलों में वापसी को लेकर चल रहे विवाद में विनेश फोगाट का समर्थन करते हुए कहा कि दुनिया भर में मां बनने के बाद महिलाओं को वापसी के लिए नियमों में ढील दी जा रही है, वहीं दूसरी ओर विनेश की राह रोकने की कोशिश हो रही है। डब्ल्यूएफआई द्वारा अयोग्य घोषित किए जाने के बावजूद विनेश गोंडा में आयोजित राष्ट्रीय ओपन रैंकिंग टूर्नामेंट में हिस्सा लेने पहुंचीं। महासंघ ने उन्हें लंबा कारण बताओ नोटिस जारी करते हुए कहा कि डोपिंग रोधी नियमों के तहत संन्यास के बाद वापसी करने वाले खिलाड़ियों के लिए अनिवार्य छह महीने की नोटिस अवधि पूरी किए बिना उन्हें प्रतियोगिता में भाग लेने की अनुमति नहीं दी जा सकती।

विनेश को रोका जा रहा है

दस महीने के बेटे की मां विनेश ने नोटिस का जवाब देते हुए पीछे हटने से इनकार कर दिया है, जबकि डब्ल्यूएफआई अपने रुख पर कायम है। यौन उत्पीड़न के आरोपों को लेकर डब्ल्यूएफआई के तत्कालीन अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह के खिलाफ हुए चर्चित आंदोलन के दौरान साक्षी, विनेश की करीबी सहयोगी थीं।

हम सभी आशान्वित, हमें पता है कि यह संभव है : वाटसन

रायपुर। सहायक कोच शेन वाटसन ने कहा कि कोलकाता नाइट राइडर्स धीमी शुरूआत के बाद अब एक टीम के रूप में अच्छा प्रदर्शन कर रही है और उन्हें आईपीएल प्लेआफ में पहुंचने की पूरी उम्मीद है। नौ अंक लेकर आठवें स्थान पर काबिज केकेआर को प्लेआफ में पहुंचने के लिये बाकी सारे मैच जीतने होंगे। वाटसन ने गत चैम्पियन रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरू के खिलाफ मैच से पहले कहा, ईमानदारी से कहूं तो हमने भविष्य के बारे में अभी बात नहीं की है। उन्होंने कहा, पिछले कुछ मैचों में खास तौर पर काफी प्रभावी प्रदर्शन रहा है और अब टीम सभी पहलुओं में अच्छा खेल रही है। हमने उम्मीद नहीं छोड़ी है और हमें पता है कि धीमी शुरूआत के बाद भी टीमें फाइनल में पहुंची हैं। आईपीएल का इतिहास यह दिखाता है।

सात्विक-चिराग की जोड़ी ने किया विजयी आगाज

एजेंसी

बैंकॉक। सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी की शीर्ष वरीयता प्राप्त जोड़ी ने थाईलैंड ओपन सुपर 500 टूर्नामेंट के पुरुष युगल के पहले दौर के मुकाबले में मंगलवार को यहां इंडोनेशिया के मोह पुत्रा एरवियांस्याह और बागास मौलाना की जोड़ी को शिकस्त दी। विश्व रैंकिंग में चौथे पायदान पर काबिज भारतीय जोड़ी ने 64 मिनट तक चले रोमांचक मुकाबले को 21-19, 21-23, 21-10 से जीतकर अगले दौर में प्रवेश कर लिया। भारतीय जोड़ी शुरुआती गेम में एक समय 11-16 से पीछे चल रही थी। उन्होंने इसके बाद लगातार सात अंक जीतकर मुकाबले में वापसी की।

इंडोनेशियाई खिलाड़ियों ने वापसी करते हुए स्कोर 18-18 कर दिया, लेकिन सात्विक और चिराग ने दबाव में बेहतरीन खेल दिखाते हुए पहला गेम अपने नाम किया। दूसरा गेम बेहद करीबी रहा। दोनों जोड़ियों के बीच लंबी रैलियां देखने को मिलीं और ब्रेक तक भारतीय खिलाड़ियों ने मामूली बढ़त बना ली थी। ब्रेक के बाद इंडोनेशियाई जोड़ी ने आक्रामक खेल दिखाते हुए 17-14 की बढ़त हासिल कर ली।

सात्विक और चिराग की जोड़ी ने इसका दमदार जवाब दिया लेकिन इस गेम को मामूली अंतर से गंवा बैठे जिससे मुकाबला निर्णायक गेम तक पहुंच गया। सात्विक और चिराग तीसरे और अंतिम गेम में पूरी तरह हावी नजर आए। उन्होंने शुरुआत से बढ़त बनाई और ब्रेक तक 11-5 से आगे हो गए। इसके बाद भारतीय जोड़ी ने मुकाबले पर पकड़ बनाए रखते हुए आसानी से यह गेम जीतकर मुकाबला अपने नाम कर लिया। भारतीय जोड़ी का सामना अब अगले दौर में मलेशिया के ब्रायन जेरेमी गूंटिंग और मोहम्मद हैकाल से होगा। इससे पहले पुरुष एकल क्वालीफिकेशन मुकाबले में मलेशिया के ओलंपिक कांस्य पदक विजेता ली जी जिया ने भारत के मानव चौधरी को 21-19, 21-18 से हराया। ली हाल ही में टखने और पीठ की चोट से उबरकर कोर्ट पर लौटे हैं। मिश्रित युगल क्वालीफिकेशन में भारत के एम जगलान और एल जगलान की जोड़ी को चीनी ताइपे के त्साई फू चेंग और सुंग यू ह्सुआन के खिलाफ 11-21, 18-21 से हार का सामना करना पड़ा।

पहलवानों के विरोध प्रदर्शन से करियर प्रभावित : दीपक पूनिया

गोंडा (उत्तर प्रदेश)। एशियाई खेलों के रजत पदक विजेता दीपक पूनिया का मानना है कि जंतर-मंतर पर पहलवानों के विरोध प्रदर्शन से जो व्यवधान पैदा हुआ उससे भारत के कई खिलाड़ियों का करियर प्रभावित हुआ जिसमें वह खुद भी शामिल हैं। दीपक एक समय 86 किलोग्राम वर्ग में भारत की तरफ से निरंतर अच्छा प्रदर्शन करने वाले पहलवान थे। वह तोक्यो ओलंपिक में कांस्य पदक से चूकने के बाद अपनी पुरानी लय हासिल करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। तब से उनका एकमात्र अच्छा प्रदर्शन एशियाई खेल 2023 में रहा जहां उन्होंने रजत पदक जीता था। इस 26 वर्षीय खिलाड़ी ने सोमवार को यहां राष्ट्रीय ओपन रैंकिंग टूर्नामेंट जीता था लेकिन वह भारतीय कुश्ती महासंघ की वर्तमान नीति के अनुसार एशियाई खेलों के लिए 31 मई को होने वाले चयन ट्रायल में भाग लेने की योज्ञता नहीं रखते हैं। इस नीति में यहां चल रहे टूर्नामेंट के नतीजों पर गौर नहीं किया जाएगा। दीपक ने कहा कि पहलवानों के विरोध प्रदर्शन के बाद भारतीय कुश्ती में अनिश्चितता के लंबे दौर ने खिलाड़ियों को अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में खेलने का अवसर नहीं मिला जिससे उन्हें काफी नुकसान हुआ।

बांग्लादेश ने पाक को 104 रन से हराया

एजेंसी

ढाका। तेज गेंदबाज नाहिद राणा के पांच विकेट की बदौलत बांग्लादेश ने मंगलवार को यहां पाकिस्तान के खिलाफ पहले क्रिकेट टेस्ट के पांचवें और अंतिम दिन 104 रन से जीत हासिल की। बांग्लादेश के 268 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए पाकिस्तान 163 रन पर सिमट गया जिसमें नाहिद ने अपने करियर का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए 40 रन देकर पांच विकेट चटकाए। चाय के बाद उन्होंने अपने तीन ओवर में पांच रन देकर सऊद शकील, मोहम्मद रिजवान और नोमान अली को आउट किया।

तेज गेंदबाज तास्किन अहमद ने भी उनका अच्छा साथ निभाते हुए 40 रन पर दो विकेट चटकाए। बांग्लादेश को पहली सफलता तास्किन ने दिलाई जब उन्होंने इमाम उल हक (02) को विकेटकीपर लिटन दास के हाथों कैच कराया। पदार्पण करने वाले दो खिलाड़ी सलामी बल्लेबाज अजान अवैस (15) और अब्दुल्ला फजल (66) ने दूसरे विकेट के लिए 54 रन की साझेदारी की। ऑफ स्पिनर मेहदी हसन (47 रन पर एक विकेट) ने पहली पारी में शतक जड़ने वाले अवैस को बोल्ड करके इस साझेदारी को तोड़ा। नाहिद ने कप्तान शान मसूद (02) को विकेट के पीछे कैच कराके पाकिस्तान का स्कोर तीन विकेट पर 68 रन किया। फजल ने सलमान आगा (26) के साथ पारी को संभाला लेकिन चाय के ब्रेक के बाद बांग्लादेश ने जल्दी-जल्दी दो विकेट लेकर वापसी की। बाएं हाथ के स्पिनर ताइजुल इस्लाम (22 रन पर दो विकेट) ने फजल को पगबाधा करके सलमान के साथ उनकी 51 रन

की साझेदारी तोड़ी। तास्किन ने सलमान आउट करके पाकिस्तान का स्कोर पांच विकेट पर 121 रन किया। शकील (15) और रिजवान (15) ने पाकिस्तान की उम्मीद जगाई लेकिन नाहिद ने तीन ओवर में तीन विकेट लेकर बांग्लादेश को जीत की दहलीज पर पहुंचाया।

नाहिद ने शाहीन शाह अफरीदी (00) को महमूदुल हसन जॉय के हाथों कैच कराके बांग्लादेश को जीत दिलाई और अपने करियर में दूसरी बार पारी में पांच विकेट भी पूरे किए। इससे पहले कप्तान नजमुल हुसैन शंटो के 87 रन की मदद से बांग्लादेश ने पाकिस्तान को जीत के लिए 268 रन का लक्ष्य दिया। बांग्लादेश ने दिन की शुरुआत तीन विकेट पर 152 रन से करने के बाद दूसरी पारी नौ विकेट पर 240 रन घोषित की। मेजबान टीम ने मुश्किल लक्ष्य देने के लिए आक्रामक रवैया दिखाया जिसमें शंटो ने शानदार प्रदर्शन किया।

हसन अली ने मुशफिकुर रहीम को आउट करके पाकिस्तान को शुरुआती सफलता दिलाई। शंटो ने इसके बाद मोर्चो संभाला और अपनी पारी में सात चौके लगाए। उन्हें बाएं हाथ के स्पिनर नोमान अली (76 रन पर तीन विकेट) ने पगबाधा किया। मेहदी हसन ने 24 रन बनाकर बढ़त को 250 रन के पार पहुंचाया। हसन अली (52 रन पर तीन विकेट) ने तास्किन को इमाम के हाथों कैच कराया जिसके बाद बांग्लादेश ने 76 ओवर बाकी रहते पारी घोषित कर दी। बांग्लादेश ने पहली पारी में 413 रन बनाए थे और फिर पाकिस्तान को 386 रन पर आउट करके 27 रन की बढ़त हासिल की थी।

शबनिम इस्माइल ने महिला टी20 विश्व कप के लिए संन्यास से वापसी

जोहानिसबर्ग। दक्षिण अफ्रीका की तेज गेंदबाज शबनिम इस्माइल ने मंगलवार को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास का फैसला वापस ले लिया, क्योंकि उन्हें 12 जून से पांच जुलाई तक ब्रिटेन में होने वाले महिला टी20 विश्व कप के लिए देश की 15 सदस्यीय टीम में शामिल किया गया है। लौरा वोलवार्ट की कप्तानी वाली टीम में 37 वर्षीय इस्माइल भी शामिल हैं, जिन्होंने दक्षिण अफ्रीका की तरफ से अपना आखिरी टी20 मैच फरवरी 2023 में केपटाउन में टी20 विश्व कप के फाइनल के रूप में खेला था। इस्माइल ने अभी तक 113 टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों में 123 विकेट लिए हैं जो दक्षिण अफ्रीका की तरफ से रिकॉर्ड है। उनके साथ तेज गेंदबाजी विभाग संभालने के लिए मारिज़ेन कैप और डेन वैन नीकेर्क को भी टीम में शामिल किया गया है, जो क्रमशः बीमारी और पिंडली की चोट से उबरने के बाद वापसी कर रही हैं। विकेटकीपर-बल्लेबाज कराबो मेसो भी कलाई की चोट से उबरकर वापसी कर रही हैं। सिनालो जाफ्ता टीम की अन्य विकेटकीपर हैं।

रामगढ़ताल की लहरों पर 'अस्मिता नेशनल महिला रोइंग लीग' का रोमांच आज से

खेल संवाददाता

गोरखपुर। रामगढ़ताल की लहरों पर बुधवार से रोमांच का नया अध्याय शुरू हो रहा है। यहां पिछली विजेता तेलंगाना व मेजबान यूपी सहित विभिन्न राज्यों की 16 टीमों में शामिल 275 खिलाड़ी अस्मिता नेशनल महिला रोइंग लीग में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगी। भारत सरकार के युवा कार्यक्रम

'गोरखपुर क्वींस' पर टिकी निगाहें, 26 लाख से अधिक की प्राइज मनी और पदकों के लिए 275 खिलाड़ी मैदान में

एवं खेल मंत्रालय के भारतीय खेल प्राधिकरण (साई) के सहयोग से रोइंग फेडरेशन ऑफ इंडिया के तत्वावधान में उत्तर प्रदेश रोइंग एसोसिएशन द्वारा आयोजित इस पांच दिवसीय लीग के सफल क्रियान्वयन के लिए उत्तर प्रदेश खेल विभाग हर संभव बुनियादी और प्रशासनिक सहयोग प्रदान कर रहा है।

राज्यों की नहीं, यहां 'जिलों' के बीच होगी पदकों की भिड़ंत

लीग का सबसे दिलचस्प पहलू यह है कि इसमें राज्य सीधे भाग लेने के

बजाय जिला स्तर पर प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। उत्तर प्रदेश से मेजबान जिले की टीम 'गोरखपुर क्वींस' मैदान में अपनी चुनौती पेश करेगी।

मंगलवार को आरएफआई के महासचिव शुभाशीष मुखर्जी ने तैयारियों का जायजा लिया और 'कोर्स ओपनिंग' की शुरूआत कराई। उनकी मौजूदगी में देश भर से आईं महिला खिलाड़ियों ने ताल की लहरों पर जमकर पसीना बहाया। उन्होंने बताया कि इस बार पिछली विजेता तेलंगाना सहित रिकार्ड 16 टीमें भाग लेंगी जबकि पिछली बार आठ टीमों ने भाग लिया था। वहीं पहली बार 26,32,500 (छब्बीस लाख बत्तीस हजार पांच सौ रुपये) की इनामी राशि आकर्षण का केंद्र होगी।

वॉटर स्पोर्ट्स का हब बन रहा गोरखपुर

गोरखपुर मंडल के क्षेत्रीय क्रीड़ाधिकारी आले हैदर ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ की मंशा के अनुरूप गोरखपुर अब वॉटर स्पोर्ट्स का हब बन रहा है। उत्तर प्रदेश खेल विभाग और जिला प्रशासन द्वारा रामगढ़ताल को इस भव्य आयोजन के लिए पूरी तरह तैयार किया गया है और मेहमान खिलाड़ियों को यहाँ विश्वस्तरीय मेजबानी का अनुभव मिलेगा।

श्रम सुधार पूरी तरह लागू: मांडविया

चार नयी श्रम संहिताओं ने 29 श्रम कानूनों को एक सरल और आधुनिक ढांचे में समाहित कर दिया है

नयी दिल्ली। केंद्रीय मंत्री मनसुख मांडविया ने मंगलवार को कहा कि केंद्र सरकार ने चार नयी श्रम संहिताओं को पूरी तरह लागू कर दिया है और वर्तमान सरकार गरीबों की समर्थक एवं उद्योग अनुकूल है। भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) के वार्षिक व्यापार सम्मेलन में मंत्री ने कहा कि श्रम एवं उद्योग को प्रभावी समन्वय के लिए एक-दूसरे के पूरक बनना चाहिए और बदलाव के साथ तालमेल बैठाना चाहिए।

उन्होंने कहा कि चार नई श्रम संहिताओं ने 29 श्रम कानूनों को एक सरल और आधुनिक ढांचे में समाहित कर दिया है। केंद्र सरकार ने इस महीने की शुरुआत में पांच साल से अधिक समय के इंतजार के बाद नियम अधिसूचित कर चारों श्रम संहिताओं को पूरी तरह लागू कर दिया। ये चार संहिताएं वेतन संहिता, 2019अ औद्योगिक संबंध संहिता, 2020अ सामाजिक सुरक्षा संहिता, 2020 तथा व्यावसायिक सुरक्षा, स्वास्थ्य एवं कार्य परिस्थितियां संहिता, 2020 हैं। मांडविया ने कहा कि श्रम सुधारों का उद्देश्य इंस्पेक्टर राज को समाप्त करना और उद्योग के लिए एकल पंजीकरण तथा एकल खिड़की व्यवस्था प्रदान करना है। अब श्रम निरीक्षकों (इंस्पेक्टर) को सुविधा प्रदान करने वाला बनाया गया है और वे कानूनों के अनुपालन के लिए पर्याप्त अवसर देते हैं। केंद्रीय श्रम एवं रोजगार तथा युवा मामले एवं खेल मंत्री ने कहा कि देश में श्रम उतना ही महत्वपूर्ण है जितना उद्योग और हमारी सरकार गरीबों एवं किसानों की समर्थक और उद्योग अनुकूल है। उन्होंने कहा कि नए कानूनी ढांचे में पुरुषों और महिलाओं को समान कार्य के लिए समान वेतन का प्रावधान है। रोजगार सृजन तभी होगा जब उद्योगपति संपत्ति सृजित कर करों का भुगतान करेंगे। केंद्र सरकार ने नौ मई को नियम अधिसूचित कर चारों श्रम संहिताओं को पूरी तरह लागू किया, जिससे सभी श्रमिकों के लिए न्यूनतम वेतन एवं सार्वभौमिक सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित हुई। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की तरह ही मंत्री ने भी पश्चिम एशिया संकट के मद्देनजर पेट्रोलियम उत्पादों के उपयोग और सोने की खरीद में कटौती करने का आग्रह किया। मोदी ने रविवार को कहा था कि सरकार लोगों को पश्चिम एशिया संकट के प्रतिकूल प्रभाव से बचाने की कोशिश कर रही है। उन्होंने कहा था कि ईंधन का विवेकपूर्ण इस्तेमाल, सोने की खरीद टालने तथा विदेश यात्राओं को स्थगित करने जैसे कदम उठाने की जरूरत है ताकि अर्थव्यवस्था मजबूत हो सके।

हैदराबाद में एक रैली को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने पेट्रोल-डीजल की खपत कम करने, शहरों में मेट्रो का इस्तेमाल बढ़ाने, कारपूलिंग अपनाने, इलेक्ट्रिक वाहनों का ज्यादा इस्तेमाल करने, पार्सल परिवहन के लिए रेलवे सेवाओं का उपयोग करने और वर्क फ्रॉम होम अपनाने की सलाह दी थी ताकि विदेशी मुद्रा को बचाया जा सके। संकट के बीच विदेशी मुद्रा संरक्षण की आवश्यकता पर जोर देते हुए प्रधानमंत्री ने एक वर्ष के लिए सोने की खरीद और विदेशी यात्राओं को टालने का भी आह्वान किया था।

भारत-ओमान मुक्त समझौता एक जून से लागू होने की संभावना: गोयल

नयी दिल्ली। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने मंगलवार को कहा कि भारत और ओमान के बीच मुक्त व्यापार समझौता (एफटीए) एक जून से लागू होने की उम्मीद है। इस समझौते पर दिसंबर, 2025 में हस्ताक्षर किए गए थे।

गोयल ने यहां संवाददाताओं से कहा कि आज मेरी ओमान टीम के साथ अच्छी बैठक हुई और संभावना है कि ओमान मुक्त व्यापार समझौता एक जून, 2026 से लागू हो जाएगा। ओमान टीम व्यापार और निवेश को बढ़ावा देने के तरीकों पर चर्चा करने के लिए भारत आई हुई है। इस समझौते के तहत वस्त्र, कृषि उत्पाद और चमड़े के सामान समेत भारत के 98 प्रतिशत निर्यात को ओमान में शुल्क मुक्त पहुंच होगा। दूसरी तरफ, भारत खजूर, संगमरमर और पेट्रोरसायन उत्पादों जैसे ओमान के उत्पादों पर शुल्क कम करेगा। गोयल ने चिली के विदेश मंत्री के साथ बैठक के बारे में पूछे जाने पर कहा कि दोनों देशों की अर्थव्यवस्थाओं के अलग-अलग आकार और एक-दूसरे को मिलने वाले अवसरों के अलग-अलग पैमाने को देखते हुए चुनौतियां हैं। उन्होंने कहा कि हम नवोन्मेषी समाधानों के माध्यम से इस अंतर को पाटने का प्रयास कर रहे हैं। गोयल ने कहा कि यदि हमें महत्वपूर्ण खनिजों और अन्य महत्वपूर्ण खनन रियायतों के संबंध में कोई अच्छा समझौता मिल जाता है, तो चिली के साथ एफटीए को अंतिम रूप देने की काफी अच्छी संभावना है।

भारत और चिली ने 2006 में एक तरजीही व्यापार समझौता (पीटीए) लागू किया था और अब दोनों देश इसका दायरा बढ़ाकर एक व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौता (सीईपीए) करने को लेकर बातचीत कर रहे हैं। सीईपीए समझौते के तहत डिजिटल सेवाओं, निवेश प्रोत्साहन और सहयोग, एमएसएमई (सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम) और महत्वपूर्ण खनिजों सहित कई क्षेत्रों को शामिल किया जाना है। यह समझौता भारत को महत्वपूर्ण खनिजों तक पहुंच बनाने में मदद कर सकता है, जो इलेक्ट्रॉनिक्स, वाहन और सौर क्षेत्रों के लिए प्रमुख कच्चा माल है।

संक्षेप

महाराष्ट्र में बाइक टैक्सी ऐप बंद

मुंबई। महाराष्ट्र के परिवहन मंत्री प्रताप सरनाइक ने मंगलवार को पुलिस के साइबर अपराध विभाग को निर्देश दिया कि वे ओला, उबर और रैपिडो जैसे एग्रीगेटर्स के अनधिकृत बाइक टैक्सी ऐप को बंद कर दें, और इन कंपनियों के मालिकों के खिलाफ मामला दर्ज करें। राज्य में बाइक टैक्सी चलाने की अनुमति नहीं है। अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (साइबर क्राइम) को लिखे एक पत्र में, जिसकी एक प्रति पुलिस महानिदेशक को भी भेजी गई थी, सरनाइक ने कहा कि राज्य में कई अनधिकृत बाइक टैक्सी सेवाएं बिना जरूरी अनुमतियों के चल रही हैं। मंत्री ने कहा कि ये ऐप वित्तीय लेन-देन करते समय सरकारी नियमों का खुलेआम उल्लंघन कर रहे हैं, जिससे लाइसेंस प्राप्त रिक्शा और टैक्सी ड्राइवरों की आजीविका पर बुरा असर पड़ रहा है। सरनाइक ने कहा कि ऐप-आधारित बाइक सुरक्षा नियमों का पालन नहीं करती हैं, जिससे जनता की सुरक्षा को गंभीर खतरा पैदा होता है। उन्होंने कहा कि इन सेवाओं का उपयोग करने वाले यात्रियों के लिए कोई पर्याप्त सुरक्षा उपाय नहीं हैं, जिनमें ड्राइवर का सत्यापन, बीमा कवच, महिलाओं की सुरक्षा के उपाय और आपातकालीन प्रतिक्रिया प्रणाली शामिल होते हैं।

जनता को अर्थव्यवस्था की हालत बतायी जाये : केजरीवाल

नयी दिल्ली। आम आदमी पार्टी (आप) के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने मंगलवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से उनके द्वारा सुझाए गए मितव्ययता उपायों पर सवाल करते हुए कहा कि उन्हें देश की अर्थव्यवस्था की स्थिति के बारे में जनता को बताना चाहिए। केजरीवाल ने एक संवाददाता सम्मेलन में कहा कि देश ने अतीत में युद्धों सहित कई संकटों का सामना किया है, लेकिन मोदी से पहले किसी भी प्रधानमंत्री ने सात सबसे कड़े कदमों की घोषणा नहीं की और जनता से उनका पालन करने का अनुरोध नहीं किया। उन्होंने यह भी कहा कि मोदी द्वारा सुझाए गए मितव्ययता उपायों के पीछे स्पष्ट कारण अमेरिका और ईरान के बीच का युद्ध है, लेकिन देश की गिरती अर्थव्यवस्था के पीछे कोई और कारण भी हो सकता है।

दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री ने यह भी सवाल उठाया कि सभी मितव्ययता उपाय मध्यम वर्ग के लिए ही क्यों हैं और प्रधानमंत्री स्वयं, मंत्री, अधिकारी और देश के अति धनाढ्यों को इस तरह का त्याग क्यों नहीं करना चाहिए ?

भारत में रूस से कच्चे तेल का आयात 15 प्रतिशत घटकर 4.5 अरब यूरो पर

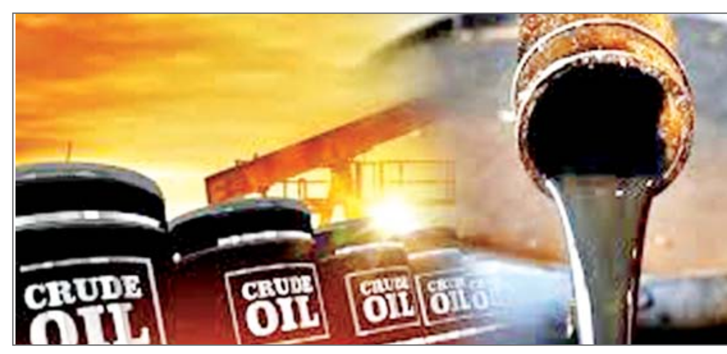

नयी दिल्ली। भारत का रूस से कच्चा तेल आयात अप्रैल माह में 15 प्रतिशत से अधिक घट गया जिसका मुख्य कारण एक प्रमुख रिफाइनरी का रखरखाव के लिए बंद होना रहा। एक रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई है।

यूरोपीय शोध संस्थान सेंटर फॉर रिसर्च ऑन एनर्जी एंड क्लीन एयर (सीआरईए) की रिपोर्ट के मुताबिक, भारत ने अप्रैल में रूस से 4.5 अरब यूरो मूल्य का कच्चा तेल आयात किया, जो मार्च में हुए 5.3 अरब यूरो के आयात से कम है। अप्रैल में भारत, रूस से जीवाश्म ईंधन का दूसरा सबसे बड़ा खरीदार रहा और कुल पांच अरब यूरो के पेट्रोलियम उत्पाद आयात किए। इसमें कच्चे तेल की हिस्सेदारी 90 प्रतिशत रही, जबकि कोयला 29.7 करोड़ यूरो और तेल उत्पाद 20.9 करोड़ यूरो के रहे। मार्च महीने के कुल 5.8 अरब यूरो के आयात में कच्चे तेल की हिस्सेदारी 91 प्रतिशत रही थी। सीआरईए ने कहा कि अप्रैल में भारत के कुल कच्चे तेल आयात में 3.7 प्रतिशत की कमी आई। इसके पीछे रूस से तेल आयात में 19.4 प्रतिशत की मासिक गिरावट प्रमुख कारण रही। रिपोर्ट के अनुसार, गुजरात की वाडिनार और जामनगर रिफाइनरियों में रूसी तेल की आवक में क्रमशः करीब 92 प्रतिशत और 38 प्रतिशत की गिरावट आई, जबकि इंडियन ऑयल की वाडिनार रिफाइनरी में आयात 87 प्रतिशत बढ़ गया। नायरा एनर्जी की वाडिनार रिफाइनरी के नौ अप्रैल से रखरखाव के कारण बंद होने की वजह से आयात में गिरावट दर्ज की गई। दरअसल, यह रिफाइनरी पूरी तरह रूसी कच्चे तेल पर निर्भर है। नया मंगलूर और विशाखापत्तनम रिफाइनरियों ने नवंबर, 2025 के बाद रूसी तेल का आयात रोक दिया था, लेकिन मार्च, 2026 से यह खरीद दोबारा शुरू हुई है। विशाखापत्तनम रिफाइनरी में रूसी तेल का आयात अप्रैल में 149 प्रतिशत बढ़ गया। रिपोर्ट के मुताबिक, अमेरिका द्वारा प्रतिबंधों में दी गई छूट के कारण पिछले कुछ सप्ताह में रूसी तेल के आयात में तेजी आई। इस बीच, अप्रैल में रूस के यूराल कच्चे तेल की औसत कीमत 19 प्रतिशत बढ़कर 112.3 डॉलर प्रति बैरल हो गई, जो यूरोपीय संघ और ब्रिटेन द्वारा निर्धारित 44.1 डॉलर प्रति बैरल की सीमा से काफी अधिक है।

राष्ट्रपति ने किया 15 को सम्मानित

नयी दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा को मजबूत करने में अनुकरणीय योगदान और सेवा के लिए मंगलवार को 15 नर्सिंग पेशेवरों को वर्ष 2026 के नेशनल फ्लोरेंस नाइटिंगेल पुरस्कार प्रदान किए।

इस अवसर पर राष्ट्रपति ने कहा, नर्सिंग कर्मी सेवा के उच्चतम मानकों का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं और अक्सर सबसे चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में भी गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मैं सभी पुरस्कार विजेताओं को कर्तव्य के प्रति उनकी प्रेरणादायक निष्ठा और रोगियों की देखभाल के उच्चतम मानकों को बनाए रखने के उनके अथक प्रयासों के लिए बधाई देती हूं। विभिन्न क्षेत्रों और स्वास्थ्य सेवा संस्थानों से कुल 15 नर्सों को सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा को मजबूत करने के प्रति उनकी अटूट निष्ठा और समुदाय के कल्याण के प्रति उनकी उत्कृष्ट प्रतिबद्धता के लिए सम्मानित किया गया। ये पुरस्कार राष्ट्रपति भवन में केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा की उपस्थिति में आयोजित एक समारोह में प्रदान किए गए। अपने संदेश में राष्ट्रपति ने कहा कि यह अवसर उन नर्सिंग कर्मियों और स्वास्थ्य सेवा पेशेवरों के अमूल्य योगदान को उचित सम्मान प्रदान करने का है, जो करुणा और अटूट समर्पण के साथ राष्ट्र की सेवा करते हैं। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा स्थापित नेशनल फ्लोरेंस नाइटिंगेल पुरस्कार, केंद्र और राज्य सरकारों, केंद्र शासित प्रदेशों और स्वयंसेवी संगठनों में कार्यरत पंजीकृत नर्सों, दाइयों, सहायक नर्स दाइयों और महिला स्वास्थ्य परिचारिकाओं सहित नर्सिंग पेशेवरों के समर्पण, करुणा और जुझारूपन को सम्मानित करता है।

सीएम विजय ने शराब की 717 दुकानों को बंद करने का दिया आदेश

चेन्नई। तमिलनाडु में महिलाओं और कुछ राजनीतिक दलों द्वारा पूर्ण शराबबंदी लागू करने की मांग के बीच मुख्यमंत्री सी. जोसफ विजय ने मंगलवार को राज्यभर में सरकारी स्वामित्व वाली 717 खुदरा शराब दुकानों को बंद करने का आदेश दिया जिनमें पूजा स्थलों के पास स्थित 276 दुकानें भी शामिल हैं। एक आधिकारिक विज्ञप्ति के अनुसार, जनता के कल्याण को ध्यान में रखते हुए मुख्यमंत्री विजय ने शराब की खुदरा दुकानों को बंद करने का आदेश जारी किया है।

खर्च में कटौती की प्रधानमंत्री की अपील के बाद शरद पवार ने सर्वदलीय बैठक बुलाने की अपील की

मुंबई। राकांपा (शप) प्रमुख शरद पवार ने मंगलवार को कहा कि देशवासियों से खर्चों में कटौती करने की प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अपील का अर्थव्यवस्था पर दूरगामी प्रभाव पड़ने की आशंका है। उन्होंने प्रधानमंत्री से पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष से उपजी स्थिति पर चर्चा के लिए सर्वदलीय बैठक बुलाने का आग्रह किया।

पवार ने एक बयान में कहा कि अचानक की गई अपील से आम नागरिकों, व्यवसायों, औद्योगिक क्षेत्रों और निवेशकों में बेचैनी पैदा हो गई है। उन्होंने कहा कि इस समय जनता का विश्वास बहाल करना और देश में स्थिरता बनाए रखना सरकार की पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। प्रधानमंत्री मोदी ने इस बात पर जोर देते हुए कि केंद्र सरकार लोगों को पश्चिम एशिया संघर्ष के प्रतिकूल प्रभाव से बचाने की कोशिश कर रही है, जनता से अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए ईंधन का विवेकपूर्ण इस्तेमाल करने और सोने की खरीद तथा विदेश यात्रा से बचने सहित अन्य उपायों पर अमल का आह्वान किया है। पवार ने कहा कि पश्चिम एशिया में अस्थिर और युद्ध जैसी स्थिति की पृष्ठभूमि में प्रधानमंत्री ने दो दिन पहले कुछ घोषणाएं कीं, जिनका देश की अर्थव्यवस्था पर दूरगामी प्रभाव पड़ने की आशंका है। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी-शरदचंद्र पवार (राकांपा-एसपी) प्रमुख ने इस मुद्दे को गंभीर चिंता का विषय करार देते हुए कहा कि राष्ट्रीय महत्व से जुड़े मामलों में फैसले सभी राजनीतिक दलों के नेताओं से परामर्श करने के बाद ही लिए जाने चाहिए। पवार ने कहा, प्रधानमंत्री को अपनी अध्यक्षता में सर्वदलीय बैठक बुलानी चाहिए और राष्ट्रीय हित में निर्णय लेते समय सभी राजनीतिक दलों को विश्वास में लेना चाहिए।

इंटरटेनमेंट...

कांस-2026: आलिया भट्ट का पहला लुक आया सामने

मुंबई। दुनियाभर का सबसे प्रतिष्ठित फिल्म फेस्टिवल और कल्चरल इवेंट कांस आज से शुरू हो चुका है। ये 12-23 मई तक फ्रांस के फ्रेंच रिवेरा में आयोजित हो रहा है। आलिया भट्ट इस फेस्टिवल में शामिल होने फ्रांस पहुंच चुकी हैं। फ्रेंच रिवेरा के होटल मार्टिनेज के बाहर आलिया की पहली झलक सामने आई है। तस्वीरों में आलिया कोर्सेट-स्टाइल प्रिंटेड बॉल गाउन में नजर आईं। इस ड्रेस की सबसे बड़ी खासियत इसका 'वाटर कलर' जैसा प्रिंट था। गाउन पर पेस्टल ग्रीन, ब्लू, लैवेंडर और हल्के पीले रंग के शेड्स थे, जो किसी गार्डन पेंटिंग जैसा अहसास दे रहे थे। आलिया ने अपने इस लुक को काफी सिंपल और क्लासी रखा। फिलहाल इस ड्रेस के डिजाइनर के नाम का खुलासा नहीं हुआ है। आलिया कान्स 2026 में लोरियल पेरिस की ग्लोबल एंबेसडर के तौर पर शामिल हुई हैं। फेस्टिवल के आगाज के साथ जानिए, इस साल भारत के कौन से सेलेब्स रेड कार्पेट पर पहुंचेंगे, कौन सी फिल्में दिखाई जाएंगी, भारत की कांस में क्या अचीवमेंट्स हैं और क्या है कांस का भव्य इतिहास। इस साल भारत से ऐश्वर्या राय, मौनी रॉय, अदिति राव हैदरी और एहसास चन्ना कांस के रेड कार्पेट में पहुंचेंगी। एक्ट्रेस तारा सुतारिया भी कांस रेड कार्पेट पर डेब्यू करने वाली हैं। आलिया भट्ट, लॉरियल पेरिस की तरफ से कांस में आई हैं। तभी से कयास लग रहे हैं कि उन्होंने ऐश्वर्या राय को रिप्लेस किया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हाल ही में जनता से कम-से-कम ट्रेवल करने और कम तेल-ईंधन इस्तेमाल करने की अपील की है। यही वजह रही कि महाराष्ट्र का सांस्कृतिक विभाग अब कांस फिल्म फेस्टिवल में हिस्सा नहीं ले रहा है। महाराष्ट्र के सांस्कृतिक कार्य मंत्री आशीष शेलार ने बताया कि पीएम मोदी की अपील के बाद विभाग का प्रतिनिधिमंडल अब कांस नहीं जाएगा। उन्होंने कहा कि विभाग में वाहनों का इस्तेमाल कम किया जाएगा और जरूरी बैठकों को वर्चुअल माध्यम से आयोजित किया जाएगा।

- फेस्टिवल में सेक्स वर्कर्स पर बनी भारतीय फिल्म दिखाई जाएगी, यहां चप्पल पहनना, पर्स रखना मना

कांस में इंडो-अमेरिकन फिल्म बॉम्बे स्टोरीज की स्क्रीनिंग भी कांस में होगी। ये फिल्म मंटों के उपन्यास पर बनी है, जो 1930 के दशक की बॉम्बे में रहनेवालीं सेक्स वर्कर्स की कहानी दिखाती है। फिल्म को राहत शाह काजमी ने डायरेक्ट किया है। इस फिल्म की स्क्रीनिंग के दौरान एक्ट्रेस मौनी रॉय कांस में मौजूद रहेंगी। पंजाबी सिनेमा- पॉपुलर सिंगर और एक्टर एमी विर्क की फिल्म चारदीकला की स्क्रीनिंग कांस में होनी है। इसकी स्क्रीनिंग के लिए एमी विर्क कांस में डेब्यू करेंगे।

फरहाना भट्ट 'खतरों के खिलाड़ी 15' में दिखेंगी

मुंबई। बिग बॉस 19 की फर्स्ट रनर-अप रहीं फरहाना भट्ट जल्द टीवी शो 'खतरों के खिलाड़ी 15' में नजर आएंगी। इस बार शो की थीम 'डर का नया दौर' रखी गई है, जिसमें पुराने कंटेस्टेंट्स और नए चेहरों का जबरदस्त मुकाबला देखने को मिलेगा। खास बातचीत में फरहाना ने अपने डर, संघर्ष और लोगों के तानों पर बात की। फरहाना ने यह भी कहा कि 'खतरों के खिलाड़ी' में असली मुकाबला दूसरे कंटेस्टेंट्स से नहीं, बल्कि अपने डर से होता है। बहुत अलग फीलिंग है। एक्साइटमेंट भी है और डर भी। यह लाइफटाइम एक्सपीरियंस है, क्योंकि असल जिंदगी में आप ऐसे स्टंट नहीं कर सकते। रोहित शेट्टी जैसे लीजेंड के साथ और पूरी सेफ्टी के बीच यह सब करना बहुत बड़ी बात है। मैं इस शो के जरिए अपनी पर्सनैलिटी का एक नया हिस्सा एक्सप्लोर करना चाहती हूं।

एक्ट्रेस तमन्ना भाटिया महाकाल मंदिर पहुंचीं

मुंबई। साउथ और बॉलीवुड इंडस्ट्री की मशहूर अभिनेत्री तमन्ना भाटिया मंगलवार तड़के श्री महाकालेश्वर मंदिर पहुंचीं। उन्होंने भगवान महाकाल की भस्म आरती में शामिल होकर बाबा का आशीर्वाद लिया। तड़के करीब 3 बजे मंदिर पहुंचीं तमन्ना भाटिया नंदी हाल में बैठकर भक्ति भाव से भस्म आरती में शामिल हुईं। इस दौरान वे मस्तक पर चंदन लगाए पूरी तरह बाबा महाकाल की भक्ति में लीन नजर आईं। करीब दो घंटे तक उन्होंने भस्म आरती का दिव्य नजारा देखा। आरती के बाद अभिनेत्री ने नंदीजी का पूजन-अभिषेक किया और नंदी के कान में अपनी मनोकामना कही।

- त्रिपुण्ड लगाकर भस्म आरती में शामिल हुईं अनुभव शब्दों में बयान नहीं कर सकती

काम की वजह से सो नहीं पाते अमिताभ बच्चन

मुंबई। बॉलीवुड एक्टर अमिताभ बच्चन सोशल मीडिया और ब्लॉग के जरिए अक्सर अपने फैंस से निजी बातें और जीवन के अनुभव शेयर करते रहते हैं। हाल ही में उन्होंने अपने ब्लॉग पर देर रात के विचारों और अपनी नींद की समस्या को लेकर खुलकर बात की।

- सुकून के लिए सुनता हूं क्लासिकल म्यूजिक, रात 4 बजे लिखा ब्लॉग

बिग बी ने बताया कि काम के दबाव की वजह से वह अक्सर रात भर जगे रहते हैं, जबकि डॉक्टर्स सेहत के लिए कम से कम 7 घंटे की नींद की सलाह देते हैं। उन्होंने इस बेचैनी से निपटने के लिए अपना एक खास आदत भी फैंस के साथ शेयर की है। रात 4 बजे लिखा ब्लॉग अमिताभ ने मंगलवार सुबह करीब 4:14 बजे अपना ब्लॉग अपडेट किया। उन्होंने लिखा कि काम के प्रति अपनी जिम्मेदारी की वजह से वह पिछली रात से जगे हुए हैं। उन्होंने स्वीकार किया कि उनके लिए काम नींद से ज्यादा जरूरी है, भले ही मेडिकल साइंस इसे गलत मानता हो। बिग बी ने लिखा, काम नींद से ज्यादा महत्वपूर्ण है। मेडिकल कहता है कि यह सही नहीं है और कम से कम 7 घंटे की नींद लेनी चाहिए क्योंकि शरीर नींद के घंटों में ही विकसित होता है और रिपेयर होता है।

तो ऐसे में कोई क्या करे? क्लासिकल म्यूजिक को बताया इलाज नींद न आने और काम के बीच वह शांति कैसे तलाशते हैं, इसका जवाब देते हुए अमिताभ ने बताया कि वह म्यूजिक का सहारा लेते हैं। उन्होंने लिखा, रात की खामोशी में स्लाइड गिटार और सितार पर बजने वाला धीमा क्लासिकल म्यूजिक बहुत सुकून देता है। आत्मा के लिए इससे बेहतर कोई इलाज नहीं है।

आर.एन.आई.नं.-यू.पी.-हिन/2006/18901 विराज प्रकाशन प्रा.लि. हेतु मुद्रक एवं प्रकाशक आर.के. अग्रवाल द्वारा एक्सप्रेस हाऊस, 1/5, विशाल खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित। कार्यकारी सम्पादक : मनोज कुमार बाजपेयी (पी.आर.बी.एक्ट के तहत समाचारों के चयन हेतु उत्तरदायी) समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन। फोन कार्यालय : 0522-4059441, 4059442, 4059443 : ई-मेल : voiceoflucknow@gmail.com